बैंक ऑफ़ बड़ौदा
Bank of Baroda

अक्षय्यम्

राजभाषा कीर्ति पुरस्कार

बैंक ऑफ़ बड़ौदा की हिंदी पत्रिका
जुलाई–सितंबर, 2021 अंक

प्रमुख गतिविधियां

बैंक को राजभाषा का सर्वोच्च पुरस्कार

नई दिल्ली के विज्ञान भवन में आयोजित हिंदी दिवस समारोह में बैंक को भारत सरकार की राजभाषा कीर्ति पुरस्कार योजना के तहत सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की श्रेणी में भाषाई क्षेत्र 'ख' में वर्ष 2019-20 के लिए द्वितीय पुरस्कार तथा बैंक की तिमाही हिंदी पत्रिका 'अक्षय्यम्' को द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ. बैंक की ओर से ये पुरस्कार माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह, केंद्रीय गृह राज्य मंत्रीगण श्री नित्यानन्द राय, श्री अजय कुमार मिश्रा एवं श्री निशिथ प्रामाणिक के कर कमलों से कार्यपालक निदेशक श्री अजय के खुराना ने ग्रहण किए.

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक), वडोदरा को कीर्ति पुरस्कार

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की श्रेणी में वर्ष 2020-21 के लिए भारत सरकार के सर्वोच्च पुरस्कार 'राजभाषा कीर्ति पुरस्कार' के अंतर्गत 'ख' भाषिक क्षेत्र में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक), वडोदरा को प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ. दिनांक 14 सितंबर, 2021 को विज्ञान भवन, नई दिल्ली में आयोजित समारोह में माननीय केंद्रीय गृहमंत्री श्री अमित शाह, केंद्रीय गृह राज्यमंत्रीगण श्री नित्यानन्द राय, श्री अजय कुमार मिश्रा एवं श्री निशिथ प्रामाणिक की गरिमामयी उपस्थिति में यह पुरस्कार समिति के अध्यक्ष एवं मुख्य महाप्रबंधक (परिचालन) श्री वेणुगोपाल मेनन ने ग्रहण किया.

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी का संदेश

प्रिय साथियो,

'अक्षय्यम्' के नवीनतम अंक के माध्यम से आपसे संवाद करना मेरे लिए प्रसन्नता का विषय है. किसी भी प्रगतिशील समाज की संस्कृति परिवर्तनशील होती है. वैश्वीकरण के दौर में विभिन्न संस्कृतियों के बीच उनकी विशेषताओं का आदान-प्रदान भी स्वाभाविक है. पिछले दो वर्ष तीव्र परिवर्तन के दौर के साक्षी रहे हैं. पूरी दुनिया ने नए परिवर्तनों को चाहे-अनचाहे पूरी तरह से अपनाया है. पिछले दिनों तमाम उतार-चढ़ाव के बावजूद समाज में नए प्रयोगों को सफलतापूर्वक संपन्न कर सकना हम सभी में सकारात्मकता का भाव उत्पन्न करता है.

संस्कृति, नैतिकता, आचरण, मूल्य आदि मानव समाज के महत्वपूर्ण घटक हैं. एक व्यवस्थित संसार के सृजन में हमारे पूर्वजों ने इन सारी विशेषताओं को अपने जीवन में शामिल किया. अन्य संस्थानों की तरह बैंकिंग संस्थान में भी एक समृद्ध कार्यसंस्कृति और नैतिकता का अनुसरण संस्थान की प्रतिष्ठा और प्रगति के लिए जरूरी है. अपने कार्य में नैतिकता के महत्व को समझते हुए पिछले दिनों हमने अपने बैंक में 'कॉर्पोरेट नैतिकता वर्टिकल' का शुभारंभ किया. मौजूदा दौर में व्यापक रूप से संसाधनों की सुलभ उपलब्धता के कारण कई बार हमारे समक्ष सही विकल्प का चयन करना मुश्किल होता है. कॉर्पोरेट नैतिकता फंक्शन का उद्देश्य बैंक में प्रत्येक स्तर पर नैतिकता का सख्त अनुपालन और अपने कार्य में सही विकल्प के चयन में स्टाफ सदस्यों की दुविधा को दूर करने में सहयोग देना है. एक सुपरिभाषित नैतिकता फ्रेमवर्क इंप्लाई इंगेजमेंट, कार्य संतुष्टि, संस्थान के प्रति निष्ठा और विश्वास तथा बैंक के लिए बेहतर व्यवसाय विकास को सुनिश्चित करता है.

किसी भी संस्थान की मजबूती को बरकरार रखने के लिए इसके स्टाफ सदस्यों की व्यक्तिगत जिम्मेदारी बहुत मायने रखती है. बैंकिंग क्षेत्र में कार्य करते हुए हम दोहरी जिम्मेदारी का निर्वाह करते हैं. पहली जिम्मेदारी संस्थान के प्रति निष्ठा और कर्तव्य निभाना है तो दूसरी जिम्मेदारी हमारे मूल्यवान ग्राहकों को बेहतर ग्राहक सेवा उपलब्ध कराना है. जहां तक ग्राहक और उपभोक्ता वर्ग की बात है तो यह बात हमेशा सही साबित हुई है कि सेवा प्रदाताओं को अपने ग्राहकों या उपभोक्तावर्ग की इच्छाओं और पसंद के मुताबिक स्वयं को ढालना होता है. यही बात बैंकिंग सेक्टर के लिए भी बिल्कुल सटीक बैठती है. आज हमारा ग्राहक वर्ग कम समय में अधिक से अधिक सुविधाओं और सेवाओं का लाभ उठाना चाहता है. ग्राहकों की पसंद को केंद्र में रखते हुए हम भी अपने उत्पादों को उनकी सुविधानुसार तैयार करते आए हैं. हाल ही में बैंक द्वारा **बॉब वर्ल्ड** मोबाइल बैंकिंग लॉन्च किया गया जिसमें हम अपने ग्राहकों को एक ही प्लेटफॉर्म पर उनकी पसंद के अनुसार कई सुविधाएं उपलब्ध करा रहे हैं. इसके जरिए बचत, निवेश, खरीदारी, भुगतान जैसी सेवाओं का लाभ उठाया जा सकता है. हमारी भी यह जिम्मेदारी बनती है कि हम इसे विभिन्न माध्यमों से ग्राहकों और संभावित ग्राहकों के बीच प्रचारित-प्रसारित करें.

एक जिम्मेदार संस्थान के जिम्मेदार स्टाफ सदस्य होने के नाते समाज के प्रत्येक वर्ग तक अपनी सेवाओं को पहुंचाना तथा बैंकिंग सेवा के माध्यम से समाज के उत्थान में भूमिका निभाना हमारा परम कर्तव्य है. हमारा बैंक अपनी विभिन्न पहलों के जरिए इस दिशा में ठोस कदम उठाता रहता है. हाल ही में हमारे बैंक और *वूमन्स वर्ल्ड बैंकिंग द्वारा 'द पावर ऑफ़ जनधनः मेकिंग फिनांस वर्क फॉर वूमन इन इंडिया'* रिपोर्ट जारी की गई. इस रिपोर्ट के अनुसार भारत में कम आय वाली दस करोड़ महिलाओं को बैंकिंग सेवाएं प्रदान करने से लगभग 25 हजार करोड़ जमाराशियां प्राप्त हो सकती हैं. इसके जरिए कम आय वाले 40 करोड़ भारतीय वित्तीय रूप से सशक्त होते हैं. हम जानते हैं कि वित्तीय समावेशन विश्व भर में आर्थिक विकास का वाहक रहा है. यह जेंडर असमानता को कम करने तथा समाज के रूपांतरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है. **'वूमेंस वर्ल्ड बैंकिंग'** और बैंक ऑफ़ बड़ौदा के साझा प्रयासों से बड़ौदा *'जनधन प्लस'* की शुरूआत की गई है. बैंक की *'जनधन प्लस'* योजना ने इस बात की ओर ध्यान दिलाया है कि उचित दिशा में प्रोत्साहन, अनुकूल वातावरण में महिलाओं में वित्तीय रूप से सक्षम और मजबूत होने की संभावनाएं प्रबल हैं. देश की महिला शक्ति को बैंकिंग सुविधाओं से जोड़ने से उनकी सामाजिक पूंजी भी बढ़ेगी और राष्ट्र के निर्माण में उनका सक्रिय योगदान और भी बढ़ेगा. आज के दौर में निश्चित रूप से हमें महिला ग्राहकवर्ग को हमारे संभावित ग्राहकवर्ग के रूप में देखने की जरूरत है. इससे देशभर में लाखों घरों के आर्थिक उत्थान में महिलाशक्ति का न केवल योगदान बढ़ेगा बल्कि लंबे समय तक वित्तीय बचत की परंपरा विकसित होने से यह वर्ग बैंकिंग उद्योग की समृद्धि का एक उपयोगी स्रोत साबित होगा.

मुझे प्रसन्नता है कि सभी स्टाफ सदस्यों की सक्रिय भागीदारी के कारण हमारा बैंक विभिन्न पक्षों पर सराहनीय कार्य कर रहा है. हाल ही में बैंक को सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की श्रेणी में 'ख' भाषा क्षेत्र में भारत सरकार का सर्वोच्च **"राजभाषा कीर्ति पुरस्कार"** प्राप्त हुआ है. इसके अतिरिक्त बैंक की हिंदी पत्रिका *'अक्षय्यम्'* को भी द्वितीय पुरस्कार तथा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक), वडोदरा को प्रथम पुरस्कार के लिए सम्मानित किया गया. ये पुरस्कार हमारे बैंक में बेहतर राजभाषा कार्यान्वयन को परिलक्षित करते हैं. मुझे विश्वास है कि आप सभी के समन्वित प्रयासों से हम अपने बैंक में सभी क्षेत्रों में बेहतर कार्यनिष्पादन जारी रखेंगे.

शुभकामनाओं सहित,

संजीव चड्ढा
प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी

कार्यपालक निदेशक की डेस्क से

प्रिय साथियो,

बैंक की हिन्दी पत्रिका ''अक्षय्यम्'' के नवीनतम अंक के माध्यम से अपने विचारों, अनुभवों और अनुभूतियों को आपसे साझा करना मेरे लिए हमेशा ही प्रसन्नता का विषय होता है. यह पत्रिका बैंक के विभिन्न प्रयासों और पहलों को एक साथ प्रस्तुत करने का श्रेष्ठतम माध्यम है.

निरंतर विकास के लिए सही दिशा में पहल करना बहुत जरूरी है. श्रेष्ठ परिणाम प्राप्ति के लिए एक बेहतर कल की परिकल्पना को ध्यान में रखकर चलना भी आवश्यक है. हमारे समक्ष बेहतर कार्यनिष्पादन की संभावनाएं लगातार मौजूद रहती हैं. इन्हीं संभावनाओं पर कार्य करते हुए हमें संस्थान, स्वयं और समाज की बेहतरी के लिए लगातार प्रयासरत रहना चाहिए.

हम अपनी बैंक की ही बात करें तो हम देखते हैं कि भारत सरकार की विभिन्न महत्वपूर्ण योजनाओं को आधार मानते हुए राष्ट्रीय स्तर पर लोक कल्याणकारी समाज की संकल्पना को साकार करना हमारी प्राथमिकताओं में से एक है. व्यावसायिक कार्यनिष्पादन के साथ-साथ हमें यह भी सुनिश्चित करना है कि समाज के हर तबके को बैंकिंग सुविधाएं उपलब्ध हों.

हाल ही में हमने भारत सरकार की ऐसी कई गतिविधियों में सहभागिता की है, जो सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (एमएसएमई) के उद्यमियों को ध्यान में रखकर आयोजित की गईं. जिस प्रकार भारत सरकार एमएसएमई क्षेत्र को लेकर अत्यधिक गंभीर है, उसी प्रकार यही गंभीरता हमारी व्यावसायिक गतिविधियों में भी परिलक्षित हो रही है. हाल ही में हमने भारत के इलेक्ट्रिक वाहन उद्योग में सबसे बड़ा दीर्घकालिक वित्तपोषण करार किया है. इसके अतिरिक्त हमने वित्तीय प्रौद्योगिकी मंच 'यू ग्रो कैपिटल' के साथ मिलकर ऋण प्रदान करने हेतु संयुक्त मंच ''प्रथम'' की शुरुआत की है. इसके तहत एमएसएमई क्षेत्र को रु. 1000 करोड़ के ऋण दिए जाएंगे.

उच्च शिक्षा किसी भी राष्ट्र का आधार स्तंभ होता है. इस दिशा में पहल करते हुए हमने 'प्रीमियर संस्थानों के विद्यार्थियों को बड़ौदा शिक्षा ऋण (बड़ौदा ज्ञान)' उत्पाद के तहत कई महत्वपूर्ण विश्वविद्यालयों को शामिल किया है. साधक की सिद्धि तारतम्यता में ही निहित होती है, अतः बैंकिंग व्यवसाय साधक के रूप में हमें ऐसी पहलों को और आगे भी जारी रखना है.

मुझे विश्वास है कि हम अपने सभी स्तरों पर हो रहे और होने वाले संगठित प्रयासों से अभीष्ट लक्ष्य को प्राप्त करेंगे और अपनी व्यावसायिक यात्रा को नयी ऊर्जा के साथ जारी रखते हुए बैंक को समग्र दृष्टि से समृद्ध एवं सशक्त बनाने में सफल होंगे.

शुभकामनाओं सहित,

विक्रमादित्य सिंह खीची

कार्यपालक निदेशक की डेस्क से

प्रिय साथियो,

हिन्दी दिवस, 14 सितंबर की हार्दिक शुभकामनाएं!

बैंक की हिन्दी पत्रिका 'अक्षय्यम्' के माध्यम से आपसे संवाद करना मेरे लिए हमेशा से एक सुखद अनुभूति रही है. हम एक प्रगतिशील समाज में रहते हैं जहां प्रतिदिन जीवन की नई शुरूआत होती है. इस परिवर्तनशील समय में हमारे विचारों एवं भावनाओं की अभिव्यक्ति के माध्यमों में भी नित नए परिवर्तन हो रहे हैं. इन सब के बीच लेखन अर्थात् पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से विचारों एवं भावनाओं को आपस में साझा करने का माध्यम आज भी सबसे लोकप्रिय है. यह माध्यम न केवल हमारे विचारों को साझा करने बल्कि हमारी समझ को विकसित करने और ज्ञान-अर्जन के दायरे को बढ़ाने में भी सहायक है.

आप जानते हैं कि प्रत्येक संस्था में कुछ नया करने की कोशिश अपने आप में महत्वपूर्ण स्थान रखती है. प्रत्येक नई शुरुआत और प्रयोग के साथ कुछ नई एवं चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है, लेकिन यह भी सच है कि सफलता, हमारी सकारात्मक सोच के साथ सकारात्मक भाव से किए गए कार्य का प्रतिफल होती है. राजभाषा कार्यान्वयन के साथ भी यही स्थिति है. दिनांक 14.09.2021 को विज्ञान भवन, नई दिल्ली में आयोजित हिन्दी दिवस समारोह में बैंक को प्राप्त राजभाषा कीर्ति पुरस्कार को आप सभी की ओर से ग्रहण करना मेरे लिए अत्यंत हर्ष एवं गर्व का विषय है. यह पुरस्कार हमारे बैंक में भाषायी सरोकारों एवं आमजन के कल्याण के प्रति निष्ठा को दर्शाता है. हमें भविष्य में भी अपने उत्कृष्ट कार्यों को जारी रखना है.

बैंकिंग क्षेत्र एक सेवा क्षेत्र है और ग्राहकोन्मुखी बैंक के रूप में हमारे संतुष्ट ग्राहक ही हमारे व्यवसाय वृद्धि के आधार हैं. समय की मांग के अनुसार ग्राहकों की अपेक्षाएं भी बदलती हैं. आज दुनिया भर में समय की बचत पर अधिक बल दिया जा रहा है. इसी बिंदु को ध्यान में रखते हुए हमने ग्राहकों के समय की बचत पर पूरा ध्यान देते हुए 'बॉब वर्ल्ड' मोबाइल बैंकिंग ऐप की शुरूआत की है. इस ऐप के माध्यम से ग्राहक एक ही प्लेटफॉर्म पर कई उपयोगी सुविधाओं का लाभ उठा सकते हैं. इसमें उपलब्ध डिजिटल ऋण, जिसमें पूर्व-स्वीकृत वैयक्तिक ऋण, एफडी एवं आरडी पर ऋण/ ओवरड्राफ्ट की सुविधा शामिल है; कंपेयर एण्ड शॉप, क्रेडिट स्कोर, कृषि ऋण आदि जैसी सुविधाएं ग्राहकों के लिए काफी उपयोगी एवं सुविधाजनक साबित होंगी. ऐसी सुविधाएं निश्चित रूप से ग्राहकों को बैंकिंग का एक नया अनुभव प्रदान करेंगी. कॉर्पोरेट स्तर से 'बॉब वर्ल्ड' के प्रचार-प्रसार की व्यवस्था की जा रही है तथापि आवश्यक है कि हम सभी ग्राहकों को इसके बारे में व्यक्तिगत तौर पर भी बताएं.

हम अब तीसरी तिमाही में प्रवेश कर चुके हैं. वित्तीय वर्ष की शेष दो तिमाहियों में हमारा कार्यनिष्पादन बैंक के वार्षिक वित्तीय कार्यनिष्पादन के लिए अहम है. बैंक के प्रत्येक स्तर पर हमें व्यवसाय विकास के सभी प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष क्षेत्रों में बढ़-चढ़ कर कार्य करना होगा. इस दिशा में हमारे लिए यह जरूरी है कि हम नए खाते खोलने, दबावग्रस्त आस्तियों में सुधार करने, डिजिटल वर्ल्ड में बैंक की पैठ को और मजबूत करने सहित सभी व्यावसायिक लक्ष्यों को प्राप्त करने में उपयोगी भूमिका का निर्वाह करें.

मुझे विश्वास है कि आप सभी के सहयोग से हमारा बैंक भविष्य में भी नए दौर की नई चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना और अपेक्षित बदलावों को आत्मसात करते हुए उत्कृष्ट ग्राहक सेवाएं प्रदान करेगा. साथ ही, हम सामाजिक, सांस्कृतिक और भाषायी विकास के क्षेत्र में भी अपना श्रेष्ठतम योगदान देंगे.

शुभकामनाओं सहित,

अजय के खुराना

कार्यपालक निदेशक की डेस्क से

प्रिय साथियो,

बैंक की तिमाही हिंदी पत्रिका 'अक्षय्यम्' के माध्यम से आपसे संवाद करना मेरे लिए हर्ष की बात है. मैं इसके माध्यम से एक साथ एक विशाल पाठक वर्ग से जुड़ पाता हूं. भाषाएं हमें आपस में जोड़ने का काम करती हैं. यदि दो समूहों की भाषा एक हो तो दोनों समूह में जुड़ाव का पैमाना बहुत व्यापक और मजबूत होता है. हाल ही में देश भर में हिंदी दिवस का आयोजन किया गया. हमारे बैंक में भी विभिन्न कार्यालयों में यह कार्यक्रम धूमधाम से मनाया गया. हमारे बैंक ने इस वर्ष हिंदी दिवस का स्लोगन – **रिश्तों में जीवन की भाषा, जीवन में रिश्तों की भाषा** – रखा था. अपनी भाषाएं आपसी रिश्तों-संबंधों में जीवंतता बनाए रखने तथा नए संबंधों को कायम करने की दृष्टि से महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती हैं. यह स्लोगन इसी तथ्य को रेखांकित करता है. इस स्लोगन की भावना का ध्यान रखते हुए हम बैंक और ग्राहकों के बीच रिश्तों को नई ऊंचाई दे सकते हैं, साथ ही अधिक से अधिक ग्राहकों से रिश्ते कायम कर सकते हैं.

व्यवसाय विकास की दिशा में निरंतर रूप से बाहरी और आंतरिक संवाद बना रहना चाहिए. बेहतर कार्यप्रणाली के लिए आंतरिक संवाद का तथा ग्राहकों, संभावित ग्राहकों, क्लाइंट्स, शेयरधारकों और हितधारकों के साथ मजबूत संबंध स्थापित रखने के लिए बाहरी संवाद का अत्यंत महत्व है. ये दोनों प्रकार के संवाद भाषा के जरिए ही किये जाते हैं. इस संबंध में यह अत्यंत जरूरी है कि हम अपने लक्ष्य वर्ग को ध्यान में रखते हुए ही उसकी सहूलियत के अनुसार आसान भाषा में संप्रेषण करें. इससे हम उनतक अपनी बात कम समय में आसान और प्रभावी तरीके से रख सकेंगे और भाषा के जरिए व्यवसाय विकास में उपयोगी भूमिका निभा पाएंगे.

निरंतर आगे बढ़ने के लिए हमें नियमित आधार पर विकास की नई राह तलाशनी होती है. बैंक में कार्य करते हुए हम बैंकिंग के माध्यम से समाज के विकास में उपयोगी भूमिका निभा सकते हैं. हम अपने ग्राहकों को जितनी अच्छी से अच्छी सुविधाएं उपलब्ध कराएंगे हमारा ग्राहक आधार उतना ही बढ़ेगा और मजबूत होगा. इसके लिए हमारे लिए यह जरूरी है कि हमारे आस-पास के आर्थिक जगत में हो रही गतिविधियों से अपडेट रहें और इनमें जहां तक बैंक की भूमिका की बात हो उसमें हम अपने योगदान से बैंक के व्यवसाय विकास एवं लोगों को वित्तीय रूप से जागरूक कर उनकी आर्थिक स्थिति को सुधारने का काम करें.

जहां तक बैंक में राजभाषा कार्यान्वयन की बात है तो हमारा बैंक इस दिशा में लगातार बेहतर कार्यनिष्पादन करता रहा है. हमारे इस प्रयास को भारत सरकार ने भी सराहा है और इसी का परिणाम है कि हाल ही में नई दिल्ली में आयोजित हिंदी दिवस समारोह में हमारे बैंक को देश के सर्वोच्च राजभाषा सम्मान – कीर्ति पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया.

मुझे पूरा विश्वास है कि आप बैंक के व्यवसाय विकास में अपना बहुमूल्य योगदान पहले की तरह जारी रखेंगे. मैं आपके उज्वल भविष्य की कामना करता हूं.

शुभकामनाओं सहित,

देबदत्त चांद

देबदत्त चांद

इस अंक में

श्री इकराम राजस्थानी का साक्षात्कार 7-9

छत्तीसगढ़ की लोक संस्कृति 10-11

विकल्प नहीं आवश्यकता है ई- लर्निंग 13-16

औपचारिक शिक्षा बनाम व्यावहारिक ज्ञान 17-18

लाचारी 19-20

बदलते गांव 25

भाषा बहता नीर – आइये! सीखें भारतीय भाषाएं 26-27

केदारनाथ : एक अलौकिक धर्मस्थली 28-31

अपने ज्ञान को परखिए 35

मानव व्यवहार पर सोशल मीडिया का प्रभाव 36-38

बैंकिंग शब्द मंजूषा 39

मजबूत अनुपालन संस्कृति – गुणवत्ता और सतत् व्यापार विकास की प्रवर्तक 48-49

चित्र बोलता है 50

अक्षय्यम्, बैंक ऑफ़ बड़ौदा की सभी शाखाओं/कार्यालयों में नि:शुल्क वितरण के लिये प्रकाशित की जाती है, इसमें व्यक्त विचारों से बैंक का सहमत होना आवश्यक नहीं है.

अक्षय्यम्

बैंक ऑफ़ बड़ौदा Bank of Baroda

बैंक ऑफ़ बड़ौदा की हिंदी पत्रिका

वर्ष - 18 * अंक - 67 * जुलाई-सितंबर 2021

-: कार्यकारी संपादक :-

संजय सिंह

प्रमुख - राजभाषा एवं संसदीय समिति

-: संपादक :-

पुनीत कुमार मिश्र

सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा एवं संसदीय समिति)

-: सहायक संपादक :-

अम्ब्रेश रंजन कुमार

वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)

अमित बर्मन

वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)

-: संपर्क :-

राजभाषा विभाग

बैंक ऑफ़ बड़ौदा, बड़ौदा भवन, पांचवी मंजिल,

आर सी दत्त रोड, अलकापुरी, बड़ौदा - 390007

फोन : 0265-2316581

ईमेल : rajbhasha.ho@bankofbaroda.com

akshayyam@bankofbaroda.com

राजभाषा विभाग, बैंक ऑफ़ बड़ौदा, पांचवी मंजिल, आर सी दत्त रोड, अलकापुरी, बड़ौदा - 390007 से संपादित एवं प्रकाशित.

रुपांकन एवं मुद्रण

मे. प्रिंट प्लस प्रा.लि.,

212, स्वस्तिक चेंबर्स, एस.टी. रोड,

चेंबूर, मुंबई 400071.

प्रकाशन तिथि : 12/10/2021

सूचना :

बैंक के स्टाफ सदस्य पत्रिका में प्रकाशन हेतु अपनी रचनाएं/ सामग्री

ई-मेल: akshayyam@bankofbaroda.co.in

पर भेज सकते हैं.

कार्यकारी संपादक की कलम से

'अक्षय्यम्' के माध्यम से अपनी बात रखना मेरे लिए विशेष और सुखद अवसर होता है. इस पत्रिका के माध्यम से मैं पाठकों के एक बड़े वर्ग के समक्ष बैंकिंग में राजभाषा कार्यान्वयन के बारे में अपने विचार साझा कर पाता हूं. मौजूदा बैंकिंग की बात करें तो आज इसकी परिधि केवल अर्थव्यवस्था तक ही सीमित नहीं रही है. बात चाहे समाज और संस्कृति की समृद्धि की हो या मौजूदा बहुचर्चित विषय पर्यावरण संरक्षण की. इन सभी परिप्रेक्ष्यों में बैंकों की भूमिका अहम मानी जा रही है, जिसकी महत्ता न केवल भारत बल्कि पूरे विश्व के संदर्भ में समान मानी जा रही है. आज यह भी अवश्यंभावी लगता है कि बैंकिंग का दायरा आने वाले दिनों में और भी बढ़ेगा. यह केवल व्यवसाय विकास तक ही सीमित नहीं रहेगा. वित्तीय साक्षरता और वित्तीय समावेशन की योजनाओं में तो बैंक पहले से ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाते रहे हैं. आज के दौर में डिजिटल साक्षरता के प्रचार-प्रसार के कार्य में भी बैंक अहम भूमिका निभा रहे हैं. आज जब मानव समाज के प्रत्येक पक्षों में डिजिटल दुनिया का हस्तक्षेप बढ़ गया है तो हमारे लिए एक ओर अधिकांश चीजें आसान भी हुई हैं तो कुछ पक्षों में हमें अधिक ध्यान देने की भी जरूरत है.

हमारे देश में भाषाओं के विकास, प्रचार-प्रसार और उपयोग को लेकर वर्षों से कई तरह के प्रयास किए गए हैं. प्रत्येक पुरातन दौर में अलग-अलग प्रदेशों में अलग-अलग भाषाओं के प्रयोग की अधिकता रही है. फिर भी देश को एक भाषा की जरूरत हर दौर में महसूस हुई है जो कि पूरे देश के अलग-अलग कोने के बीच संपर्क भाषा का काम कर सके. डिजिटल युग ने प्रत्येक भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए उपयुक्त जरिया मुहैया कराया है. इसका लाभ उठाते हुए हम बैंक स्तर पर भी हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं के उपयोग को बढ़ाने का काम कर रहे हैं, ताकि प्रत्येक वर्ग के ग्राहक बैंकिंग सुविधाओं का लाभ उठाने के लिए हमसे जुड़ने में जरा भी हिचक महसूस नहीं करें.

बैंक में व्यवसाय विकास के साथ-साथ साहित्य, कला-संस्कृति आदि के प्रति स्टाफ-सदस्यों का रूझान बढ़ाने के विभिन्न माध्यमों के एक माध्यम के रूप में हमारी हिंदी पत्रिका **'अक्षय्यम्'** भी अहम भूमिका निभाती आई है. इसके जरिए हम समाज के कुछ विलक्षण योगदान देने वाली शख्सियतों से पाठकों को रू-ब-रू कराते हैं और उन्हें बैंक से जोड़ते हैं. इसी क्रम में हमने इस अंक में मशहूर ग़ज़लकार एवं पटकथा लेखक **श्री इकराम राजस्थानी जी का साक्षात्कार** प्रकाशित किया है जिन्हें राष्ट्रीय एवं राज्य स्तरीय कई सम्मानों से नवाजा गया है. राज्यों की लोक-संस्कृति के स्तंभ में हम **सुश्री अर्पिता त्रिवेदी का लेख छत्तीसगढ़ की लोक-संस्कृति** शामिल कर रहे हैं जिसमें हमें छत्तीसगढ़ की परंपराओं को नजदीक से जानने का मौका मिलेगा. साथ ही ई-लर्निंग के बढ़ते चलन को देखते हुए **सद्दाम खान का लेख - विकल्प नहीं आवश्यकता है - ई लर्निंग** को प्रकाशित कर रहे हैं जिसके माध्यम से ई लर्निंग के लाभ और सीमाओं का उल्लेख किया गया है. रिश्तों की अहमियत पर आधारित **श्री अमित श्रीवास्तव की अनुभव-अभिव्यक्ति - लाचारी, श्री रामू तिवारी के लेख बदलते गांव, श्री मिथिलेश कुमार मीणा की रचना- केदारनाथ की यात्रा, श्री अशोक अग्रवाल की रचना -मानव व्यवहार पर सोशल मीडिया का प्रभाव, बैंकों में अनुपालन संस्कृति पर सत्येंद्र कुमार** की रचना भी शामिल कर रहे हैं. इसके अतिरिक्त अन्य रचनाओं के साथ हिंदी दिवस के उपलक्ष्य पर देश भर के अंचलों/कार्यालयों में आयोजित कार्यक्रमों की कवरेज भी शामिल कर रहे हैं.

अंत में मैं यह कहना चाहूंगा कि निरंतर प्रयास के साथ नई संभावनाओं की तलाश से हम अपने कार्य में नयापन और विलक्षणता ला सकते हैं जो संस्थान के साथ-साथ स्वयं के लिए भी कार्यसंतुष्टि का कारण बनेगा. आप सभी के उज्वल भविष्य की आशाओं के साथ - **आप सभी को शुभकामनाएं!**

संजय सिंह

प्रमुख - राजभाषा एवं संसदीय समिति

साक्षात्कार

'भाषा के सर्वांगीण संरक्षण के लिए लिपियों का निरंतर उपयोग जरूरी'

देश के सुविख्यात ग़ज़लकार, साहित्यकार, गीतकार, अनुवादक एवं पटकथा लेखक श्री इकराम राजस्थानी जी अपनी रचनाओं के लिए सुविख्यात हैं. आपके द्वारा राजस्थानी भाषा में लिखे गए गीत, लोकगीत के रूप में प्रसिद्ध हुए और आपको जनकवि की उपाधि भी मिली. आपने 'श्रीमद्भगवद्गीता' और 'कुरान शरीफ़' जैसे महान धर्म ग्रन्थों की शिक्षा को जन-जन तक पहुंचाने के उद्देश्य से उनका राजस्थानी एवं हिन्दी भाषा में पद्यानुवाद किया. 'कुरान शरीफ' के अनुवाद 'प्रकाश पथ' का लोकार्पण तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. शंकरदयाल शर्मा द्वारा किया गया. आपको राष्ट्रीय और राज्य स्तरीय कई सम्मानों से नवाजा जा चुका है. प्रस्तुत हैं उनके साथ बातचीत के कुछ अंश. **– संपादक**

कृपया अपने प्रारंभिक जीवन के बारे में बताएं?

मेरा जन्म 8 जुलाई, 1946 को राजस्थान के जयपुर जिले के चौमू कस्बे में हुआ. मेरी प्रारंभिक शिक्षा चौमू और कालाडेरा गांव में संपन्न हुई. मेरे विद्यालय का नाम सेठ प्रताप रामेश्वर सहरिया हायर सेकेंडरी स्कूल है. बाद में वहीं से हायर सेकेंडरी पास करके वहीं पर अध्यापक बन गया. मैंने इतिहास में स्नातकोत्तर की पढ़ाई की और साथ में बीएड भी किया. मैंने एमए तथा बीएड तक की शिक्षा राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर से प्राइवेट उम्मीदवार के रूप में ग्रहण की. मैंने दस वर्षों तक 1964 से 1974 तक पढ़ाने का कार्य किया. वर्ष 1974 से 1976 तक ऑल इंडिया रेडियो, जयपुर में उद्घोषक (अनाउंसर) के रूप में कार्य किया. वर्ष 1976 से 1980 तक मैंने भारतीय सिनेमा, रेडियो, टेलीविजन के लिए हिंदी और मारवाड़ी में स्क्रिप्ट राइटर के रूप में कार्य किया. उसके बाद 1993 तक एजुकेशन ब्रॉडकास्ट के प्रोड्यूसर के रूप में कार्य किया उसके बाद सहायक स्टेशन निदेशक, उप निदेशक और स्टेशन निदेशक के रूप में कार्य किया.

लेखन-पठन के क्षेत्र में आपका कार्य बहुत ही व्यापक और विविध है. आप इतना कुछ एक साथ कैसे कर पाते हैं?

कवि चाहे तो अपने हुनर से समाज को बदल सकता है. जहां तक मेरे कार्य को लेकर मुझे प्रेरणा मिलने की बात है, मैं भी यह सोचता हूं कि मुझे यह कहां से प्राप्त हुई है, लेकिन फिर मन में बात आती है कि जब आदमी अपने बुजुर्गों से सीखता है तो उसमें ये सारी बातें अपने आप ही आ जाती हैं. मैं एक ऐसे परिवार से ताल्लुक रखता हूं जिसकी भावना हमेशा से ही देशभक्ति की रही है. मेरे पिताजी शिक्षक थे. मैंने बचपन में उनसे ही शिक्षा व संस्कार ग्रहण किए. बचपन में दिए गए संस्कार मेरे अंदर आज भी मौजूद हैं. इसके अतिरिक्त मेरे गुरू जी ने जो सिखाया उनकी बातों को भी मैं पूरी तरह से अमल में लाया. मेरे गुरू शास्त्री जी मुझसे कहा करते थे कि तुम्हें महान बनने के लिए कुछ और नहीं करना है. तुम सिर्फ केन्द्र बिन्दु बन जाओ इतने काम करो कि दुनिया तुम्हारे पीछे चक्कर काटने लगे. तुम दुनिया के पीछे चक्कर मत काटना, इसे मैंने मूलमंत्र बनाया. फिर मैंने लिखना शुरू किया. मेरी एक ग़ज़ल का शेर है – **अंधेरे और उजाले जानता है, वो मेरे सब हवाले जानता है, वो मेरी कामयाबी देखता है, कहां पैरों के छाले जानता है.**

मुसीबतें वास्तव में उठानी पड़ती है, तब कहीं जाकर चीजें हासिल होती हैं. आसान नहीं है इस रास्ते को तय करना. मैं गीतकार भी हूं, अनुवादक हूं. इन सब के लिए मैंने कड़ी मेहनत की है. मैं इस शेर से अपनी बात बयां करना चाहूंगा – **कई तूफान यूं तो सामने थे, हम अपना हौसला लेकर खड़े थे. हमारे घर पर छप्पर भी नहीं थे, हमारे ख़्वाब महलों से बड़े थे.** हमने अपने ख़्वाब को साकार करने की कोशिश की, तब कहीं

जाकर अपने काम को सफलतापूर्वक कर सका और मुझमें जो भी खूबियां हैं, वो पैदा हो सकीं. इन सब के लिए अपने बड़े-बुजुर्गों और गुरुओं का आशीर्वाद और शुभचिंतकों की दुआएं भी हमारे साथ रहनी चाहिए. मैं अभी भी रुका नहीं हूं, अभी भी चल रहा हूं.

आपने राजस्थानी भाषा में साहित्यसृजन भी किया है और अनूदित सामग्री भी राजस्थानी साहित्य में जोड़ी है. इन सभी सृजनात्मक कार्यों के लिए आपने लोक भाषा राजस्थानी का ही चयन क्यों किया?

राजस्थानी भाषा में साहित्यसृजन और अन्य कार्य के पीछे एक यह भी कारण है कि मेरे पिता श्री मास्टर अलाउद्दीन साहब ऑल इंडिया रेडियो में लोक गायक थे. लोक गायकी में उनका बड़ा नाम था. एक तरह से अपने ज़माने के वो रॉकस्टार थे. उनसे मुझे यह विरासत में मिला. मेरी माँ ने मुझे मानो जन्मघुट्टी में मिला करके राजस्थानी भाषा का तत्व पिला दिया था. मैं भी उसी माहौल में बड़ा हुआ और बड़ा होकर के इस तरह इस भाषा से लगाव हुआ. आप यकीन मानिए कि मेरा नाम रखने में भी मेरे पास बहुत विकल्प आए परंतु मैंने बहुत सोचने के बाद तय किया कि मैं राजस्थान की माटी में जन्म लिया आदमी हूं. राजस्थान की धरती में पैदा हुआ हूं और राजस्थानी भाषा में बोल रहा हूं. इस मिट्टी से लगाव के कारण ही मैंने अपना नाम राजस्थानी रखा. मैंने राजस्थानी में जो गीत लिखे वो भी बहुत मशहूर हुए और लोगों ने मुझे जनकवि कहना शुरू कर दिया. आज मेरे कई गीतों को लोग लोकगीत के रूप में गाते हैं पर उन्हें पता ही नहीं कि इन गीतों को इकराम राजस्थानी ने लिखा. **इंजन की सीटी में.....** लिखा गया मेरा गीत दुनिया भर में मशहूर हो गया. मैंने सोचा कि लोगों को इस भाषा से प्यार और लगाव है तो इसमें कुछ विशेष किया जाए. इसलिए मैंने राजस्थानी भाषा में अनुवाद कार्य भी किया. लोकभाषा में रची गई कृतियां लोगों को लंबे समय तक याद रहती हैं इसलिए मैंने लोक संस्कृति के क्षेत्र में योगदान देने का निर्णय लिया. मैंने राजस्थानी भाषा में 'प्रकाश पथ' (कुरान आधारित), शेख सदीरी बतन, कुन की होसी पद्मिनी, गीतांजली और मधुशाला का अनुवाद कार्य किया.

आप प्रथम व्यक्ति हैं, जिन्होंने 'कुरान शरीफ़', 'श्रीमद्भगवदगीता' का राजस्थानी और हिन्दी भाषा में पद्यानुवाद किया है? यह अनूठा काम करने की प्रेरणा कहां से मिली?

लोक संस्कृति के क्षेत्र में कार्य करते हुए मैंने महसूस किया कि लोग आस्था, धर्म और मान्यताओं से जुड़े रहते हैं. मैंने कोशिश की कि इन्हें राजस्थानी भाषा में सुलभ कराया जाए. इस वजह से मैंने 'प्रकाश पथ' (कुरान का भावानुवाद) के अनुवाद का कार्य किया. मेरे इस कार्य के लिए मुझे काफी सराहा गया. विशेष बात यह रही कि 'प्रकाश पथ' का लोकार्पण भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. शंकर दयाल शर्मा ने किया. उन्होंने मुझे चिट्ठी लिखकर राष्ट्रपति भवन में बुलाया फिर इस संबंध में उनसे लगभग पैंतालिस मिनट तक चर्चा हुई. वास्तव में 'कुरान शरीफ़', 'श्रीमद्भगवदगीता' का राजस्थानी और हिन्दी भाषा में अनुवाद करने का मेरा उद्देश्य इन महान ग्रंथों के भाव को जन-जन तक पहुंचाने का ही था.

> "किसी भी भाषा की लिपि की अपनी ही विशेषता है और भाषाओं का लिखित स्वरूप बहुत जरूरी और उपयोगी है."

हिंदी हो या कोई अन्य भारतीय भाषा, भाषा के लिखित रूप को लेकर यह आशंका जताई जाती है कि भविष्य में शायद भाषा का लिखित स्वरूप (लिपि) न बचे केवल मौखिक स्वरूप ही सुरक्षित रहे. इस बारे में आपके क्या विचार हैं?

किसी भी भाषा की लिपि की अपनी ही विशेषता है और भाषाओं का लिखित स्वरूप बहुत जरूरी और उपयोगी है. भाषा भावों की अभिव्यक्ति है. आजकल के जो छात्र या विद्यार्थी पाठक वर्ग हैं वो शायद लिपि की तरफ ध्यान नहीं देते हैं. उदाहरण के लिए उर्दू लिपि को ही ले लें इसकी लिपि नस्तालीक़ लिपि है. परंतु हममें से बहुत कम ही लोगों को यह जानकारी है. हमने पढ़ना कम कर दिया है. पढ़ने के साथ-साथ लिखना भी जरूरी है. दरअसल यह कालखंड ही ऐसा है जब हम लिपि से दूर हुए हैं. भविष्य में हमें इसकी महत्ता समझनी पड़ेगी. लिपियां रहेंगी, लिपियों से ही भाषा लिखी और पढ़ी जाएगी. यह सही बात है कि भाषाओं के अस्तित्व में बने रहने के लिए इनका बोलचाल में बने रहना अतिआवश्यक है. व्यावहारिक रूप में भाषा में व्याकरण का कम, आचरण का ज्यादा महत्व होता है. यदि कोई भाषा आचरण में है तो हम उसे जीवित रख सकेंगे लेकिन उसे लिपि से दूर नहीं कर सकते. वास्तव में लिपि की मौजूदा स्थिति के लिए मौजूदा दौर और

वातावरण भी काफी हद तक जिम्मेदार है. आज लोग अपनी बात संक्षिप्त में कहना चाहते हैं. जरूरी यह है कि यह पीढ़ी लिपि से विमुख नहीं हों. भाषा को केवल मोबाइल के मैसेज तक सीमित नहीं रहना चाहिए. अब इस बात को ही देखिए, मानव समाज ने आपस में संप्रेषण के लिए बोलचाल के रूप में भाषा का उपयोग करना प्रारंभ किया. परंतु प्रभावी संप्रेषण के लिए कालांतर में उसे लिखित संप्रेषण की आवश्यकता पड़ी और समय के साथ-साथ लिपियों का उपयोग भी अमल में आया. मेरा विचार है कि इस मसले पर भाषाविदों को भी पहल करनी चाहिए. नई पीढ़ी तक यह बात पहुंचाई जानी चाहिए.

मनोरंजन के कितने भी स्रोत क्यों न आ जाएं लेकिन आज भी रेडियो का स्थान वैसा ही बना है. रेडियो की इस लोकप्रियता के बने रहने के पीछे महत्वपूर्ण कारण क्या है?

रेडियो एक शाश्वत मीडिया है. रेडियो ने हमें बोलना और बात करना सिखाया है. यह समाज के सभी वर्गों और सभी उम्र के लोगों के लिए मनोरंजन और जानकारी का उपयोगी साधन है. रेडियो ने समाज के सभी हिस्से को छुआ है. सरल और प्रभावी संप्रेषण रेडियो की प्रमुख विशेषता है. अपनी विशेषताओं और उपयोगिता के कारण रेडियो हर दौर में मनोरंजन और जानकारी का जीवंत माध्यम बना रहेगा. रेडियो एक ऐसा माध्यम है जिसे हम सफ़र करते हुए, घर में कुछ काम करते हुए लाइव सुन सकते हैं. इसमें हर वर्ग और समाज के लिए कुछ न कुछ जरूर है.

अनूदित साहित्य सामग्री पाठक वर्ग के लिए कितना उपयोगी है?

देखिए, साहित्य समाज को दिशा देता है. साहित्य समाज का दर्पण है. जहां तक साहित्य में अनूदित सामग्री की बात है तो मैं मानता हूं कि अनूदित साहित्य सामग्री हमें दुनिया भर के दूसरे समाजों को जानने-समझने का जरिया प्रदान करती है. इसके जरिए हम अलग-अलग समाजों के गूढ़ रहस्यों को जान सकते हैं. इसलिए अलग-अलग भाषाओं में रचे गए साहित्य को सभी भाषा वर्ग तक पहुंचाने का काम अनुवाद के जरिए ही किया जा सकता है. यह भी जरूरी है कि हम इन्हें बढ़ावा दें. इसी के जरिए हम अलग-अलग संस्कृतियों को समझ सकते हैं. वैश्वीकरण के दौर में यह प्रक्रिया और भी महत्वपूर्ण हो जाती है.

"जहां तक 'इंजन की सीटी.......' गीत की बात है तो मेरे लिए यह प्रसन्नता का विषय है कि यह गीत अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मेरी पहचान बन गया. मुझे इंजन की सीटी गीत की रचना की प्रेरणा एक नई नवेली वधू को देखकर हुई जिसे मैंने एक लोकगीत की प्रथम पंक्ति को आधार बनाकर किया."

आपने 'चला-चला रे ड्राइवर गाड़ी हौले-हौले, इंजन की सीटी मां म्हारो मन डोले' जैसे जन-जन की जुबान पर बसने वाले गीत लिखे हैं. इस गीत को लिखने के पीछे क्या प्रेरणा रही?

मैं आजकल देखता हूं कि जो भी गीत बन रहे हैं, टिकाऊ नहीं रहते. बहुत ही कम समय तक सुने जा रहे हैं. इसके अलावा लोकभाषा में लिखे गए गीत की मिठास अलग ही होती है. इसका देशी अंदाज अपनी मिट्टी का अहसास देता है. मैं जब ऑल इंडिया रेडियो की एक मीटिंग से बाड़मेर से जैसलमेर लौट रहा था तो उस समय कोयले की इंजन वाली ट्रेन चला करती थी. मेरे सामने वाली सीट पर गांव की नई नवेली दुल्हन अपने ससुराल जा रही थी. पति उसके साथ था. जैसे ही ट्रेन आगे बढ़ी और ट्रेन चलने की तेज़ आवाज़ आई तो वो लड़की एकदम से उछली और चौक गई कि यह आवाज कहां से आ रही है. जैसे ही ट्रेन ने गति पकड़ी वो और खुश हो गई. इंजन से धुआं निकलने पर उसने घूंघट उठा कर देखना चाहा कि यह धुआं कहां से आ रहा है. खिड़की से बाहर झांकने पर देखा तो सभी पेड़-पौधे पीछे जा रहे हैं और गाड़ी आगे जा रही है. तो उसका यह कौतूहल देख कर मुझे यह लगा कि इसपर तो जरूर एक गीत लिखना बनता है. इसने मुझे बहुत ही प्रभावित किया और मैंने इस गीत...... **इंजन की सीटी में म्हॉरो मन डोले, चला-चला रे ड्राइवर गाड़ी हौले-हौले...** की रचना की. इस गीत में गांव की नई दुल्हन जब पहली बार ट्रेन में सफ़र करती है तो उस समय उसका मनोभाव क्या हो सकता है. इस बात की अभिव्यक्ति की गई है. इसमें लोक अंचल का ज़िक्र है. यह गीत ज़िंदगी से जुड़ा हुआ गीत है. आज ऐसा भी नहीं है कि बिल्कुल खराब गीत बन रहे हैं. परंतु कालजयी गीत कम बन रहे हैं.

बैंक ऑफ़ बड़ौदा और इसके स्टाफ सदस्यों के लिए आप क्या कहना चाहेंगे.

मेरे लिए यह खुशी की बात है कि बैंक ऑफ़ बड़ौदा भाषा, साहित्य, लोकभाषा और साहित्यकारों को सम्मान देने का कार्य कर रहा है. मैं बैंक ऑफ़ बड़ौदा की गतिविधियों से भली-भांति परिचित हूं. बैंक के लिए मैं यही कहना चाहूंगा कि आपलोग शुरू से समाज सेवा का काम करते आए हैं. आगे भी मैं यही उम्मीद करता हूं कि आप पहले की ही तरह स्नेहिल बने रहें और समाज सेवा करते हुए निरंतर प्रगति पथ पर आगे बढ़ते जाएं.

लोक-संस्कृति

छत्तीसगढ़ की लोक संस्कृति

छत्तीसगढ़ राज्य का गठन, मध्य प्रदेश पुनर्गठन अधिनियम -2000 के तहत 1 नवंबर 2000 को भारतीय संघ के 26वें राज्य के रूप में हुआ था, रायपुर इसकी राजधानी बनाई गई थी. छत्तीसगढ़ के इतिहास को देखें तो प्राचीन समय में छत्तीसगढ़, दक्षिण कोसल के नाम से प्रसिद्ध था. छत्तीसगढ़ का क्षेत्रफल भारत के क्षेत्रफल का 4.11% है. कर्क रेखा और भारतीय मानक समय रेखा इसके ऊपर से होकर गुजरती है. ये रेखाएं, कोरिया जिले में एक दूसरे को काटती हैं. इस प्रदेश की सीमाएं भारत के 7 राज्यों से घिरी हुई हैं. उत्तरी भाग में सतपुड़ा पर्वतश्रेणी, मध्य भाग में छत्तीसगढ़ का मैदान और दक्षिण भाग में बस्तर का पठार स्थित है. यहां के विश्व प्रसिद्ध बस्तर क्षेत्र को साल वनों का द्वीप भी कहा जाता है. छत्तीसगढ़ की लगभग 80% जनसंख्या कृषि एवं कृषि आधारित व्यवसायों पर निर्भर है. छत्तीसगढ़ को धान का कटोरा कहा जाता है. खनिज संसाधनों की दृष्टि से भी छत्तीसगढ़ अत्यंत संपन्न प्रदेशों में से एक है. प्रदेश में कई नदियों का प्रवाह तंत्र है जिसमें महानदी, गोदावरी- की सहायक नदी इंद्रावती, सोन आदि सम्मिलित हैं. पर्वतों व पठारों के कारण ये नदियां कई जलप्रपातों का निर्माण करती हैं. चित्रकोट जलप्रपात इंद्रावती नदी पर स्थित है. यह भारत का सबसे चौड़ा जलप्रपात है इसलिए इसे भारत का नियाग्रा भी कहा जाता है.

छत्तीसगढ़ की लोक संस्कृति के विषय में जानने से पहले लोक संस्कृति शब्द की जानकारी होना आवश्यक है. लोक संस्कृति का अभिप्राय उस जीवन कला से है जो उस क्षेत्र के समाज द्वारा मान्य है. छत्तीसगढ़ राज्य व्यापक रूप से गांवों कस्बों का प्रदेश है. यहां की लोक संस्कृति मुख्यतः प्रकृति से प्रभावित है, जो जनजातीय भू-भागों में अपनी पृथक सांस्कृतिक अस्मिता के साथ संरक्षित है. इसमें आचार-विचार, रीति-रिवाज, पर्व, उत्सव, लोक गाथाएं, लोक नृत्य, लोकगीत, लोक नाट्य आदि का विराट संसार है.

लोक साहित्य

लोक साहित्य से तात्पर्य उस साहित्य के विचारों की अभिव्यक्ति से है जिसके लेखक अथवा सृजनकर्ता के विषय में कोई ठोस प्रमाण नहीं होते. जो साहित्य मौखिक रूप से परंपरागत ढंग से पीढ़ी दर पीढ़ी प्रवाहित होता जाता है. जो किसी स्थान विशेष, जनजीवन तथा लोक संस्कृति के विचारों की अभिव्यक्ति, किसी स्थान विशेष की बोली के माध्यम से करता है, जो किसी शास्त्रीय सिद्धांतों में बंधा हुआ नहीं होता और जो जनमानस के अनुभवों को लोक भाषा अथवा बोली में अभिव्यक्त करता है. इस प्रकार किसी भाषा के परिष्कृत साहित्य से वह भिन्न होता है क्योंकि परिष्कृत साहित्य लिखित स्वरूप में, पृथक स्वरुप में, लिखित अथवा प्रकाशित रचना है तथा उसके रचनाकार के बारे में ठोस ज्ञान रहता है और उसे उसके रचनाकार के व्यक्तिगत अनुभवों की ही अभिव्यंजना माना जा सकता है.

छत्तीसगढ़ का लोक साहित्य, लोक गाथाओं के रूप में उपलब्ध है. यहां के विषय विविध हैं, फिर भी इनमें प्रेम तत्व की प्रधानता पाई जाती है. ऋतु अनुष्ठान तथा मनोरंजन के लिए हजारों पारंपरिक लोकगीत, सांस्कृतिक लोक कथाएं, श्रृंगार और पराक्रम के हजारों गीत आदि मौखिक व रचित रूप में पाए जाते हैं. छत्तीसगढ़ी लोक कथाओं में सृष्टि के रहस्यों से लेकर प्राचीन तत्वों एवं भावनाओं के दर्शन होते हैं. इन लोक कथाओं का विषय भले ही विविध है पर इनमें प्रेम तत्व की प्रधानता पाई जाती है. छत्तीसगढ़ी में चुरकी-मुरकी, कौवा और गौरैया, बावन के माया, बाधिन और छोरिया, चिरई अउ डार, हाथी गीदड़, सही रद्दा, बकरी अउ शेर आदि लोक कथाएं प्रचलित हैं.

लोकगीत

छत्तीसगढ़ी लोकगीत श्रम और साधना के गीत हैं. कहानी पर आधारित गीत जैसे भरथरी, चंदैनी, ढोला मारू, बांस गीत के साथ विभिन्न संस्कार गीत जैसे सुआ, सेवा गीत, जवारा, सवनाही आदि प्रचलित हैं. छत्तीसगढ़ के लोकगीतों की गायन शैली में छत्तीसगढ़ी पारंपरिक सांगीतिक विविधता भी मौजूद है.

पंडवानी गीत महाभारत कथा का छत्तीसगढ़ी लोक रूप है. इसमें सबल सिंह चौहान के दोहे एवं चौपाई बोली जाती है जिसमें एक मुख्य गायक व एक हुंकार भरने वाला राखी होता है. पद्म विभूषण सम्मानित तीजन बाई ने पंडवानी को अंतर्राष्ट्रीय पहचान दिलाने में अहम् भूमिका निभाई है.

ददरिया को छत्तीसगढ़ के लोक गीतों का राजा कहा जाता है जो मूलतः श्रम एवं प्रेम गीत है. भरथरी गीत में राजा भरथरी और रानी पिंगला की कथा का गायन होता है. इसमें राग और विराग का विकट द्वंद दिखता है. चंदैनी गीत लारिक और चंदा के प्रेम प्रसंग पर आधारित गीत हैं.

वैवाहिक गीत जो विवाह के विभिन्न रस्मों के अवसर पर

महिलाओं द्वारा गाया जाता है जैसे तेल गीत – कन्या को हल्दी तेल चढ़ाते वक़्त गाया जाता है, भांवर गीत– सात फेरों के समय, परगहनी गीत – बारात के स्वागत के समय, भड़ौनि गीत हास-परिहास से परिपूर्ण बारातियों के भोजन के समय आदि. ये गीत विवाह के अवसर को और भी आनंदमयी बना देते हैं.

लोकनृत्य

नृत्य उल्लास का प्रतीक होता है. छत्तीसगढ़ का जनजाति क्षेत्र हमेशा अपने लोकनृत्यों के लिए विश्व प्रसिद्ध रहा है. विभिन्न अवसरों, पर्वों से संबंधित भिन्न-भिन्न नृत्य प्रचलित हैं जिनमें स्त्री-पुरुष समान रूप से भाग लेते हैं. यहां के लोकनृत्य में मुख्यतः पंथी नृत्य, राउत नाचा और सुआ नृत्य प्रचलित हैं. सुआ नृत्य को छत्तीसगढ़ का गरबा कहा जाता है. यह दीपावली के अवसर पर किया जाता है. इसमें केवल महिलाएं भाग लेती हैं.

पंथी नृत्य सतनाम पंथ के लोगों द्वारा किया जाता है. इस गीत का प्रमुख विषय गुरु घासीदास का चरित्र होता है. इसमें नर्तक कलाबाजियां करते हैं.

राउत नाचा शौर्य का कलात्मक प्रदर्शन है. पौराणिक कथा है कि श्री कृष्ण के द्वारा अन्यायी मामा कंस के वध के बाद यह नृत्य विजय के प्रतीक स्वरूप प्रारंभ किया गया था. इसमें केवल पुरुष ही भाग लेते हैं जो हाथ में सजी हुई लाठी लेकर टोली में गाते एवं नृत्य करते हैं.

लोकनाट्य

छत्तीसगढ़ी लोकनाट्य गीत, नृत्य, अभिनय की त्रिवेणी है जो सामान्य समारोह के रूप में या कुछ स्थानीय कुरीतियों को प्रकाश में लाने के उद्देश्य से एक नाट्य मंच के माध्यम से प्रस्तुत किए जाते हैं. छत्तीसगढ़ में लोकनाट्य में मुख्यतः नाचा, गम्मात और रहस प्रचलित हैं.

नाचा छत्तीसगढ़ का सर्वाधिक प्रचलित लोकनाट्य है जो ग्रामीण अंचल में सर्व व्याप्त है. यह मराठा काल में प्रारंभ हुआ इसलिए नाचा में तमाशा जो एक मराठी नाट्य है, का प्रभाव दिखता है. यह मूलतः पुरुषों द्वारा किया जाता है.

गम्मत में सामाजिक बुराइयों, रूढ़ियों के खिलाफ संघर्ष का आवाहन, व्यंग्य तथा नए उभरते समाज में शिक्षा आदि को

दर्शाया जाता है. इस तरह इसका उद्देश्य लोक कल्याण होता है.

रहस छत्तीसगढ़ राज्य की सांस्कृतिक परंपरा का प्रतीक है. यह राधा और कृष्ण की मनोहारी रासलीला की कथा का छत्तीसगढ़ी रूपांतरण है. इसमें बाबू रेवाराम रचित रहस की पांडुलिपियां प्रचलित हैं. यह बिलासपुर संभाग में सर्वाधिक प्रचलित है.

छत्तीसगढ़ के परंपरागत पर्व आमतौर पर प्रकृति आधारित हैं. इनमें हरेली, गोंचा पर्व, हलषष्ठी, पोला, हरतालिका, भोजली पर्व, छेर-छेरा, नवाखाई आदि मनाये जाते हैं. बस्तर का दशहरा प्रसिद्ध है. बस्तर का दशहरा शेष भारत से भिन्न है. शेष भारत में दशहरा पर्व में रावण के वध को बुराई पर अच्छाई की विजय स्वरुप मनाया जाता है जबकि बस्तर का दशहरा माता दंतेश्वरी देवी के प्रति समर्पित है.

यह 75 दिनों तक मनाया जाता है. बस्तर दशहरा की ख्याति अब ऐसी हो गई है कि इसे देखने के लिए देश-विदेश के अलग-अलग हिस्सों से सैलानी आते हैं जिसमें 13 दिन तक विभिन्न रस्मों को हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है. इसमें प्रथम प्रथा के रूप में एक लकड़ी की पूजा की जाती है और उससे 8 चक्कों वाले रथ का निर्माण किया जाता है. फिर एक 9 वर्ष की कुंवारी कन्या को 'काछन देवी' का रूप मानकर कांटों वाले झूले में बैठाकर उनसे दशहरा की अनुमति ली जाती हैं. अश्विन शुक्ल प्रथमा को 'जोगी बिठाई' की रस्म होती है जिसमें सिरहासार भवन में एक आदमी को बैठने लायक गड्ढा खोदा जाता है, इसके अंदर एक व्यक्ति को लगातार 9 दिन तक योगासन में बैठा दिया जाता है. नवमी के दिन जोगी को समारोह पूर्वक उठाया जाता है. इसी दिन दंतेवाड़ा से डोली में सवार होकर आई मावली माता का स्वागत किया जाता है. विजयादशमी के दिन विशाल 8 चक्कों वाला रथ चलता है. दशहरा संपन्न होने के बाद सीरासार में ग्रामीण तथा मुखियों की मिली-जुली एक आम सभा होती है जिसे मुरिया दरबार कहते हैं. इसमें विभिन्न समस्याओं के निराकरण पर खुली चर्चा की जाती है.

छत्तीसगढ़ी व्यंजनों में ठेठरी, खुरमी, गुलगुला, चौसेला, पपची, फरा, बोबरा, लाटा आदि प्रसिद्ध है. छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर में शहर के बीचोबीच स्थित महंत घासीदास स्मारक संग्रहालय में एक खान-पान स्थल विद्यमान है जहां केवल पारंपरिक छत्तीसगढ़ी व्यंजन ही उपलब्ध रहते हैं.

छत्तीसगढ़ की लोक संस्कृति ने न केवल भारत वर्ष को बल्कि पूरे विश्व को आकर्षित किया है. कई विदेशी व्यक्तियों ने यहां की लोक कला से आकर्षित होकर किताबें लिखी हैं. यह छत्तीसगढ़ की लोक कला संस्कृति की समृद्धि को दर्शाता है.

अर्पिता त्रिवेदी
अधिकारी (विपणन)
क्षेत्रीय कार्यालय, रायपुर

प्रधान कार्यालय, बड़ौदा द्वारा 'भाषाई चौपाल' की शृंखला की शुरूआत

चौपाल का आयोजन दरअसल खुले आसमां वाली किसी निर्धारित जगह पर होता रहा है. प्रकृति के सान्निध्य में आयोजित चर्चा-परिचर्चा का यह स्वरूप हर दौर में उपयोगी और महत्वपूर्ण रहा है. आपसी संवाद के इस माध्यम के जरिए लगातार ज्ञान तथा जानकारी के आदान-प्रदान का रिवाज़ सदियों से जारी है. मुख्य बात यह है कि मौजूदा डिजिटल युग ने ऑनलाइन माध्यम से विभिन्न विषयों पर चौपाल के आयोजन की संभावनाओं को बरकरार रखा है. इसी संबंध में हमारे बैंक ने भाषा के विविध पक्षों के प्रसिद्ध व्यक्तियों के साथ 'भाषाई चौपाल' की शृंखला की शुरूआत की है. प्रत्येक 'भाषाई चौपाल' में हम बैंक के स्टाफ-सदस्यों के लिए खुले आकाश की तरह एक खुला मंच उपलब्ध करवाते हैं, जिसमें बैंक के स्टाफ-सदस्य इस कार्यक्रम से जुड़कर अपने ज्ञान में संवर्धन करते हैं जो उनके लिए बहुत ही रूचिकर होता है.

'भाषाई चौपाल' की पहली कड़ी में हमने दिनांक 17 जुलाई, 2021 को माइक्रोसॉफ्ट इंडिया के डायरेक्टर-लोकलाइजेशन एवं एक्सिसीबीलिटीश श्री बालेंदु शर्मा 'दाधीच' को मुख्य वक्ता के रूप में आमंत्रित किया. इस वर्चुअल कार्यक्रम में उन्होंने **'भाषाई तकनीक और हिंदी: दशा: और दिशा'** विषय पर विस्तृत व्याख्यान दिया. उन्होंने अपने वक्तव्य में भाषा और अनुवाद से संबधित विभिन्न नवोन्मेषी तकनीकी टूल्स के माध्यमों के बारे में विस्तार से बताया. इस कार्यक्रम में 1500 से अधिक स्टाफ सदस्य जुड़े.

"हाल के डेढ़ साल में हुई तकनीकी प्रगति एक दशक में हुई प्रगति के बराबर है. मौजूदा दौर की आवश्यकताओं ने पूरी दुनिया को तेजी से डिजिटल व्यवस्थाओं को अपनाने के महत्व को समझाया है."

चौपाल की दूसरी कड़ी में दिनांक 12 अगस्त, 2021 को हमने मुख्य अतिथि के रूप में प्रसिद्ध ग़ज़लकार, साहित्यकार, गीतकार एवं पटकथा लेखक श्री इकराम राजस्थानी को आमंत्रित किया. उन्होंने भाषा और संस्कृति, विशेष कर गांव की संस्कृति के बारे में विस्तार से अपने विचार रखे. उन्होंने मौजूदा दौर में भाषा के साथ-साथ लिपियों के संरक्षण के महत्व के बारे में भी सभी को अवगत कराया. इकराम राजस्थानी जी का 'इंजन की सीटी में म्हारो मन डोले.....' राजस्थानी गीत काफी लोकप्रिय हुआ है. इस कार्यक्रम के दौरान उन्होंने इस गीत को रचने के पीछे अपनी प्रेरणा से भी अवगत कराया. इस कार्यक्रम में 2700 से अधिक स्टाफ सदस्य जुड़े.

बैंक द्वारा शुरू की गई भाषाई चौपाल की यह पहल आगे भी जारी रहेगी और बैंक अपने स्टाफ सदस्यों के साथ निरंतर एक नई शख्सियत के साथ हर कार्यक्रम में जुड़ेगा.

"देखिए, साहित्य समाज को दिशा देता है. साहित्य समाज का दर्पण है. जहां तक साहित्य में अनूदित सामग्री की बात है तो मैं मानता हूं कि अनूदित साहित्य सामग्री हमें दुनिया भर के दूसरे समाजों को जानने-समझने का जरिया प्रदान करती है. इसके जरिए हम अलग-अलग समाजों के गूढ़ रहस्यों को जान सकते हैं."

विकल्प नहीं आवश्यकता है ई-लर्निंग

वैश्विक महामारी 'कोरोना' ने इंसान के दैनिक जीवन को आज पूरी तरह से बदल दिया है. परंतु इंसान की फितरत है कि वह चुप नहीं बैठ सकता. वह हर चुनौती में नए अवसरों की तलाश करता रहता है. इन्हीं चुनौतियों के बीच कोरोना ने इंसान को तकलीफों के साथ-साथ अनेक नए अवसर भी प्रदान किए हैं जिनमें से एक है ई-लर्निंग अर्थात् इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से सीखना. ई-लर्निंग या सीबीटी (कंप्यूटर आधारित शिक्षा), आईबीटी (इंटरनेट-आधारित शिक्षा) या डब्ल्यूबीटी (वेब-आधारित शिक्षा) या एमबीटी (मोबाइल आधारित शिक्षा) या वर्चुअल क्लासरूम और वेबिनार इत्यादि दुनिया में आज एक अनिवार्य पहलू बन गए हैं. ई-लर्निंग का तात्पर्य इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस तथा डिजिटल मीडिया के माध्यम से शिक्षा लेना है. ई-लर्निंग को ऑनलाइन माध्यम से संचालित होने वाले अकादमिक इंटरैक्शन के रूप में भी परिभाषित किया जाता है, पिछले कुछ दशकों में जीवन के हर क्षेत्र में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी का काफी तेजी से विस्तार हुआ है. प्राचीन गुरुकुल परंपरा से होते हुए शिक्षा ने अब तक अनेक सोपान तय किये हैं. पिछली सदी के पारंपरिक श्यामपट्ट तथा चॉक के दौर से गुजरते हुए आज पठन-पाठन के समूचे परिदृश्य में ब्लैकबोर्ड का स्थान स्मार्टबोर्ड, चॉक का स्थान मार्कर पेन तथा स्टिक का स्थान लेज़र पॉइंटर ने ले लिया है.

कोविड-19 महामारी के दौर में लागू लॉकडाउन के कारण स्कूल, कॉलेज और विश्वविद्यालयों में ई-लर्निंग का बहुत तेजी से विकास हुआ. आज की स्थिति व परिस्थिति को देखकर कई बार मन में संशय होता है कि क्या सचमुच इंटरनेट वर्तमान समय का आविष्कार है. क्योकि संसार में आग व पहिये के बाद अगर कोई दूसरी बहुत ही महत्वपूर्ण खोज हुई है तो वह है इंटरनेट. आज इंटरनेट के माध्यम से एक क्लिक में कोई भी जानकारी हासिल की जा सकती है. पृथ्वी के एक छोर पर खड़ा व्यक्ति दूसरे छोर पर खड़े व्यक्ति से जब चाहे वास्तविक समय के आधार (रियल टाइम बेसिस) पर जितनी देर चाहे वीडियो पर एक दूसरे को देखते हुए बातें कर सकता है. आज अहसास होता है कि इंटरनेट ने पूरी दनिया को हमारी मुट्ठी में कर दिया है. ऐसे में इंटरनेट का प्रभाव हमारी लर्निंग पर न पड़े ऐसा तो हो ही नहीं सकता.

अल्बर्ट आइंस्टाइन ने कहा था कि ''वास्तविक शिक्षा वह है जो स्कूल में सीखे गए ज्ञान को भूलने के बाद भी याद रहती है.'' तात्पर्य यह है कि प्रभावी शिक्षा केवल कुछ वर्षों की स्कूल की पढ़ाई तक सीमित रहने वाली शिक्षा नहीं होती, यह अनवरत जारी रहती है. इस प्रकार की शिक्षा कक्षा की चारदीवारी और कुछ एक अध्यापकों की सीमा में रहकर नहीं अर्जित की जा सकती है. आज हम एक ऐसे दौर से गुजर रहे हैं जब जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में डिजिटलाइजेशन और प्रौद्योगिकी उन्नयन का प्रभाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित है. हमारी संस्कृति, परिवेश, जीवन शैली, शिक्षा आदि कुछ भी प्रौद्योगिकी से अछूता नहीं है. मुद्रित पुस्तकें और परंपरागत क्लासरूम मॉडल भी धीरे-धीरे प्रभावित होने लगे हैं. ई-लर्निंग पिछले कुछ दशकों में शिक्षण पद्धति में हुए परिवर्तन प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया है. उच्च शिक्षा में इसका प्रभाव बृहद रूप से परिलक्षित भी हो रहा है. आज गणित से लेकर भौतिक शास्त्र तक के सभी कठिन प्रश्नों का उत्तर ई-लर्निंग के माध्यम से प्राप्त किए जा सकते हैं. शुरुआती दिनों में ई-लर्निंग का मुख्य उद्देश्य क्लासरूम लर्निंग को सप्लीमेंट करना था. परंतु लॉकडाउन की परिस्थितियों में यह लर्निंग का मुख्य जरिया बनती जा रही है.

ई-लर्निंग का इतिहास

वर्ष 1993 के आरंभ में अमेरिकन वैज्ञानिक विलियम डी. ग्रेज़ियाडी ने कुछ सॉफ्टवेयर प्रोग्रामों के साथ इलेक्ट्रॉनिक मेल, दो वैक्स नोट्स सम्मेलनों और गोफर/लींक्स का एक साथ प्रयोग करते हुए एक ऐसे ऑनलाइन कंप्यूटर वितरित व्याख्यान और

मूल्यांकन परियोजना का वर्णन किया, जिसकी सहायता से विद्यार्थी व शिक्षक रिसर्च, एजुकेशन, सर्विस एण्ड टीचिंग (अनुसंधान, शिक्षा, सेवा एवं अध्यापन (आरईएसटी)) के माध्यम से एक वर्चुअल इंस्ट्रक्शनल क्लासरूम एनवायरनमेंट इन साइंस (आभासी निर्देशात्मक विज्ञान कक्षा वातावरण (वीआईसीईएस) का निर्माण किया. वर्ष 1997 में ग्रेज़ियाडी ने ''बिल्डिंग ऐसिंक्रोनस एण्ड सिंक्रोनस टीचिंग-लर्निंग एनवायरनमेंट्स: एक्सप्लोरिंग ए कोर्स/क्लासरूम मैनेजमेंट सिस्टम सॉल्यूशन'' (अतुल्यकालिक और तुल्यकालिक अध्यापन-शिक्षा वातावरण का निर्माण: एक पाठ्यक्रम/कक्षा प्रबंधन प्रणाली समाधान का अन्वेषण) नामक एक लेख प्रकाशित किया जिसमें उन्होंने स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ़ न्यूयॉर्क में अध्यापन के क्षेत्र में प्रौद्योगिकी आधारित पाठ्यक्रम विकास एवं प्रबंधन की रणनीति विकसित करने एवं उत्पादों का मूल्यांकन करने की एक प्रक्रिया का वर्णन किया. इन उत्पादों को ऐसा बनाया जाना था कि वहनीय होने के साथ-साथ उनका उपयोग व रखरखाव आसान हो, इन्हें दोहराया व मापा जा सके तथा सामर्थ्यानुसार ख़रीदा जा सके. इसके अतिरिक्त लंबे समय तक सस्ता होने के साथ सफलता की संभावना भी ज्यादा हो.

हालांकि, न्यू जर्सी इंस्टिट्यूट ऑफ़ टेक्नोलॉजी में 1980 के दशक में मूरै टुरोफ़ और रोक्सेन हिल्ट्ज़ द्वारा विकसित पाठ्यक्रम, यूनिवर्सिटी ऑफ़ वेल्फ, कनाडा के पाठ्यक्रम, ब्रिटिश ओपन यूनिवर्सिटी के पाठ्यक्रम और यूनिवर्सिटी ऑफ़ ब्रिटिश कोलंबिया, जहां वेब सीटी सबसे पहले विकसित हुआ था, जो अब ब्लैकबोर्ड इंक में अंतर्मुक्त है, के ऑनलाइन दूरस्थ पाठ्यक्रम जैसे कई ऑनलाइन पाठ्यक्रमों ने सदैव विद्यार्थियों के बीच ऑनलाइन चर्चा का प्रयोग किया था. इसके अतिरिक्त शुरू से ही, हैरासिम (1995) जैसे चिकित्सकों ने ई-लर्निंग शब्द की उत्पत्ति से बहुत पहले, ज्ञान के निर्माण के लिए शिक्षा नेटवर्कों के प्रयोग पर काफी बल दिया था. आज विभिन्न शिक्षा विभागों द्वारा जारी अनुसंधानों के विश्लेषण से पता लगता है कि आमतौर पर प्रत्यक्ष पाठ्यक्रमों का अनुसरण कर उच्चतर शिक्षा के लिए अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों की तुलना में ऑनलाइन अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों का प्रदर्शन बेहतर है.

ई-लर्निंग स्वाभाविक रूप से दूरस्थ शिक्षा के लिए अनुकूल होती है, लेकिन आमने-सामने या प्रत्यक्ष अध्यापन के लिए भी इसका प्रयोग किया जा सकता है, इस मामले में आम तौर पर मिश्रित शिक्षा शब्द का प्रयोग किया जाता है. ई-लर्निंग के अग्रदूत बर्नार्ड लस्किन का तर्क है कि यदि ई-लर्निंग को

प्रभावशाली बनाना है तो ''ई'' अक्षर में व्यापक अर्थ होने की बात जरूर समझ में आनी चाहिए. लस्किन कहते हैं कि ''ई'' की व्याख्या इस तरह से की जानी चाहिए कि इसका अर्थ एक परंपरागत राष्ट्रीय व्याख्या के रूप में ''इलेक्ट्रॉनिक'' के अतिरिक्त रोमांचक, ऊर्जावान, उत्साही, भावुक, विस्तृत, उत्कृष्ट एवं शैक्षिक निकले. इस तरह की विस्तृत व्याख्या 21वीं सदी के अनुप्रयोगों की अनुमति प्रदान करता है और शिक्षा एवं मीडिया मनोविज्ञान को समानता के स्तर पर लाकर खड़ा कर देता है. आइए एक नजर इसके लाभ और हानियों पर डालते हैं.

ई-लर्निंग के लाभ:

- ई-लर्निंग भौगोलिक सीमाओं के बंधन से मुक्त है. आज से महज कुछ वर्ष पूर्व तक अगर कोई विद्यार्थी किसी दूरस्थ विश्वविद्यालय में अध्ययन करना चाहता था तो उसे उस कैंपस में जाना अनिवार्य था. परंतु आज अधिकतर शैक्षिक संस्थानों के पास ई-लर्निंग की सुविधा उपलब्ध है जिससे विद्यार्थियों को सुदूर इलाकों में रहते हुए भी उस संस्थान से शिक्षा प्राप्त करने का मौका मिल जाता है. इसके अतिरिक्त ई-लर्निंग किसी विद्यार्थी के शहर से सैकड़ों मील दूर के राज्यों अथवा हजारों मील दूर विदेशों में रहने वाले विद्यार्थियों के साथ विचार-विमर्श करने का अवसर भी प्रदान करता है, दूसरे विद्यार्थियों के साथ चर्चा, विमर्श, संवाद, विचारों का आदान-प्रदान विद्यार्थियों की समझ और अनुभव को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं.
- ई-लर्निंग समय की सीमा को तोड़ विद्यार्थियों को क्लास करने या सीखने का समय निर्धारित करने की स्वतंत्रता प्रदान करती है. उदाहरण के लिए यदि विद्यार्थी अपने अध्यापक के लेक्चर को रिकॉर्ड कर लेता है या पहले से रिकार्ड लेक्चर उपलब्ध हो जाता है तो विद्यार्थी अपनी सुविधानुसार कभी भी उसे सुन या देख सकता है. जो

विद्यार्थी पढ़ाई के साथ-साथ काम भी करते हैं, ऐसे विद्यार्थी अपने समयानुसार पढ़ाई कर सकते हैं.

- ई-लर्निंग असीमित सूचनाओं का भंडार है. शब्दकोश में शब्दों को ढूंढना हो या किसी विषय पर विस्तृत जानकारी प्राप्त करनी हो, सभी सूचनाएं ई-लर्निंग के माध्यम से सहज ही प्राप्त की जा सकती हैं.
- ई-लर्निंग विद्यार्थियों को अपनी क्षमता के अनुसार सीखने की सुविधा प्रदान करती है. क्लासरूम शिक्षा में विद्यार्थी मेधावी हो या फिर औसत सभी के लिए पढ़ने की एक समय-सीमा व गति होती है. ई-लर्निंग में विद्यार्थी अपनी काबिलियत, रुचि और समय के अनुसार पढ़ने की गति को निर्धारित कर सकते हैं.
- ई-लर्निंग पाठ को बार-बार सुनने का मौका देती है. कुछ विद्यार्थियों को एक बार सुनकर पाठ पूरी तरह समझ नहीं आता है. परंतु यदि पाठ उसे दो या तीन बार सुनने को मिल जाए तो उसे अच्छी तरह से समझ में आ जाता है. ई-लर्निंग के माध्यम से उसे यह सुविधा मिल जाती है. यहां तक कि लाइव क्लास की रिकॉर्डिंग भी की जा सकती है और उसका प्रयोग बार-बार किया जा सकता है.
- ई-लर्निंग त्रिआयामी (थ्री डाइमेंशनल) व एनिम `टेड तस्वीरों के माध्यम से विद्यार्थियों को पाठ की मूल संकल्पना को बारीकी से समझने में मदद करता है.
- ई-लर्निंग के माध्यम से पाठ्य सामग्रियों का वितरण व संचार तेज हुआ है. कल्पना कीजिए पहले जब कोई पुस्तक या जर्नल किसी प्रकाशक से मंगानी होती थी तो कितना समय लगता था. परंतु आज यह सिर्फ एक क्लिक में उपलब्ध है.
- ई-लर्निंग किफायती तथा पर्यावरण के अनुकूल है. पहले कॉपी-किताबों को तैयार करने में असंख्य पेड़ों को काटना पड़ता था. परंतु ई-बुक्स ने न सिर्फ भौतिक किताबों का उपयोग व उनकी लागत को कम किया बल्कि पर्यावरण के संरक्षण में भी इनके दूरगामी परिणाम परिलक्षित हुए. आज विश्व के विकसित देशों में साल भर में जो किताबें पढ़ी जाती है उनमें से आधी से ज्यादा किताबें ई-बुक्स के रूप में पढ़ी जाती है.
- ई-लर्निंग के विषयों को विद्यार्थियों की जरूरत के अनुसार विकसित किया जा सकता है, जिससे विद्यार्थी अपनी जरूरत के अनुसार पढ़ाई कर सकते हैं.
- ई-लर्निंग के माध्यम से प्रशिक्षक कई प्लेटफॉर्म पर भी अपने ज्ञान को साझा कर सकते हैं जिससे विद्यार्थीगण अपने शारीरिक, राजनीतिक और आर्थिक स्थिति के बाहर भी इन पाठ्यक्रमों का लाभ उठा सकते है.
- कई परिस्थितियों में, ई-लर्निंग का सत्र 24x7 उपलब्ध रहता है. शारीरिक रूप से कक्षाओं में भाग लेने के लिए शिक्षार्थी किसी विशेष दिन/समय के अधीन नहीं होते हैं. वे अपनी सुविधानुसार शिक्षा सत्रों को कुछ देर के लिए रोक भी सकते हैं. सभी ऑनलाइन पाठ्यक्रमों के लिए उच्च प्रौद्योगिकी की आवश्यकता भी नहीं होती है. इसके लिए आमतौर पर केवल बुनियादी इंटरनेट उपयोग, ऑडियो और वीडियो की जानकारी होना ही काफी है.
- ई-लर्निंग में शिक्षार्थी की प्रगति चिह्नित रहती है. कंप्यूटर विद्यार्थी के छोड़े गए स्थान को याद रखता है ताकि वे वहीं से अपने पाठ्यक्रम को फिर से शुरू कर सकें जहां उन्होंने छोड़ा था.
- घर, कार्यालय, हवाई अड्डा, कॉफी की दुकान इत्यादि कहीं भी रहते हुए शिक्षा प्राप्त की जा सकती है. इस प्रकार परिवहन की लागत को भी कम किया जा सकता है.

उपर्युक्त के अलावा ई-लर्निंग के और भी कई लाभ हैं. परंतु ऐसा नहीं है कि इससे हानियां नहीं हैं, आइए एक नजर ई-लर्निंग से होने वाले नुकसान पर भी डालें.

ई-लर्निंग के नुकसान:

- ई-लर्निंग की सबसे बड़ी चुनौती जो उभरकर सामने आई है वह है विद्यार्थियों का अकेलापन व अलग-थलग पड़ना. ई-लर्निंग विद्यार्थियों का आईक्यू लेवल बढ़ाने में मददगार साबित होता है, परंतु सोशल इंटेलिजेंस कम कर देती है. ऐसा देखा गया है कि जिन विद्यार्थियों का सोशल इंटेलिजेंस ज्यादा होता है, वह लोगों के संपर्क में ज्यादा रहते हैं तथा लोगों की भावनाओं के प्रति संवेदनशील होते हैं. साथ ही इस प्रकार के विद्यार्थी अपने व्यावसायिक तथा निजी जिंदगी में भी ज्यादा सफल होते हैं. वे जिंदगी की चुनौतियों का बेहतर तरीके से प्रबंधन भी कर पाते हैं. परंतु ई-लर्निंग इससे विद्यार्थियों को वंचित रखती है.
- सूचनाओं की अत्यधिक उपलब्धता लर्निंग में बाधा उत्पन्न करती है. ई-लर्निंग असीमित सूचनाओं व जानकारियों का भंडार है. यह विद्यार्थियों को अपने विषय पर सटीकता

के साथ अध्ययन करने में मुश्किल पैदा करती है और विद्यार्थियों का ध्यान भटकाती है.

- ई-लर्निंग आज भी बहुतेरे लोगों की पहुंच के बाहर है. कई परिवार ऐसे हैं जो बमुश्किल अपने बच्चों की स्कूल फीस दे पाते हैं. ऐसे बच्चों के लिए ई-लर्निंग के खर्च को वहन कर पाना आसान नहीं है.
- ई-लर्निंग के लिए अत्यधिक आत्म-अनुशासन व दृढ़ संकल्प जरूरी है. प्रभावी शिक्षा के लिए कुछ बाहरी कारक यथा अध्यापक की वास्तविक उपस्थिति लर्निंग के अनुरूप माहौल इत्यादि भी आवश्यक होते हैं. ई-लर्निंग में इन सब चीजों का अभाव होता है. ऐसे में विद्यार्थियों में अनुशासन की कमी देखी जाती है, जिससे वे इसका पूरा लाभ नहीं उठा पाते हैं.

पब्लिक स्पीकिंग जैसे कौशल के लिए ई-लर्निंग उतनी कारगर नहीं है. अगर विद्यार्थी एक सफल वक्ता बनना चाहता है तो उसे अन्य लोगों के सामने बोलना ही पड़ेगा. ई-लर्निंग इस तरह का प्लेटफार्म प्रदान नहीं कर पाती.

ई-लर्निंग की जरूरत शहरी पेशेवरों से होते हुए आज सुदूर ग्रामीण अंचलों तक अपना विस्तार कर रही है. इसके सामाजिक प्रभाव पर बात करते समय अचानक हमारे सामने भारत के पिछड़े इलाकों के गांवों की तस्वीर दिखने लगती है जहां आज भी माता-पिता अपने बच्चों को स्कूल में मास्टर के हवाले करते वक्त यह घोषणा करते हैं कि बालक की हड्डी-हड्डी हमारी है और चमड़ी-चमड़ी आपकी यानी बच्चा यदि पढ़ने में मन न लगाएं तो उसे पीट-पीटकर तैयार करो. अध्यापक भी इसे अपना अधिकार मानते हुए 'छड़ी पड़े छम-छम और विद्या आवे धम-धम' कहावत कहते जाते हैं और नन्हे-मुन्नों को पहाड़ा याद करवाते रहते हैं. ई-लर्निंग ने इस स्थिति में भी व्यापक बदलाव किया है. जब हम ई-लर्निंग के लाभ और हानि दोनों का आकलन करते हैं तो पाते हैं कि विज्ञान की हर खोज की तरह ई-लर्निंग की कामयाबी भी इस बात पर निर्भर करती है कि इसका कितना सही उपयोग किया जाता है. आज ज्ञान प्रबंधन एवं पुनर्प्रयोगात्मकता से संबंधित ई-लर्निंग के अनेकों ऐप विश्वविद्यालयों व विभिन्न संस्थाओं के पास उपलब्ध है. गूगल मीटस्, माइक्रोसॉफ्ट टीम्स आदि आज इसके उत्कृष्ट उदाहरण है. यहां तक कि अब सैन्य अकादमियों में भी ई-लर्निंग का भरपूर उपयोग हो रहा है. हमारे देश में विभिन्न सॉफ्टवेयर कंपनियां अपने कर्मचारियों को घर बैठे ही प्रशिक्षण उपलब्ध करा रही हैं. ई-लर्निंग प्रणाली केवल शिक्षा व प्रशिक्षण का उद्देश्य ही नहीं प्रदान करती है बल्कि विद्यार्थी व स्टाफ की प्रगति का मूल्यांकन भी करती है. यह पुनर्प्रयोग ज्ञान प्रतिधारण और ज्ञान हस्तांतरण की चक्रीय प्रक्रिया और डेटा एवं रिकॉर्ड के उपयोग का एक उत्कृष्ट उदाहरण है.

परिवर्तन प्रकृति का नियम है और इसे हर एक को स्वीकार करना ही पड़ता है, चाहे खुशी से चाहे अनमनेपन से. शिक्षण और प्रशिक्षण के क्षेत्र में आज हम परिवर्तन के ऐसे ही एक बड़े मुहाने पर आ पहुंचे हैं. देश दुनिया के बदलते हालात औपचारिक शिक्षा के बदले ई-लर्निंग के विकल्प को मजबूती से स्थापित कर रहे हैं. अतः ई-लर्निंग को आज के युग में नकारा नहीं जा सकता. यह अब एक विकल्प नहीं बल्कि आवश्यकता बन गयी है.

सद्दाम खान
अधिकारी
क्षेत्रीय कार्यालय, रतलाम

बड़ौदा मेधावी विद्यार्थी सम्मान समारोह आयोजित

दिनांक 02 अगस्त, 2021 को क्षेत्रीय कार्यालय, रायपुर द्वारा कथा - सम्राट मुंशी प्रेमचंद की जयंती के अवसर पर 'प्रेम चंद के साहित्य की प्रासंगिकता' विषय पर राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन किया गया. इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. श्रीमती शैल शर्मा, विभागाध्यक्ष (हिंदी विभाग), पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर उपस्थित थीं. इस अवसर पर बड़ौदा मेधावी विद्यार्थी सम्मान योजना के अंतर्गत पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर के शैक्षणिक सत्र 2019-20 में एम.ए.(हिन्दी) में द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थी श्री चंद्रशेखर को सम्मानित किया गया.

औपचारिक शिक्षा बनाम व्यावहारिक ज्ञान

शिक्षा शब्द सुनते ही हमारे ज़ेहन में अक्सर औपचारिक शिक्षा का ही ध्यान आता है जो प्राथमिक, माध्यमिक विद्यालयों, उच्च विद्यालयों और कॉलेजों में होती है. औपचारिक शिक्षा एक लंबी अवधि की सामान्य शिक्षा है जो एक व्यक्ति के पूरे जीवन के लिए नींव प्रदान करती है औपचारिक शिक्षा व्यक्तियों को प्रमाणपत्र के साथ योग्य बनाती है जिससे उन्हें समाज में विशिष्ट सामाजिक-आर्थिक स्थिति प्राप्त करने में मदद मिलती है. हालांकि, यह शिक्षा का एकमात्र रूप नहीं है. शिक्षा सीखने के लिए हमें एक व्यापक दृष्टिकोण अपनानी होती है. सीखना हर कदम पर होता है और ज्ञान की कोई सीमा नहीं है. प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी कार्य में एक प्रक्रिया को अनुभव करता है जो मन पर प्रभाव डालती है. जब ज्ञान की बात आती है, तो हमारे पास इसे प्राप्त करने के विभिन्न तरीके होते हैं. इनमें से कुछ सैद्धांतिक ज्ञान की श्रेणी में आते हैं और अन्य व्यावहारिक ज्ञान के अंतर्गत आते हैं. अक्सर औपचारिक शिक्षा से हमें अधिकतम सैद्धांतिक ज्ञान ही प्राप्त हो पाता है. सैद्धांतिक ज्ञान क्यों सिखाया जाता है? यह हमें यह समझने में मदद करता है कि एक तकनीक क्यों काम करती है जहां दूसरी विफल हो जाती है. यह हमें संपूर्ण दृष्टिकोण दिखाता है, हमारे लिए संदर्भ प्रदान करता है और कार्यनीति निर्धारित करने में सहायता करता है. अर्थात् सैद्धांतिक ज्ञान हमें ''क्यों'' के संबंध में सभी उत्तर प्रदान करता है जबकि व्यावहारिक ज्ञान हमें ''कैसे'' के बारे में जागरूक करता है. व्यावहारिक ज्ञान हमें वास्तविक समस्याओं से जूझकर और निरंतर अभ्यास करके प्राप्त करना होता है, यह अनुभव, आदर्शों, अंतर्ज्ञान, मूल्यों, रचनात्मक सोच, भावनाओं, कौशल और दृष्टिकोण से संबंधित है. औपचारिक शिक्षा और व्यावहारिक ज्ञान दोनों ही समान रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि जहां सिद्धांत हमें दूसरों के अनुभवों के बारे में उपयुक्त जानकारी प्रदान करता है वही व्यावहारिक ज्ञान हमें अपने स्वयं के अनुभव बनाने में मदद करता है.

औपचारिक शिक्षा तथ्य और कथन पर आधारित है. यह हमें बताता है कि क्यों कुछ सच है और समर्थित है. यह समझाता है कि ज्ञान किस बारे में है. सैद्धांतिक ज्ञान होना अत्यधिक आवश्यक है क्योंकि यह तथ्यों को अधिक स्पष्टता से समझने में मदद करता है. यह ज्ञान का एक महत्वपूर्ण पहलू है जो तथ्यों और सिद्धांतों की समझ पर अधिक ध्यान केंद्रित करता है, इसके विपरीत, वास्तविक जीवन की परिस्थितियों से ही व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त होता है. यह अवधारणाओं का कार्यान्वयन है. औपचारिक शिक्षा के साथ हम बैंकिंग जैसे किसी भी क्षेत्र में काम करने का विश्वास हासिल कर सकते हैं. लेकिन व्यावहारिक अनुभव के साथ हम ग्राहक प्रबंधन, निर्णय लेने आदि जैसे अपने कौशल को बढ़ा सकते हैं. कई बार शिक्षा कौशल आधारित और अभ्यास उन्मुख होती है. औपचारिक शिक्षा के माध्यम से प्राप्त सैद्धांतिक ज्ञान से हम तैरना या वाहन चलाना सीखने की कल्पना भी नहीं कर सकते. तैराकी सीखने के लिए हमें पानी में उतरना ही होगा और उसी प्रकार ड्राइविंग सीखने के लिए सड़क पर उतरना होगा. इसी तरह, सैद्धांतिक ज्ञान से हम किसी खेल के नियमों को जान सकते हैं और खेल में किस बिंदु पर क्या करना चाहिए ये भी समझ सकते हैं परंतु खेल में अच्छा प्रदर्शन नहीं कर सकते. अतः कौशल आधारित विषयों के सैद्धांतिक ज्ञान को अभ्यास द्वारा समर्थित करने की आवश्यकता है. व्यावहारिक ज्ञान हमें सटीक तकनीक प्राप्त करने में सहायता करता है जो हमारे काम के उपकरण बन जाते हैं. यह हमारे वास्तविक कार्यों के बहुत करीब है. आज इस प्रतिस्पर्धी दुनिया में अपनी जगह बनाए रखने के लिए व्यावहारिक ज्ञान और अनुप्रयोग कौशल आवश्यक हैं. जैसा कि महान वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन ने कहा था ''ज्ञान का एकमात्र स्रोत अनुभव है.'' अर्थात् औपचारिक शिक्षा के जरिए सैद्धांतिक ज्ञान प्राप्त करने का मूल्य तब बढ़ जाता है जब हम इसे व्यावहारिक उद्देश्यों के लिए लागू करने में सक्षम होते हैं.

इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता है कि किसी भी नौकरी के लिए अर्हता प्राप्त करने के लिए औपचारिक शिक्षा अनिवार्य है. बैंकिंग क्षेत्र में नौकरी करना अपने आप में इसका एक बहुत अच्छा उदाहरण है. औपचारिक शिक्षा द्वारा प्राप्त बुनियादी शैक्षिक योग्यता और उसके बाद परीक्षाओं को उत्तीर्ण करने के साथ, कोई निश्चित रूप से एक व्यवसाय सहयोगी या अधिकारी के रूप में बैंक में नियुक्ति सुनिश्चित कर सकता है. परंतु अंततः वास्तविक समय के परिदृश्यों और ग्राहकों को सेवा प्रदान करने में व्यावहारिक ज्ञान ही उसे बैंकिंग में चुनौतीपूर्ण भूमिका निभाने में मदद कर सकता है. लोगों के लिए शिक्षा का न्यूनतम स्तर होना महत्वपूर्ण है, खासकर यदि वे निम्नतम कार्य स्तर से ऊपर उठना चाहते हैं. अच्छे गणितीय कौशल के बिना

कोई व्यक्ति बजट को कैसे संतुलित कर सकता है या प्रबंधन कौशल के बिना कर्मचारियों का प्रबंधन कैसे कर सकता है? जैसे लेखाकार को लेखांकन में सैद्धांतिक ज्ञान प्राप्त करना बहुत महत्वपूर्ण है परंतु उन्हें व्यावहारिक कौशल की भी आवश्यकता होगी क्योंकि इसके बिना वे वित्तीय विवरणी तैयार करने और प्रस्तुत करने या खातों में किसी भी विसंगतियों की पहचान करने में सक्षम नहीं हो सकते हैं. कोई भी डिग्री या योग्यता आपको वास्तविक कार्यालय के वातावरण की परिस्थिति का अनुभव करने और कार्य संभालने से प्राप्त होने वाला आत्मविश्वास नहीं दे सकती है. कोई भी तकनीक या अनुकरण कभी भी उस व्यावहारिक अनुभव को प्रतिस्थापित नहीं कर सकता है जो वास्तविक स्थिति और व्यावहारिक ज्ञान का सामना करके प्राप्त किया जा सकता है. एक विमान उड़ाने का अनुभव पायलट द्वारा अभ्यास किए गए असंख्य सिमुलेशन की तकनीक से भिन्न होता है. लेकिन यह भी एक सिद्ध तथ्य है कि अनुभव रातों-रात प्राप्त नहीं किया जा सकता है. समय आने पर ही इसे हासिल किया जा सकता है.

जब हम अपने हाथों से कुछ करते हैं तो हम उसे बेहतर समझते हैं. व्यावहारिक कार्य अनुभवात्मक अधिगम को बढ़ावा देता है और साथ ही स्वयं सीखने की प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करता है. इस प्रकार, व्यावहारिक ज्ञान के कई लाभ हैं. अनुभव के माध्यम से सीखना सबसे कठिन और सर्वोत्तम है. क्योंकि अनुभव को केवल अर्जित किया जा सकता है. साथ ही यह याद रखना चाहिए कि सैद्धांतिक ज्ञान भी महत्वपूर्ण है. व्यावहारिक कार्य सिद्धांत का अनुप्रयोग है. सिद्धांत व्यावहारिक कार्य के लिए एक मजबूत आधार बनाता है. यह समझना महत्वपूर्ण है कि औपचारिक शिक्षा और व्यावहारिक अनुभव एक दूसरे के पूरक हैं. व्यक्ति का लक्ष्य सैद्धांतिक ज्ञान को लागू करने का तरीका खोजना है, चाहे सीखने का कोई भी रूप क्यों न हो. इसलिए सर्वोत्तम परिणामों के लिए सिद्धांत और व्यवहार के बीच संतुलन हासिल करना अनिवार्य है क्योंकि सिद्धांत और व्यवहार एक ही सिक्के के दो पहलू हैं. जैसा कि काल मार्क्स ने कहा है "सिद्धांत के बिना अभ्यास अंधा है, अभ्यास के बिना सिद्धांत निष्फल है." औपचारिक शिक्षा से प्राप्त सैद्धांतिक शिक्षा अच्छी है लेकिन उस ज्ञान का व्यावहारिक रूप में उपयोग न करना किसी काम का नहीं है. इसलिए व्यावहारिक रूप से ज्ञान का उपयोग करना बहुत महत्वपूर्ण है, अन्यथा सैद्धांतिक ज्ञान प्राप्त करने का कोई मतलब नहीं है. इसलिए सीखने का सही अनुभव पाने के लिए व्यक्ति को व्यावहारिक और सैद्धांतिक दोनों ज्ञान प्राप्त करना चाहिए.

जिसा मालियकल
वरिष्ठ प्रबंधक
बड़ौदा अकादमी, एर्णाकुलम

नराकास सम्मान

सूरत शहर क्षेत्र नराकास, सूरत द्वारा पुरस्कृत

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति बैंक, सूरत द्वारा वर्ष 2020-21 के लिए राजभाषा शील्ड पुरस्कार की घोषणा के अंतर्गत क्षेत्रीय कार्यालय, सूरत शहर को तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया. यह पुरस्कार उप क्षेत्रीय प्रमुख, सूरत शहर श्री नवीन गोखिया एवं प्रबंधक (राजभाषा) श्री प्रवीण शर्मा ने समिति के अध्यक्ष के कर-कमलों से प्राप्त किया.

भरूच क्षेत्र नराकास, अंकलेश्वर द्वारा पुरस्कृत

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति कार्यालय, अंकलेश्वर द्वारा वर्ष 2020-21 के लिए राजभाषा शील्ड पुरस्कार की घोषणा के अंतर्गत क्षेत्रीय कार्यालय, भरूच को द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया. यह पुरस्कार क्षेत्रीय प्रमुख श्री सचिन वर्मा एवं वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) श्री कार्तिक कुमार ने समिति के अध्यक्ष के कर-कमलों से प्राप्त किया.

अनुभव-अभिव्यक्ति

लाचारी

हैलो हैलो? कौन बोल रहा है? आवाज़ साफ न आने की वजह से मोबाइल पर बात नहीं हो पा रही थी. बार-बार फोन भी कट जा रहा था. रह-रह कर बुरे ख्याल आ रहे थे कि कौन इस वक़्त बार-बार फोन कर रहा है?

बस गुजरात-राजस्थान राजमार्ग पर सरपट दौड़ती चली जा रही थी. शाम के लगभग सात बजे थे और मैं अपनी मंजिल चंडीगढ़ पहुंचने के बारे में सोच रहा था ताकि मैं अपने बीमार पिताजी से जल्द से जल्द मिल सकूँ.

मेरी यात्रा अहमदाबाद से शुरू हुई. पिताजी से तीन चार दिन पहले ही मेरी बड़ी बहन के साथ लखनऊ से चंडीगढ़, मेरे छोटे भाई जो कि डॉक्टर है और उसका अपना खुद का हॉस्पिटल है, के हॉस्पिटल में इलाज के लिए गए हुए थे. मैं अहमदाबाद में अकेला ही रहता हूं. मेरी पत्नी और बच्चों ने लगभग दो महीने पहले पिताजी और माताजी की देखभाल के लिए लखनऊ में रहने का फैसला लिया था.

मेरी उसी दिन सुबह आठ बजे के करीब पिताजी से वीडियो कॉल पर बात हुई और उनसे बातचीत के दौरान वे ठीक-ठाक लगे और जब मैंने उनसे अपने आने के विषय में पूछा तो उन्होंने कहा कि अभी मैं ठीक हूं और अभी आने की जरूरत नहीं है. आना ही है तो अगले शनिवार को आओ जिससे तुम एक हफ्ता रुको और अपनी बड़ी बहन को थोड़ा कार्यमुक्त कर सको.

मैं भी आश्वस्त हो गया कि पिता जी की तबीयत ठीक है और घबराने की कोई बात नहीं है. उसके बाद मैं जल्दी से तैयार हो कर अपने ऑफिस के लिए निकल गया. ऑफिस पहुंच कर अपनी पत्नी, माँ और बच्चों से लखनऊ बात की और बताया की पिताजी ठीक हैं और आने वाले शनिवार को मैं उनसे चंडीगढ़ मिलने जाने का प्रोग्राम बना रहा हूं.

ऑफिस पहुंचने के बाद मैं बहुत व्यस्त हो गया और लंच के समय मुझे कुछ अच्छा नहीं लग रहा था. मैंने यूं ही अपनी बहन को फोन लगा दिया और बात करनी चाही. दीदी ने बातों-बातों में बताया कि आज पिताजी की तबीयत उतनी ठीक नहीं लग रही है और कुछ अच्छा भी नहीं लग रहा है.

उनसे बात करके मैंने तुरंत चंडीगढ़ जाने का निर्णय लिया और लगभग दिन के तीन बजे चंडीगढ़ के लिए चल दिया. ट्रेन में आरक्षण देखा तो बहुत निराशा हुई. मेरे साथियों ने बस से जाने की सलाह दी और अहमदाबाद से दिल्ली के लिए चलने वाली वॉल्वो बस में आरक्षण करवा दिया. जल्दी-जल्दी में मैंने अपना सामान उठाया और घर के लिए निकल गया. घर पहुंच कर कुछ कपड़े पैक किए और दिनेश भाई जो कि हमारे पूर्वपरिचित ऑटोवाले भाई हैं उनको फोन कर जल्दी अपने घर पहुंचने को कहा. दिनेश भाई ने मुझे अहमदाबाद बस अड्डे छोड़ने से पहले कुछ खाने-पीने की सामग्री ला कर दी और गुजरात ट्रांसपोर्ट के ऑफिस पहुंचा दिया.

कुछ ही समय में बस आ गयी और लगभग शाम के छः बजे बस अहमदाबाद से दिल्ली के लिए रवाना हुई. कुछ ही समय में बस ने रफ्तार पकड़ ली. बस को राजस्थान के उदयपुर, अजमेर, जयपुर होते हुए दिल्ली जाना था. मेरी बगल वाली सीट पर राजेंद्र मिश्र जी नामक व्यक्ति का आरक्षण था और वो भी आ गए. हम दोनों एक दूसरे से अंजान थे परन्तु कुछ ही देर में बातचीत शुरू हुई और एक दूसरे से खाना खाने का आग्रह कर खाना साझा करके खा लिया और दोनों अपनी-अपनी शयन सीट पर लेट गए. मिश्र जी ने अपने दोनों कानों मे हेडफोन लगा लिया और फोन से संगीत का आनंद लेना शुरू कर दिया. लेकिन मेरा मन किसी में नहीं लग रहा था. बार-बार मोबाइल का सिग्नल आ-जा रहा था. मैंने भी एक धार्मिक किताब निकाल ली और पढ़ने की कोशिश करने लगा लेकिन रोशनी कम होने की वजह से पढ़ने में कठिनाई हो रही थी.

थोड़ी ही देर में मेरे मोबाइल पर मेरी बहन का फोन आया परन्तु बात नहीं हो पा रही थी. कुछ देर में फिर से फोन आया तो बात हुई और पता चला की पापा की तबियत कुछ ठीक नहीं है और बिगड़ती जा रही है. इतना सुनने के बाद ही फोन कट गया और फोन से सिग्नल गायब हो गया. कुछ समय पश्चात सिग्नल आने के उपरांत फिर से फोन बज उठा और फोन आने और कट जाने का सिलसिला काफी समय तक चलता रहा.

कुछ ही समय में बस ऐसे इलाके में थी जहां फोन का सिग्नल नहीं मिल रहा था. अचानक हमारे बस ड्राइवर ने बस एक ढाबे के आगे लगा दी और सभी बस में बैठे सवारी बस से उतर कर रात के भोजन के लिए चल पड़े.

ना चाहते हुए भी मुझे बस से उतरना पड़ा और मैं फोन में सिग्नल आने का इंतज़ार कर रहा था. उसी बीच ड्राइवर को जल्दी से चलने के लिए अनुरोध करने हेतु मैं उसके पास गया. उसने कहा की आधा घंटा लगेगा और खाना खाने लगा.

थोड़ी देर बाद बस चल पड़ी और लगभग नौ बजे फिर से सिग्नल आया और फोन बज उठा. उधर से भाई ने बात की और पूछा कि मैं कहां तक पहुंचा? मैंने बताया कि मैं किसी ऐसी जगह पर हूं जो गुजरात के सिद्धपुर और राजस्थान के उदयपुर

के बीच में है. फोन पर इतनी ही बात हुई थी और फोन फिर से कट गया. कुछ समय पश्चात पुनः फोन घनघना उठा और इस बार मेरी बड़ी बहन ने रोते हुए मुझे जल्द से जल्द लखनऊ पहुंचने को कहा. इतना सुनते ही मेरे कदमों के नीचे से ज़मीन ही सरक गयी. मेरी समझ में आ चुका था कि अब मेरे पिताजी नहीं रहे. उसके बाद से मेरे फोन की घंटी बजती ही रही और मैं भी फोन करने में लग गया. भाई से बात कर के ये पता लगा कि वो पिता जी के शव के साथ वातानुकूलित एंब्यूलेंस से रात को लगभग ग्यारह बजे चंडीगढ़ से लखनऊ के लिए रवाना होगा.

मेरे लिए अब लखनऊ पहुंचना प्राथमिकता का विषय था एवं उस समय मेरा दिमाग काम नहीं कर रहा था. इसी बीच मेरे सह यात्री श्री मिश्र जी यह समझ चुके थे कि मेरे पिताजी का देहावसान हो चुका है और उन्होंने कहा कि अब आपको लखनऊ पहुंचने के लिए हवाई यात्रा का सहारा लेना पड़ेगा. उन्होंने मेरे लिए अपने मोबाइल से हवाई यात्रा हेतु अलग विमान सेवा प्रदान करने वाली कंपनियों की वेबसाइट पर जा कर टिकट तलाशनी शुरू की. उन्होंने उदयपुर, अजमेर एवं जयपुर से टिकट देखे और बताया कि केवल जयपुर से ही टिकट मिल सकती है. बाकी जगह से कोई भी विमान सेवा उपलब्ध नहीं है. जयपुर से केवल दो विमान सेवा उपलब्ध थी जिसमें एक सेवा सुबह 05 बजकर 55 मिनट पर एवं दूसरे दिन 10 बज कर 40 मिनट पर थी. हमनें अपनी सीट से उठ कर ड्राइवर से पूछा यह बस कितने बजे तक जयपुर पहुंचेगी. ड्राइवर ने बताया कि यह बस सुबह 07 बज कर 30 मिनट से पहले नहीं पहुंचेगी. इतना पता चलने के बाद मैंने मिश्र जी को 10 बज कर 40 मिनट वाली विमान सेवा बुक करने को कहा और अपना क्रेडिट कार्ड उनको देते हुए टिकट बुक करने के लिए विनंती की. उन्होंने मुझे टिकट बुक करके मेरे मोबाइल पर मैसेज भी भेज दिया एवं कुछ देर मुझे आराम करने की सलाह दी. इस समय लगभग रात के 11 बज चुके थे. अब तक मेरी समझ में आ चुका था कि सब कुछ खत्म हो चुका है और रात भर मैं अपने पिताजी के बारे में ही सोचता रहा. काश मैं एक दिन पहले चला गया होता...! काश मैं पापा की बात न मानते हुए पहले ही चला जाता! वगैरह वगैरह. . . पापा के साथ बिताया गया वक़्त याद आने लगा और धीरे-धीरे पूरी रात आंखों ही आंखों में कट गयी.

सुबह 04 बजे से फिर फोन पर बातें शुरू हुईं और सभी जगह पिताजी के देहांत की सूचना देनी शुरू की क्योंकि हम तीनों भाई-बहन घर से बाहर थे और सभी लोग लखनऊ के लिए यात्रा कर रहे थे और घर पर सिर्फ माताजी, मेरी पत्नी एवं मेरे बच्चे ही थे. माताजी को बताने की हिम्मत हम सभी नहीं कर पा रहे थे.

लगभग सुबह 7.30 बजे मैं जयपुर उतर गया जहां फोन से सूचित करने के उपरांत मेरे मित्र श्री सक्सेना जी मुझे लेने बस अड्डे पर पहुंच चुके थे. वह मुझे अपने साथ लेकर अपने आवास के लिए चल दिये और मैंने उनसे आग्रह किया कि वो मुझे विमान के समयानुसार हवाई अड्डे पहुंचा दें.

मेरे लिए एक-एक पल काटना मुश्किल हो रहा था. किसी तरह से मैं अपने आप को संभाल रहा था पर किसी जगह मन नहीं लग रहा था. थोड़ी देर बाद शिशिर ने मुझे एयरपोर्ट छोड़ दिया और मैंने फ्लाइट पकड़ ली और दिल्ली होते हुए लगभग दोपहर 2.40 बजे लखनऊ पहुंचा. जैसे-जैसे एयरपोर्ट से घर की तरफ बढ़ रहा था. वैसे-वैसे मेरे दिल की धड़कन बढ़ रही थी. उधर मेरे भाई, दीदी एवं पिताजी का शव मुझसे पहले ही लखनऊ, हमारे घर पहुंच चुका था.

हमारे घर के बाहर काफी भीड़ जमा थी और जैसे ही मैं अपनी माँ से मिला, अपने जज़्बातों पर काबू नहीं रख पाया और सारी हिम्मत टूट कर बिखर गयी और सभी लोग रो पड़े.

सदा सुरक्षित रहने का एहसास टूट चुका था और हम सब मृत्यु के आगे लाचार और असहाय महसूस कर रहे थे. समय का ऐसा चक्र चला कि इतनी आधुनिक व्यवस्थाओं के होते हुए भी मैं समय से पिताजी के पास नहीं पहुंच सका और पूरी रात ऐसे कटी कि जिसे कभी भुलाया नहीं जा सकता.

इस चौबीस घंटों की यात्रा को कभी भी भूल नहीं पाऊंगा. इस दौरान मुझे ये महसूस हुआ कि माता-पिता की कमी कोई और पूरा नहीं कर सकता. हमें हमेशा उनका आदर करते हुए उनका ध्यान रखना चाहिए और उम्र के आखरी पड़ाव में हमेशा उनके साथ रहने की कोशिश करनी चाहिए और अपने कर्तव्य के रूप में उनकी इच्छाओं को जहां तक हो सके पूरा करना चाहिए.

अमित कुमार श्रीवास्तव
वरिष्ठ प्रबंधक,
वाराणसी क्षेत्र

अपने ज्ञान को परखिए उत्तर (पृष्ठ सं. 35)

1.	घ	8.	ख	15.	क
2.	ग	9.	क	16.	घ
3.	ख	10.	ग	17.	घ
4.	क	11.	ख	18.	क
5.	घ	12.	ग	19.	ग
6.	क	13.	घ	20.	क
7.	घ	14.	ख		

हिंदी दिवस

राजभाषा हिन्दी के प्रयोग में निरंतर बढ़ोत्तरी सुनिश्चित करते हुए इस दिशा में स्टाफ-सदस्यों को प्रोत्साहित करने के लिए बैंक द्वारा कई पहलें की जाती रही हैं. इसी क्रम में वर्ष 2021 में बैंक के विभिन्न कार्यालयों में हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन धूम-धाम से किया गया. हम अपने पाठकों के लिए देश भर के कार्यालयों में आयोजित हिन्दी दिवस समारोहों की प्रमुख झलकियां यहां प्रस्तुत कर रहे हैं. - संपादक

कॉर्पोरेट कार्यालय, मुंबई

हिंदी दिवस 2021 के अवसर पर आयोजित हिंदी माह के अंतर्गत विभिन्न कार्यक्रमों के तहत कॉर्पोरेट कार्यालय में कार्यरत सहायक संवर्ग के कर्मचारियों (सब स्टाफ) के लिए 'अपना बैंक अपना गौरव' प्रतियोगिता का आयोजन किया गया.

अंचल कार्यालय, मुंबई

हिन्दी दिवस, 2021 के अवसर पर अंचल कार्यालय, मुंबई द्वारा कार्यपालकों हेतु नोटिंग एवं ड्राफ्टिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. इस प्रतियोगिता में नेटवर्क उप महाप्रबंधक-2 श्रीमती विजया राठोड, सहायक महाप्रबंधक श्रीमती लिपिका पाढ़ी एवं अंचल कार्यालय के अन्य सभी कार्यपालकों ने प्रतिभागिता की.

प्रधान कार्यालय, बड़ौदा

हिन्दी दिवस 2021 के अवसर पर आयोजित हिन्दी माह के अंतर्गत विभिन्न कार्यक्रमों के तहत दिनांक 17 अगस्त, 2021 को वेतनमान 'I' से 'III' तक के अधिकारियों के लिए ऑनलाइन वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. इस अवसर पर निर्णायक मंडल के रूप में सहायक महाप्रबंधक (डिजिटल बैंकिंग) श्री अनुराग अवस्थी, मुख्य प्रबंधक (मासंप्र) श्री आचारी बी. बलगा एवं मुख्य प्रबंधक (राजभाषा एवं संसदीय समिति) डॉ. कियाम बेमबेम देवी शामिल रहीं. कार्यक्रम का उद्घाटन प्रमुख (राजभाषा एवं संसदीय समिति) श्री संजय सिंह ने किया.

एपेक्स अकादमी, गांधीनगर

दिनांक 14 सितम्बर, 2021 को हिंदी दिवस के अवसर बड़ौदा एपेक्स अकादमी, गांधीनगर में हिंदी की महत्ता पर व्याख्यान देते हुए प्रधानाचार्य श्री दीपंकर गुहा.

अंचल कार्यालय, हैदराबाद

दिनांक 14 सितंबर, 2021 को अंचल कार्यालय, हैदराबाद एवं मेट्रो क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा संयुक्त रूप से हिंदी दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया गया. इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में भाषाविद् एवं राष्ट्रपति द्वारा पुरस्कृत डॉ. एम वेंकेटेश्वर उपस्थित रहे. कार्यक्रम की अध्यक्षता अंचल प्रमुख श्री मनमोहन गुप्ता ने की एवं धन्यवाद ज्ञापन उप अंचल प्रमुख श्री के विनोद बाबू ने किया.

हिंदी दिवस

खुदरा देयताएं विभाग, नई दिल्ली

खुदरा देयताएं विभाग में उप महाप्रबंधक श्री वीरेंद्र सरदाना की अध्यक्षता में दिनांक 14 सितम्बर, 2021 को हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन किया गया. इस अवसर पर उप महाप्रबंधक ने सभी स्टाफ सदस्यों को संबोधित किया एवं विभाग द्वारा आयोजित की गई प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया.

अंचल कार्यालय, बेंगलूरु

दिनांक 23 सितंबर, 2021 को अंचल कार्यालय, बेंगलूरु में हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन किया गया. इस अवसर पर अंचल प्रमुख श्री सुधाकर डी नायक, महाप्रबंधक श्री बी शिवराम, उप अंचल प्रमुख श्री मुरलीकृष्ण.ए., नेटवर्क उप महाप्रबंधक, सभी क्षेत्रीय प्रमुख एवं अंचल कार्यालय के स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे.

अंचल कार्यालय, लखनऊ

दिनांक 14 सितंबर, 2021 को अंचल कार्यालय, लखनऊ द्वारा हिन्दी दिवस का आयोजन अंचल प्रमुख श्री ब्रजेश कुमार सिंह की अध्यक्षता में किया गया. इस अवसर पर लखनऊ अंचल के उप अंचल प्रमुख श्री अशोक कुमार सिंह, नेटवर्क उप महाप्रबंधकगण, श्री रंजीत कुमार झा, श्री टी.पी.सिंह, श्री प्रतीक अग्निहोत्री, एसएलबीसी उप महाप्रबंधक श्री बलबीर सिंह लूथरा, सहायक महाप्रबंधक, (मानव संसाधन विभाग) श्री गिरीश कुमार व सभी स्टाफ़ सदस्यगण उपस्थित रहे.

अंचल कार्यालय, भोपाल

दिनांक 14 सितंबर, 2021 को अंचल कार्यालय एवं क्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल द्वारा संयुक्त रूप से अंचल प्रमुख, श्री गिरीश सी. डालाकोटी की अध्यक्षता में हिन्दी दिवस समारोह 2021 का आयोजन किया गया. इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में दुष्यंत कुमार, पांडुलिपि संग्रहालय, भोपाल के निदेशक श्री राजुरकर राज उपस्थित थे.

अंचल कार्यालय, चेन्नई

दिनांक 17 सितंबर, 2021 को अंचल कार्यालय, चेन्नई में हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन किया गया जिसमें अंचल प्रमुख श्री एस. रंगराजन एवं नेटवर्क उप महाप्रबंधक श्री के.वी. चलपति नायडू सहित अन्य कार्यपालकगण उपस्थित थे. उन्होंने हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में विभाग द्वारा आयोजित की गई प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया.

अंचल कार्यालय, मंगलूरु

अंचल कार्यालय, मंगलूरु, क्षेत्रीय कार्यालय, मंगलूरु शहर एवं क्षेत्रीय कार्यालय, मंगलूरु जिला के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 14 सितंबर, 2021 को हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन अंचल प्रमुख श्रीमती गायत्री आर की अध्यक्षता में किया गया. इस अवसर पर उप अंचल प्रमुख श्री गोपालकृष्ण आर, नेटवर्क डीजीएम श्री विनय गुप्ता, मंगलूरु शहर के क्षेत्रीय प्रमुख श्री संजय वालि एवं मंगलूरु जिला के क्षेत्रीय प्रमुख श्री देवीप्रसाद शेट्टी उपस्थित रहे.

हिंदी दिवस

अंचल कार्यालय, मेरठ

दिनांक 14 सितंबर, 2021 को अंचल कार्यालय, मेरठ में हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन किया गया. कार्यक्रम की अध्यक्षता अंचल प्रमुख श्री अमर नाथ गुप्ता ने की. इस अवसर पर 5 प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया.

अंचल कार्यालय, पुणे

दिनांक 14 सितंबर, 2021 को अंचल कार्यालय, पुणे द्वारा हिंदी दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया गया. इस अवसर पर अंचल प्रमुख श्री मनीष कौड़ा ने सभी स्टाफ सदस्यों को संबोधित किया और विभिन्न प्रतियोगिताओं के स्टाफ सदस्यों को प्रमाणपत्र देकर सम्मानित किया.

अंचल कार्यालय, बड़ौदा

दिनांक 14 सितंबर, 2021 को अंचल कार्यालय, बड़ौदा द्वारा हिन्दी दिवस के अवसर पर पूरे अंचल में हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया. इस अवसर पर सहायक से लेकर कार्यपालकों तक के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया. अंचल द्वारा आयोजित हिन्दी दिवस समारोह में सभी विजेता प्रतिभागियों को अंचल प्रमुख श्री राजेश कुमार सिंह ने पुरस्कृत किया.

अंचल कार्यालय, कोलकाता

दिनांक 14 सितंबर 2021 को हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में अंचल कार्यालय, कोलकाता द्वारा अंचल प्रमुख श्री देबब्रत दास, उप अंचल प्रमुख श्री पी.के.दास, उप महाप्रबंधक नेटवर्क श्री आलोक कुमार सिन्हा की उपस्थिति में अंचल के समस्त स्टाफ सदस्यों हेतु ऑनलाइन वेबिनार का आयोजन किया गया. इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ. बरुण कुमार, निदेशक, केंद्रीय प्रशिक्षण संस्थान, नई दिल्ली से जुड़े.

अंचल कार्यालय, एर्णाकुलम

दिनांक 01 अक्तूबर, 2021 को अंचल कार्यालय, एर्णाकुलम में अंचल प्रमुख श्री के वेंकटेसन की अध्यक्षता में हिंदी दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें उप अंचल प्रमुख श्री जियाद रहमान, उप महाप्रबंधक (नेटवर्क) श्री नाग सुब्रह्मण्यम मंडवा विशेष रूप से उपस्थित थे. इस अवसर पर अंचल द्वारा हिन्दी दिवस के अवसर पर आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया.

अंचल कार्यालय, जयपुर

दिनांक 14 सितंबर, 2021 को अंचल कार्यालय, जयपुर एवं क्षेत्रीय कार्यालय, जयपुर द्वारा संयुक्त रूप से अंचल प्रमुख श्री महेन्द्र सिंह महनोत की अध्यक्षता एवं जयपुर के प्रख्यात साहित्यकार श्री ईशमधु तलवार की विशेष उपस्थिति में हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन किया गया. इस अवसर पर हिन्दी में उत्कृष्ट कार्य करने वाले विभागों को सम्मानित किया गया तथा उप अंचल प्रमुख श्री आर सी यादव, नेटवर्क उप महाप्रबंधक श्री प्रदीप कुमार बाफना, श्री बी एल मीना ने भी अपने विचार व्यक्त किए.

हिंदी दिवस

राष्ट्रीय साझा सेवा केंद्र, गिफ्ट सिटी, गांधीनगर

दिनांक 18 सितंबर, 2021 को राष्ट्रीय साझा सेवा केंद्र, गिफ्ट सिटी, गांधीनगर द्वारा हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया एवं हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत भी किया गया. कार्यक्रम की अध्यक्षता सहायक महाप्रबंधक (राष्ट्रीय साझा सेवा केंद्र) कैप्टन हरकमल सिंह ने की.

अंचल कार्यालय, अहमदाबाद

अंचल कार्यालय, अहमदाबाद द्वारा महाप्रबन्धक श्री एम.एम.बंसल की अध्यक्षता में दिनांक 29 सितंबर, 2021 को हिन्दी दिवस मनाया गया. इस अवसर पर महाप्रबन्धक एवं उप महाप्रबन्धकों द्वारा विजेता प्रतिभागियों को प्रशस्ति-पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया.

अंचल कार्यालय, राजकोट

दिनांक 14 सितंबर, 2021 को अंचल कार्यालय, राजकोट में अंचल प्रमुख श्री विजय कुमार बसेठा, नेटवर्क उप महाप्रबंधक श्री नरेन्द्र सिंह, उप अंचल प्रमुख श्री वाय एस ठाकुर की उपस्थिति में हिन्दी दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया गया.

अंचल कार्यालय, पटना

हिन्दी दिवस, 2021 के अवसर पर अंचल कार्यालय, पटना द्वारा हिंदी की महत्ता विषय पर आयोजित कार्यक्रम में व्याख्यान देते हुए अंचल प्रमुख श्री संजीव मेनन एवं उप अंचल प्रमुख श्री संजीव चौधरी.

अंचल कार्यालय, चण्डीगढ़

दिनांक 14 सितंबर, 2021 को अंचल कार्यालय, चण्डीगढ़ द्वारा एमएस टीम्स के माध्यम से हिन्दी दिवस का आयोजन महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख श्री विमल कुमार नेगी की अध्यक्षता में किया गया. इस अवसर पर उप अंचल प्रमुख श्री सुरेश गजेंद्रन, उप महाप्रबंधक (नेटवर्क) श्री बी. आर. धीमान, सभी क्षेत्रीय प्रमुख तथा अन्य स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे.

परिवेश

बदलते गांव

हमारा भारत गांवों का देश है. यहां की अधिकांश जनसंख्या गांवों में ही निवास करती है. आज भी शहरों की अपेक्षा गांवों में प्राकृतिक सुंदरता अधिक है. वहां प्रकृति का वास्तविक रूप देखने को मिलता है. जब भी गांव की बात चलती है, तो एक शांत, सहज एवं सादगीपूर्ण वातावरण का आभास मन में होता है. हरे-भरे खेत, हल जोतते किसान, बतियाते बुजुर्गों के दृश्य साकार होने लगते हैं. गांवों की सुन्दरता और वहां का प्राकृतिक वातावरण सहज ही किसी को भी अपनी ओर आकर्षित कर लेता है. शहरों के जन्मदाता भी गांव ही हैं. यह सत्य है कि मानव का आरम्भिक जीवनकाल जंगलों और पर्वतों में बीता. बाद में वह समूह में रहने लगा और जहां वे लोग रहने लगे वहीं आस-पास कृषि आदि कार्य करने लगे. इस तरह गांवों का अस्तित्व शुरू हुआ पर हकीकत यह है कि गांव अब बदल गए हैं. आधुनिक तकनीक और जीवन-शैली की धमक वहां साफ सुनाई देने लगी है. भारत की अर्थव्यवस्था में गांवों के कुटीर उद्योग, पशुधन, वन, मौसमी फल एवं सब्जियां इत्यादि के योगदान को अनदेखा नहीं किया जा सकता है.

परिवर्तन प्रकृति का नियम है और यही तथ्य गांव के परिप्रेक्ष्य में भी लागू होता है. शहरों के साथ-साथ गांव भी बदलाव की ओर अपने कदम बढ़ा रहे हैं. पुराने समय के गांवों में पक्की सड़कें नहीं होती थीं. जो रास्ते होते थे वो कच्चे और खस्ता हाल होते थे जिससे गांव से शहर की ओर जाने में कठिनाई का सामना करना पड़ता था और किसान परेशान भी होता था. लेकिन जब से भारत के गांवों में पक्की सड़कों का निर्माण शुरू हुआ है तब से गांव के लोग सुविधापूर्वक गांव से शहर की ओर आ-जा सकते हैं.

पहले केवल शहरों में टीवी, इंटरनेट जैसी सुविधाएं होती थी लेकिन विगत कुछ सालों के अंदर गांव के लोग भी इन सुविधाओं का लाभ उठा रहे हैं. गांवों में टीवी जैसे साधनों के आगमन का सकारात्मक पहलू देखें, तो हम पाएंगे कि इस तरह के साधनों ने सूचना क्रांति के इस दौर में बहुत से महत्त्वपूर्ण कार्य किए हैं. आज टीवी के माध्यम से ग्रामीण लोगों को विश्व की किसी भी घटना के दृश्य सहित नवीनतम जानकारी प्राप्त हो जाती है. टीवी और शिक्षा के प्रसार से ही ग्रामीण जनता हर क्षेत्र में पहले से अधिक जागरूक हुई है. अब गांव के लोग भी शहरी लोगों की तरह डीटीएच और सेट टॉप बॉक्स लगाकर टीवी में फिल्में देख रहे हैं. इतना ही नहीं मोबाइल पर इंटरनेट चलाने की जागररूकता भी ग्रामीण क्षेत्रों में पिछले कुछ वर्षों में बढ़ी है.

इन सभी कारणों से ही आज किसान की छवि प्रगतिशील किसान में परिवर्तित हो रही है. शिक्षा के क्षेत्र में भी गांवों में आश्चर्यजनक रूप से प्रगति हुई है. आज ग्रामीण क्षेत्रों में अनेक इंटरमीडिएट और डिग्री कॉलेज मौजूद हैं. अनेक संस्थाएं एवं ट्रस्ट भी ग्रामीण इलाकों में आधुनिक सुविधाओं वाले स्कूल खोल रहे हैं जिससे ग्रामीण इलाकों में शिक्षा के क्षेत्र में एक बड़ा परिवर्तन हुआ है.

यह मानना होगा कि आज गांवों में शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ी है और पहले की अपेक्षा अधिक संख्या में ग्रामीण विद्यार्थी अपना कौशल दिखा रहे हैं. पहले गांव को मिट्टी के कच्चे मकानों और झोपड़ियों का पर्याय माना जाता था. लेकिन आज गांवों में ईंट और सीमेंट के पक्के मकान मौजूद हैं.

अब ग्रामीणों के पास परिवहन के सभी आधुनिकतम साधन जैसे स्कूटर, मोटरसाइकिल और कारें उपलब्ध हैं. पहले गांव की गलियों से अगर कोई कार गुजर जाती थी तो उसे देखने के लिए बच्चों की भीड़ जुट जाती थी लेकिन आज गांवों में परिवहन के ये आधुनिकतम साधन किसी आश्चर्य के रूप में नहीं देखे जाते हैं.

पहले किसान खेती के लिए पुरानी तकनीक और पुराने औजारों का ही प्रयोग करते थे. लेकिन आज किसान नवीनतम तकनीक और औजारों को अपना रहे हैं. वे कृषि के क्षेत्र में दिन प्रति दिन हो रहे नवीनतम शोध कार्यों से भी भली-भांति परिचित हैं और आवश्यकता पड़ने पर इन्हें अपना भी रहे हैं. इन सभी कारणों से आज फसल की पैदावार में पहले की अपेक्षा बढ़ोतरी हुई है. आज किसानों के पास नई-नई नस्लों की गायें और भैंसें मौजूद हैं, जो अधिक दूध तो देती ही हैं, साथ ही इनमें रोग प्रतिरोधक क्षमता भी अधिक है. आज किसानों को पेड़-पौधों, पशुओं से संबंधित विभिन्न रोगों की जानकारी भी है, जिससे वे समय रहते इनका उपचार करा सकते हैं.

आज गांव और शहर के बीच की दूरी कम होती जा रही है. गांव छोटे-छोटे शहरों में बदलते जा रहे हैं. लेकिन हमें कोशिश करनी होगी कि विकास की इस तीव्र प्रक्रिया में गांवों की आत्मा नष्ट न होने पाए, तभी गांव से जुड़ी सुखद अनुभूतियां जिंदा रह पाएंगीं .

रामू तिवारी
प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय, फ़तेहपुर

भाषा बहता नीर

क्र.	हिंदी	तेलुगु	तमिल	मलयालम
1	कृपया मेरी मदद कीजिये	दयचेसि सहायं चेयंडि	तयवुचेय्तु ऐऩ्क्कु उतवुङ्कळ्	दयवायि ऐन्ने सहायिक्कू
2	मुझे अपनी पुस्तक दिखाओ	नी पुस्तकं नाकु चूपिंचु	उङ्कळ् पुत्तकत्तैक् काट्टुङ्कळ्	एन्ने तांग़लुडे पुस्तकं काणिक्कू
3	पुस्तकालय में बातचीत मत करो	पुस्ताकलयम्लो माट्लाडकंडि	नूलकत्तिल् पेस वेण्टाम्.	लैब्ररियिल् संसारिक्कन पाडिल्ला
4	कृपया मेरे साथ मत चलिए	दयचेसि नातो वेल्लावद्दु	तयवुचेय्तु ऐन्नुडन् चेल्ल वेण्टाम्	दयवायि ऐन्नोटप्पं वररुत्.
5	कृपया लाल कलम से न लिखें	दयचेसि रुपु कलमुतो रायवद्दु	तयवुचेय्तु चिवप्पु पेऩावाल् ऐळुद वेण्टाम्	दयवायि चुवन्न पेन कोण्ट् ऐळुतरुत्
6	बच्चों को पार्क जाने दो	पिल्ललनु पार्कुकु वेल्लिनिव्वंडि	कुळन्तैकळै पूङ्काविन्कु चेल्ल विटुङ्कळ्	कुट्टिकळ पार्क्किल् पोकान् अनुवदिक्कु
7	इस कलम को बैग में रखो	ई कलमुनु संचिलो उंचंडि	इन्त पेऩावै पैयिल् वैक्कवुम्	ई पेन बागिल् वैयिक्कू
8	अपनी साइकल को ग्राउंड से थोड़ा दूर खड़ी करो	मी वाहनन्नि ई नेल नुंडि कद्दिगा दूरम उंचंडि	उङ्कळ् साइकिलै तरैयिल् इरुन्तु चन्तु निरुत्तुङ्कळ्	तान्गळुटे साइकल ग्राउंडिल निन्न् कुरच्छ दूरम् पार्क्क चेय्युक
9	शाम को मुझसे बात कर लेना	सायंत्रं नातो माट्लाडंडि	मालैयिल् ऐन्निडम् पेसुङ्कळ्	वैकुन्नेरं ऐन्नोट् संसारिक्कू
10	अपने बड़ों का आदर करो	मी पद्देलनु गौरविंचंडि	परियवेर्कळै मतिक्कवुम्	निङ्ङळुटे मुतिर्न्नवर बहुमानिक्कु
11	आप कमरे में जाकर सो जाइए	मी गदिकि वेल्लि पडुकोंडि	उङ्कळ् अरैक्कुच् चेन्नु तूङ्कुङ्कळ्	तान्गळ मुऱियिल् पोयि उरन्नु
12	आप इधर ठहरिए मैं अभी आता हूं	नुव्वु इक्कडा उंडु नेनु इप्पुडे वसताणु	नींगल् इमेये इरुंगल्, नान् इप्पोतु वरुकिरेन्	तान्गळ इविट निल्क्क ञान् उडने वराम्
13	मैं अभी स्कूल जा रहा हूं	नेनु इप्पुडु पाठशालकु वेलतुननाणु	नान् इप्पोतु पळ्ळिक्कु पोय्कोन्डिरुक्किरेन्	ञान् इप्पोळ् स्कूळिल् पोकुकयानु
14	रात को सोने से पहले दवाई ले लेना	रात्रि पडुकुने मुंदु मन्धुलु वेस्कोंडी	इरविल् तूमुवतन्कु मुन् मरुन्तु उट्कोळ्वम्	रात्रि उरङ्ङुन्नतिनुमुम्प् मरुन् कळिक्कु
15	दोबारा जरूर आइएगा	खच्चितंगा मल्ली रंडि	निच्चयमाक मीण्डुम् वरवुम्	तीर्च्चयायुं वीण्टुं वरुक

आइये ! सीखें भारतीय भाषाएं

क्र.	कन्नड	गुजराती	बांगला	मराठी
1	दयविट्टु ननग सहाय माडि	महेरबानी करी मने मदद करो	दया करे आमाके साहाय्य करुन	कृपया माझी मदत करा
2	निम्म पुस्तकवन्नु ननग तोरिसि	मने तमारुं पुस्तक बतावो	आमाके आपनार बइ देखान	मला तुमची पुस्तक दाखवा
3	ग्रंथालयदल्लि मातनाडबेडि	लाइब्रेरीमां वात न करो	लाइब्रेरिते कथा बलबेन ना.	वाचनालयात बोलू नका
4	दयविट्टु नन्न जत बरबेडि	महेरबानी करीने मारी साथे न आवो	दया करे आमार साथे याबेन ना	कृपया माझ्याबरोबर येऊ नका
5	दयविट्टु कपु पन्निनिंद बरयबेडि	महेरबानी करीने लाल पेनथी लखशो नहीं	दया करे लाल कलम दिये लिखबेन ना	कृपया लाल पेनाने लिहू नका
6	मक्कळन्नु उद्यानक्क होगलु बिडि	बाळकोने पार्कमां जवा दो	बाच्चादेर पार्के येते दिन	मुलांना उद्यानात जाऊ द्या
7	ई पेन्नन्नु चीलदल्लि इडि	आ पेनने बेगमां मूको	एइ कलमटि ब्यागे राखुन	हे पेन बॅगेत ठेवा
8	निन्न सैकलन्नु मैदानदिंद स्वल्प दूर निल्लिसि	तमारी साइकलने ग्राउंडथी थोड़ी दूर पार्क करो	आपनार साइकेलटि माठ थेके किछुटा दूरे दार कोरान	आपली सायकल मैदानापासून थोड्या दूर पार्क करा
9	संज नन्नंदिग मातनाडि	सांजे मारी साथे वात करजो	सन्ध्याय आमार साथे कथा बले नेबेन	संध्याकाळी माझ्याशी बोला
10	निम्म हिरियरन्नु गौरविसि	तमारा वडीलोनो आदर करो	आपनार बड़देर सम्मान करुन	आपल्या ज्येष्ठांचा आदर करा
11	नीवु कोणेगे होगि मलगिकोळ्ळि	तमे रूममां जईने सूई जाओ	आपनि रुमे गिये घुमान	तुम्ही खोलीत जाऊन झोपा
12	नीवु इल्ले इरि नानु ईगले बरुत्तेन	तमे अहीं रहो हुं हमना आवुं छुं	आपनि एखाने दारान आमि एखुनी आसछि	तुम्ही इथेच थांब मी लगेच येतो
13	नानु ईग शालेगे होगुत्तिद्देने	हुं हमना स्कूले जउं छुं	आमि एखन स्कुले याच्छि	मी आता शाळेत जात आहे
14	रात्रि मलगुव मुन्न औषधि तगदुकोळ्ळि	रात्रे सूता पहेला दवा लई लेजो	राते घुमानोर आगे ओषुध खेये नियो	रात्री झोपण्यापूर्वी औषधे घ्या
15	खंडितवागियू मत्त बन्नि	फरीथी जरूर आवजो	अबसई आबार आसबेन	पुन्हा नक्की या

केदारनाथः एक अलौकिक धर्मस्थली

प्रारम्भ से ही मुझे यात्रा करने का बहुत शौक था परंतु पहले शिक्षा प्राप्त करने एवं बाद में नौकरी में व्यस्तता के कारण कभी मौका ही नहीं मिला. मई 2016 में आईबीपीएस की परीक्षा का अंतरिम परिणाम आया जिसमें मैं चयनित हुआ परंतु नियुक्ति में अभी समय था. फिर मैंने एक योजना बनाई कि नियुक्ति मिलने से पहले कहीं भ्रमण किया जाए और मैंने यात्रा स्थल के रूप में देवभूमि उत्तराखंड के केदारनाथ एवं बद्रीनाथ धाम को चुना.

फिर मैंने अपने एक मित्र के साथ यात्रा प्रारम्भ करने की तिथि निर्धारित की एवं साथ ले जाने के लिए सभी आवश्यक वस्तुओं की सूची तैयार की. इस यात्रा को लेकर मैं बहुत उत्सुक था. योजना स्वरूप मैं वर्ष 2016 के जून माह में अपने एक मित्र के साथ अलवर (राजस्थान) से अपनी मोटरसाइकिल से केदारनाथ धाम के लिए यात्रा शुरू की. दिल्ली, मेरठ और रुड़की के रास्ते होते हुए मैं रात को करीब 10:00 बजे हरिद्वार पहुंचा. हरिद्वार शहर में प्रवेश करते ही वहां एक अलग सी सुगंध का एहसास हुआ. बहती हुई गंगा जी में नदी के किनारे बने होटलों व भवनों की लाइटों की रोशनी जब गंगा नदी के पानी में पड़ रही थी तो वह बहुत ही अद्भुत व सुन्दर नजारा था. हरिद्वार पहुंचते-पहुंचते मैं लगभग 400 किलोमीटर की यात्रा कर चुका था. होटल की बुकिंग मैंने पूर्व में ही कर ली थी और खाना भी हमने रुड़की के पास एक होटल में खा लिया था इसलिए अब बस सीधा होटल तक पहुंचना था. होटल हमने 'हर की पौड़ी' के पास ही लिया था. हम होटल पहुंच गए. हम बहुत अधिक थक गए थे इसलिए बेड पर जाते ही नींद आ गयी और सीधे सुबह आंख खुली. 14 जून को सुबह जगने के बाद हम लोग गंगा जी में स्नान करने के लिए 'हर की पौड़ी' घाट पर चले गए और वहां जाकर स्नान किया. जून का महीना होने के बावजूद भी जैसे ही हमने नहाने के लिए गंगा जी में प्रवेश किया तो हम सभी सर्दी के मारे कांपने लगे और यही हाल हमारे साथी का भी था परंतु स्नान तो करना ही था. यात्रा अभी बहुत लंबी करनी थी इसलिए स्नान करते ही बिना विलंब किए होटल आ गए और वहां से अपना सामान पैक करने के बाद केदारनाथ धाम के लिए रवाना हो गए. करीब 25 किलोमीटर के बाद ऋषिकेश पहुंचकर हमने जलपान किया, तब तक 10:00 बज गए थे. अब हम बड़े उत्साह के साथ केदारनाथ के लिए रवाना हो गए.

ऋषिकेश से आगे का रास्ता बहुत ही सुंदर था, प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर पहाड़ी रास्ता और नीचे बहती हुई गंगा जी मानो लग रहा था कि हम कोई ख्वाब देख रहे हैं. रास्ता पहाड़ी होने के साथ घुमावदार भी था इसलिए मेरी बाइक बहुत ही धीमे चल रही थी. ऋषिकेश से केदारनाथ की दूरी लगभग 200 कि.मी. थी तो मेरा अनुमान था कि मैं इसे 6 घंटे में पूरा कर लूंगा और शाम के 4:00 बजे तक केदारनाथ तक पहुंच जाऊंगा परंतु जब

रास्ता तय करने लगा तो हमें देवप्रयाग पहुंचते-पहुंचते ही 2:00 बज गए थे जोकि ऋषिकेश से मात्र 75 कि.मी. की दूरी पर था. वहां पहुंचकर हमने सड़क के किनारे वाले होटल पर चाय पी और 10-15 मिनिट वहां रुककर रवाना हो गए. फिर थोड़ी चिंता होने लगी कि आज तो शायद नहीं पहुंच पाएंगे. पहाड़ी रास्ता होने के कारण बाइक को तेज गति से नहीं चला सकते थे फिर भी मैंने थोड़ी गति बढ़ाई और दोपहर 3:00 बजे तक हम श्रीनगर पहुंच गए थे जो देवप्रयाग से 35 कि.मी. की दूरी पर था. वहां हम बिना रुके आगे बढ़ गए और शाम 4:00 बजे तक हम रुद्रप्रयाग पहुंच गए जोकि श्रीनगर से 34 कि.मी. की दूरी पर था. यहां पहुंचते-पहुंचते मैं यह समझ गया था कि आज गौरीकुण्ड तक नहीं पहुंचा जा सकता था, फिर भी मेरा प्रयास यह था कि उजाला रहते जितनी दूरी तय की जा सके उतनी कर लूं. एक घंटे चलने के बाद मैं गुप्तकाशी पहुंचा जोकि रुद्रप्रयाग से लगभग 39 कि.मी.की दूरी पर था. वहां पहुंच कर हम थोड़ी देर आराम करने के उद्देश्य से सड़क किनारे ही एक चाय की दुकान पर रुके और चाय-पानी पिया और आगे के रास्ते के बारे में जानकारी ली. अब शाम के 5:30 बज चुके थे. पहाड़ी इलाका होने और बादल होने की वजह से अंधेरा होने लगा था. लग रहा था जैसे बारिश होने वाली है, इसी वजह से हमने वहीं (गुप्तकाशी) पर रुकने का फैसला किया. फिर हम वहां एक लॉज में कमरा लेकर रुक गए, निरंतर पूरे दिन की यात्रा की वजह से हम बहुत थक गए थे. हम कमरे में गए और अपना बैग रखा और थोड़ी देर आराम करने के बाद खाना खाने के लिए पास के ही एक रेस्टोरेन्ट में चले गए थे क्योंकि हमें लॉज वाले ने बता दिया था कि यहां सब कुछ जल्दी ही बंद हो जाता है इसलिए खाना जल्दी ही खा लेना. खाना खाने के बाद हम अपने कमरे में आ गए थे. फिर थोड़ी देर बाद बहुत तेज बारिश होने लगी और बिजली भी कड़कने लगी. मुझे बहुत डर लग रहा था किन्तु लेटे-लेटे ही पता नहीं कब नींद आ गयी और सीधे अगले दिन सुबह नींद खुली.

सुबह नहाने के बाद हम अपना सामान पैक कर सुबह 7:00 बजे अपने आगे की यात्रा के लिए निकल गए. यह हमारी यात्रा का तीसरा दिन (15 मई) था. अब गौरीकुंड यहां से लगभग 30 कि.मी. की दूरी पर था और लगभग 8:00 बजे हम सोनप्रयाग पहुंच गए. वहां पहुंच कर हमें पता चला कि अब हमारी बाइक यहां से आगे नहीं जा सकती क्योंकि यहां से आगे यात्री वाहनों को नहीं जाने दिया जाता. हमने अपनी बाइक पार्किंग में लगा दी और वहां की लोकल जीप में गौरीकुंड के लिए रवाना हो गए जोकि हमारे पार्किंग स्थल से लगभग 5 कि.मी. की दूरी पर था. हम 15-20 मिनिट में गौरीकुंड पहुंच गए. वहां स्थित कुंड में हमने पहले पौराणिक मान्यता के अनुसार कुंड में स्नान किया जिसमें से गरम पानी आ रहा था.

अब हम अपनी केदारनाथ यात्रा के अंतिम पड़ाव पर थे जोकि हमें पैदल ही करनी थी, आगे की यह यात्रा लगभग 16 कि.मी. लंबी थी. हम भगवान केदारनाथ का जयघोष करते हुए अपनी यात्रा पर आगे बढ़े, अब 10:00 बज गए थे. पैदल यात्रा को लेकर मैं बहुत उत्साहित था. वर्ष 2013 में आयी आपदा ने यात्रा के पैदल मार्ग को भी तितर-बितर कर दिया था. मई का महीना होने के बावजूद भी हमें बहुत ठंड लग रही थी, मौसम भी खराब होने लगा था परंतु हम अपनी यात्रा पर निरंतर आगे बढ़ रहे थे. थोड़ी देर बाद बारिश भी होने लग गयी थी, परंतु हमने पहले ही बाइक पार्किंग करने के बाद एक प्लास्टिक की घुग्गी (एक प्रकार का रेन कोट) ले ली थी. अब हम अपनी घुग्गी ओढ़कर बिना रुके ही आगे बढ़ते रहे. बारिश से बचने का जुगाड़ तो हो गया था परन्तु बारिश की वजह से अब सर्दी लगने लगी थी. हम 4 कि.मी. की दूरी तय करने के बाद जंगल चट्टी पहुंच गए थे, वहां थोड़ा रुककर हमने गरमा-गरम चाय पी जिससे सर्दी में थोड़ी राहत मिली. यहां थोड़ी देर रुककर हम आगे की ओर बढ़े. 2.5 कि.मी. बाद भीमबली नामक स्थान आया वहां भी कुछ दुकानें थीं, हम वहां थोड़ी देर रुके अब 1.00 बज चुका था. हम आगे की ओर बढ़े और 1.5 कि.मी. बाद रामबाड़ा नामक जगह आयी, यह वही स्थान है जहां वर्ष 2013 की आपदा में सबसे ज्यादा लोग फंसे थे और सबसे ज्यादा नुकसान हुआ. जैसे-जैसे हम आगे बढ़ रहे थे ठंड बढ़ रही थी और ठंड के मारे हमारा हाल बहुत बुरा हो गया था. रास्ते में जगह-जगह बर्फ भी पड़ी हुई थी, कई जगह तो हमें बर्फ के ऊपर से ही निकलना पड़ा था. बारिश लगातार हो रही थी, डर भी लग रहा था परन्तु उत्साह भी था कि जल्दी ही भगवान केदारनाथ के दर्शन होंगे. सुबह यात्रा प्रारम्भ करते समय हम यह सोच रहे थे कि 16 कि.मी. की यात्रा को हम 5 घंटे में पूरा कर लेंगे परंतु वहां पहुंचते-पहुंचते हमें शाम के 5:30 बज चुके थे. सर्दी बहुत ज्यादा थी, हाथ व पैरों की उंगलियां एकदम ठिठुर गयीं थीं, लग रहा था जैसे सारा शरीर जम गया है. मंदिर से लगभग 1 कि.मी. पहले ही भारतीय सेना के कैंप थे. हम जैसे ही कैंप के पास पहुंचे तो हमें चाय दी गयी लेकिन हाथ इतने ठिठुर गए थे कि चाय के ग्लास को पकड़ ही नहीं पा रहे थे, मैंने तो अपने दोनों हाथ चाय के बड़े कंटेनर में लगा दिए और थोड़ी देर तक लगाए रखा, फिर जाकर जान में जान आयी और चाय पी. जैसे ही हमें दूर पहाड़ी से मंदिर दिखाई दिया

खुशी का ठिकाना नहीं रहा और हमारे पैरों की गति एकदम अपने-आप बढ़ गयी. अब हम मंदिर प्रांगण में पहुंच गए थे. चारों तरफ बर्फ के पहाड़ और उनके बीच में भगवान केदारनाथ का पावन धाम ऐसे लग रहा था जैसे स्वर्ग होता होगा तो ऐसा ही होगा. प्राकृतिक सौंदर्य की पराकाष्ठा का बेजोड़ नमूना था. उस खूबसूरती से नजरें हटने का नाम ही नहीं ले रही थी. थोड़ी देर मंदिर प्रांगण में बैठकर हमने वहां के सौंदर्य को निहारा नजारा इतना सुंदर था कि रास्ते की सारी थकावट भी दूर हो गयी थी. फिर हमने हाथ-पैर धोकर मंदिर में भगवान के दर्शन किए. अब बिल्कुल अंधेरा हो चुका था. रात में यात्रा को लेकर डर भी लग रहा था, इतने में ही हमें पता चला कि रास्ते में बारिश बहुत ज्यादा हो रही है इसलिए यात्रियों को जाने नहीं दिया जा रहा है. हम बहुत डर गए थे. फिर हम मंदिर के पास ही एक धर्मशाला में रुक गए. वहां मंदिर के पास कई भंडारे भी चल रहे थे, हमने वहीं खाना खाया क्योंकि वहां कोई होटल नहीं था. सभी यात्री उन भंडारों में ही खाना खाते हैं. रात को सोते-सोते एकदम याद आया कि 16 जून 2013 को यहां भयंकर बाढ़ आयी थी और आज भी 16 जून ही है, तो डर की वजह से रात को नींद नहीं आ रही थी. सर्दी ज्यादा होने के कारण हमने 3-3 मोटी वाली रजाइयां ओढ़ रखी थी, पता ही नहीं चला कब नींद आ गयी और फिर सीधे सुबह ही नींद खुली. सुबह धर्मशाला वाले ने हमें गर्म पानी दे दिया था, जिससे हम नहाकर मंदिर में सुबह की आरती में भी शामिल हो गए थे. आरती पूरी होने के बाद हमने एक बार फिर अच्छे से भगवान के दर्शन किए और थोड़ी देर मंदिर प्रांगण में बैठकर नीचे आने के लिए यात्रा प्रारम्भ की हम 17 जून प्रात: 7:30 बजे रवाना हुए और 11:30 बजे सोनप्रयाग पहुंच गए. हमने वहां से अपनी बाइक ली और भगवान बद्री विशाल के धाम की यात्रा पर रवाना हो गए.

हम सोनप्रयाग से भगवान बद्री विशाल का जयघोष करके आगे की यात्रा पर रवाना हुए. हमें बद्रीनाथ पहुंचने तक लगभग 225 कि.मी. की यात्रा तय करनी थी जोकि एक दिन में पहुंचना संभव नहीं था क्योंकि हमें यात्रा प्रारम्भ करते-करते दोपहर के 12:00 बज चुके थे. बद्रीनाथ जाने के लिए हमें 47 कि.मी. वापस ऋषिकेश वाले रास्ते पर ही उखीमठ तक जाना था और फिर आगे अलग रास्ते पर जाना था. हम बिना रुके चलते रहे क्योंकि हमने चाय-नाश्ता केदारनाथ से पैदल उतरते समय ही कर लिया था, फिर हम 2:00 बजे तक उखीमठ पहुंच गए थे, वहां से आगे की जानकारी हमें नहीं थी इसलिए हम वहां थोड़ी देर एक रेस्टोरेन्ट में रुके, चाय पी, समौसे भी खाये और बद्रीनाथ जाने वाले रास्ते के बारे में जानकारी ली. हमें बता दिया गया था कि रास्ते में जंगल है और रुकने के लिए ज्यादा जगह नहीं मिलेंगी. हम सुनसान रास्ते पर चले जा रहे थे. मुश्किल से कोई साधन मिलता था. भूस्खलन की वजह से एक-दो जगह रास्ता भी खराब मिला था. शाम 4:30 बजे ही अंधेरा सा होने लगा था. हमने निश्चय कर लिया था कि आगे रुकने की जो भी जगह आएगी हम वहीं रुक जाएंगे. हम शाम 5:30 बजे गोपेश्वर पहुंचे और वहां एक लॉज में कमरा ले लिया और वहीं खाना भी खा लिया था. वहां भी ठंड बड़ी जबरदस्त थी, दिनभर की मोटर साइकल की सवारी के बाद बिस्तर पर जाते ही नींद आ गयी और सीधे सुबह ही नींद खुली. हम सुबह में नहाने के बाद चाय पीकर 7:30 बजे बद्रीनाथ के लिए रवाना हो गए. अब 18 जून तारीख हो चुकी थी और आज की यात्रा बड़ी उत्साह से भरी हुई थी क्योंकि हमारे अनुसार पहाड़ों की यात्रा का लगभग आखरी दिन था. बद्रीनाथ धाम यहां से लगभग 110 कि.मी. की दूरी पर था और बिना रुके हम 11:00 बजे बद्रीनाथ मंदिर पहुंच गए थे. वहां पहुंचकर हमें ज्ञात हुआ कि यहां पैदल नहीं चलना पड़ेगा क्योंकि मंदिर प्रांगण तक सड़क मार्ग है. हमारे मंदिर पहुंचने के समय मंदिर बंद था परंतु हमने एक दुकानदार से पता कर लिया था कि आधे घंटे में मंदिर खुल जाएगा. वहां पहुंचकर हमने गर्म पानी के कुंड में स्नान किया और फिर मंदिर का दर्शन करने के लिए लाइन में लग गए. मंदिर खुल गया था और थोड़ी देर में हमने दर्शन भी कर लिए थे. मंदिर के गर्भ गृह में स्थापित भगवान बद्री विशाल की प्रतिमा में अद्भुत आकर्षण शक्ति थी. ऐसा लग रहा था जैसे मूर्ति अभी बोल पड़ेगी. दर्शन करने के बाद भी मन नहीं भरा तो मैंने पुन: लाइन में लगकर एक बार फिर दर्शन किए. हमने वहां फोटोग्राफर से फोटो खिंचवाए. थोड़ी देर इधर-उधर घूमने के बाद एक भंडारे में खाना खाया. वहां का मौसम बहुत ही रमणिक था. वहां से आने का मन तो नहीं कर रहा था परन्तु आना तो था ही. लगभग शाम 3:00 बजे वहां से घर के लिए रवाना हो गए, फिर हम रुद्रप्रयाग से आगे

देवीमंदा नामक जगह पर रात को 8:00 बजे पहुंच गए और वहां सड़क के किनारे पर स्थित होटल में कमरा ले लिया और उसी में खाना खाकर सो गए. सुबह 19 जून को अब घर पहुंचने की जल्दी थी तो हम यहां से लगभग 7:30 बजे सुबह रवाना हो गए और श्रीनगर, पौड़ी, रायबरेली होते हुए मेरठ के रास्ते दिल्ली होते हुए रात को 10:00 बजे अलवर पहुंच गए और इसी के साथ हमारी सुखद व आनंदमयी यात्रा का समापन हो गया.

वैसे तो मैंने अपने जीवन में बहुत सी यात्राएं की हैं परंतु मैं शब्दों के माध्यम से नहीं बता सकता की मुझे इस यात्रा के दौरान कितना आनंद आया और इस यात्रा में मैंने कई अनुभवों को भी प्राप्त किया. मैं जब भी इस यात्रा के बारे में सोचता हू तो ख्यालों में ऐसे खो जाता हूं कि मानो मैं भूतकाल में जाकर वापस उसी यात्रा पर निकल पड़ा हूं. जीवन में मौका मिला तो कम से कम एक बार जरूर इस यात्रा को कीजिये आपको प्रकृति से रूबरू होने का मौका मिलेगा.

मिथिलेश कुमार मीणा
प्रबंधक
सूरत जिला क्षेत्र

नराकास बैठकें

राजनांदगांव

दिनांक 23 जुलाई, 2021 को श्री अजय कुमार त्रिपाठी, अग्रणी जिला प्रबंधक, राजनांदगांव की अध्यक्षता में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, राजनांदगांव की 7वीं छ:माही बैठक का आयोजन किया गया. इस बैठक में मुख्य अतिथि के रूप में सहायक निदेशक (कार्यान्वयन), क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, भोपाल (मध्य) श्री हरीश सिंह चौहान उपस्थित रहे.

गरियाबंद

दिनांक 09 अगस्त, 2021 को श्री राजीव रंजन, अग्रणी जिला प्रबंधक, गरियाबंद की अध्यक्षता में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, गरियाबंद की 6ठी छ:माही बैठक का आयोजन किया गया. इस बैठक में नराकास गरियाबंद के सदस्य कार्यालयों के कार्यालय प्रमुखगण तथा स्टाफ सदस्य माइक्रोसॉफ्ट टीम्स के माध्यम से जुड़े थे.

मेधावी विद्यार्थी सम्मान

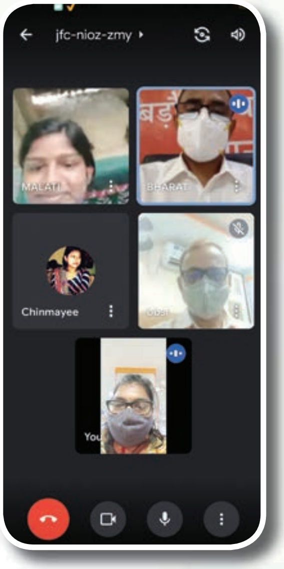

क्षेत्रीय कार्यालय, भुवनेश्वर

बड़ौदा मेधावी विद्यार्थी सम्मान योजना के अंतर्गत भुवनेश्वर क्षेत्र में रमादेवी महिला विश्वविद्यालय से एम.ए हिंदी के द्वितीय वर्ष में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाली छात्राओं को पुरस्कृत किया गया. इस अवसर पर क्षेत्रीय प्रमुख श्री भारत भूषण, उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री धनञ्जय कुमार झा उपस्थित रहे.

क्षेत्रीय कार्यालय, भुवनेश्वर 2

बड़ौदा मेधावी विद्यार्थी सम्मान योजना के अंतर्गत भुवनेश्वर 2 क्षेत्र में रेवैंशा विश्वविद्यालय, कटक से एम.ए हिंदी के द्वितीय वर्ष में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाली छात्राओं को पुरस्कृत किया गया. इस अवसर पर क्षेत्रीय प्रमुख श्री अन्मय कुमार मिश्रा, उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री निर्बिकार रथ एवं सभी विभागाध्यक्ष उपस्थित रहे.

अभिप्रेरणा कार्यक्रम/ कार्यशालाएं

हिन्दी शिक्षण योजना के अंतर्गत परीक्षा देने वाले सदस्यों हेतु कार्यशाला

क्षेत्रीय कार्यालय, मदुरै द्वारा दिनांक 26 जुलाई, 2021 को हिंदी शिक्षण योजना के अंतर्गत परीक्षा देने वाले स्टाफ सदस्यों के लिए पुनश्चर्या कार्यक्रम का आयोजन किया गया. जिसमें सदस्यों को परीक्षा पाठ्यक्रम से लेकर मौखिक परीक्षा की तैयारी भी करवाई गई.

राजभाषा प्रेरकों हेतु अभिप्रेरणा कार्यक्रमों का आयोजन

अंचल कार्यालय, नई दिल्ली द्वारा दिनांक 28 जुलाई 2021 को दक्षिण एवं उत्तरी दिल्ली, 29 जुलाई 2021 को नोएडा व पूर्वी दिल्ली तथा 30 जुलाई 2021 को गुड़गाँव व पश्चिम दिल्ली क्षेत्र के अंतर्गत आने वाली शाखाओं के नामित राजभाषा प्रेरकों के लिए 6 अभिप्रेरणा कार्यक्रमों का आयोजन किया गया.

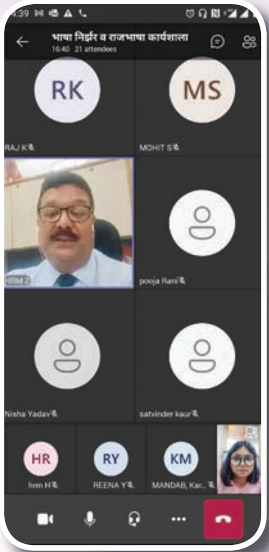

चंडीगढ़ अंचल द्वारा हिन्दी कार्यशाला का आयोजन

चंडीगढ़ अंचल द्वारा दिनांक 29 जुलाई, 2021 को हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता सहायक महाप्रबंधक श्री आर. डी. नेगी द्वारा की गई.

राजभाषा प्रेरकों के लिए राजभाषा अभिप्रेरणा कार्यक्रम का आयोजन

क्षेत्रीय कार्यालय, लुधियाना द्वारा दिनांक 13 अगस्त, 2021 को राजभाषा प्रेरकों के लिए उच्च प्रबंधन द्वारा लागू की गई 'राजभाषा विषयक रेटिंग' के संबंध में माइक्रोसॉफ्ट टीम्स के माध्यम से राजभाषा अभिप्रेरणा कार्यक्रम का आयोजन किया गया.

राजभाषा प्रेरकों के लिए कार्यशाला का आयोजन

गोरखपुर क्षेत्र की ग्रामीण शाखाओं के राजभाषा प्रेरकों के लिए दिनांक 29 जुलाई, 2021 को राजभाषा कार्यशाला का आयोजन किया गया. जिसमें राजभाषा संबंधी नीति-नियमों के साथ-साथ रेटिंग प्रणाली के विषय में भी जानकारी दी गई.

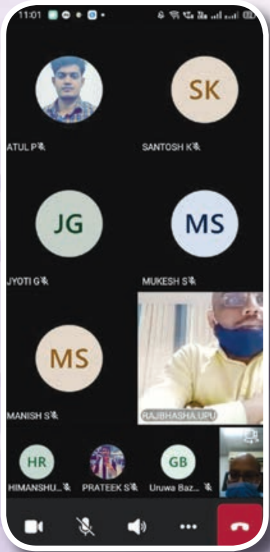

क्षेत्रीय कार्यालय, हुब्बल्ली द्वारा हिन्दी कार्यशाला का आयोजन

क्षेत्रीय कार्यालय, हुब्बल्ली के स्टाफ सदस्यों के प्रयोजनार्थ ऑनलाइन माध्यम से दिनांक 23 अगस्त 2021 को हिन्दी कार्याशाला का आयोजन किया गया. इस कार्यशाला में राजभाषा नियम व अधिनियम से संबन्धित विस्तृत जानकारी दी गयी.

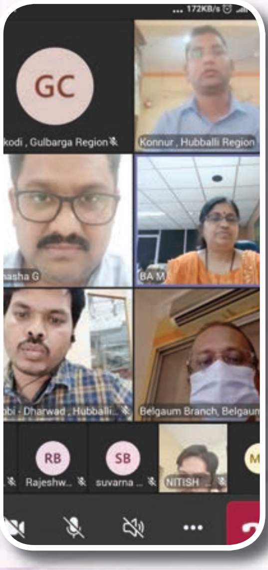

अभिप्रेरणा कार्यक्रम/ कार्यशालाएं

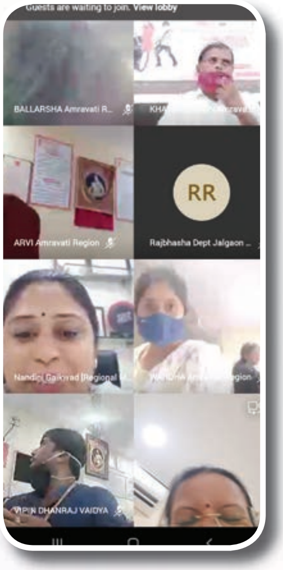

अमरावती क्षेत्र द्वारा हिंदी कार्यशाला का आयोजन

दिनांक 27 अगस्त, 2021 को अमरावती क्षेत्र में हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया. इस कार्यशाला का आयोजन माइक्रोसॉफ्ट टीम्स के माध्यम से किया गया. कार्यशाला का उद्घाटन क्षेत्रीय प्रमुख श्रीमती नंदिनी गायकवाड ने किया.

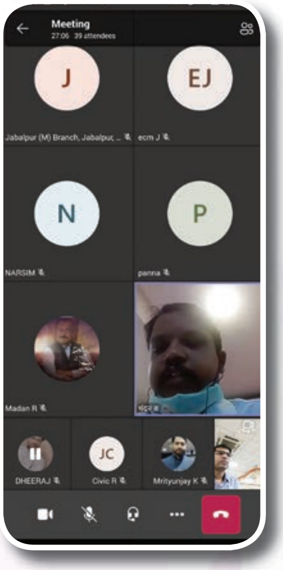

जबलपुर एवं सागर क्षेत्र हिंदी द्वारा कार्यशाला आयोजित

दिनांक 17 अगस्त, 2021 को श्री मदन पाल सिंह, क्षेत्रीय प्रमुख, जबलपुर क्षेत्र की अध्यक्षता में जबलपुर एवं सागर क्षेत्र के राजभाषा प्रेरकों के लिए हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया. जिसमें प्रतिभागियों को राजभाषा नीति-नियम, यूनिकोड के माध्यम से टाइपिंग, तिमाही रिपोर्ट के प्रेषण की प्रक्रिया आदि की जानकारी दी गई.

नोएडा क्षेत्र द्वारा राजभाषा अभिप्रेरणा कार्यक्रम आयोजित

दिनांक 30 अगस्त, 2021 को नोएडा क्षेत्र की शाखाओं में पदस्थ राजभाषा प्रेरकों हेतु ऑनलाइन माध्यम से राजभाषा अभिप्रेरणा कार्यक्रम का आयोजन किया गया.

क्षेत्रीय कार्यालय, वाराणसी द्वारा हिन्दी कार्यशाला का आयोजन

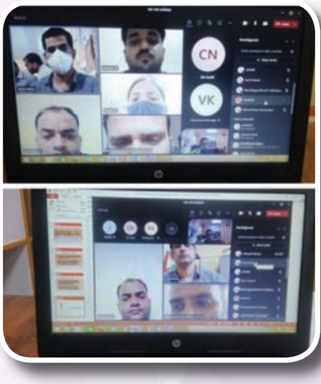

17 सितंबर, 2021 को क्षेत्रीय कार्यालय, वाराणसी द्वारा हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया. इस अवसर पर उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री हरिशंकर प्रसाद ने प्रतिभागियों को संबोधित किया.

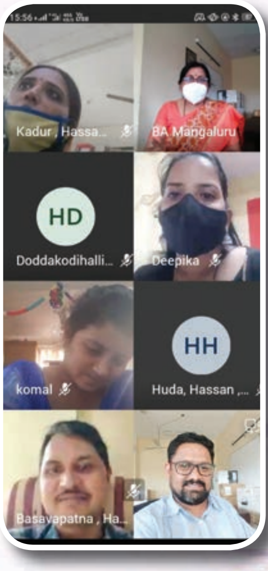

क्षेत्रीय कार्यालय, हासन द्वारा हिन्दी कार्यशाला का आयोजन

क्षेत्रीय कार्यालय, हासन के स्टाफ सदस्यों के लिए माइक्रोसोफ़्ट टीम्स के माध्यम से दिनांक 09 अगस्त, 2021 को हिन्दी कार्याशाला का आयोजन किया गया. इस कार्यशाला में दैनिक कामकाज में हिन्दी के उपयोग और राजभाषा नियम व अधिनियम से संबन्धित विस्तृत जानकारी दी गयी.

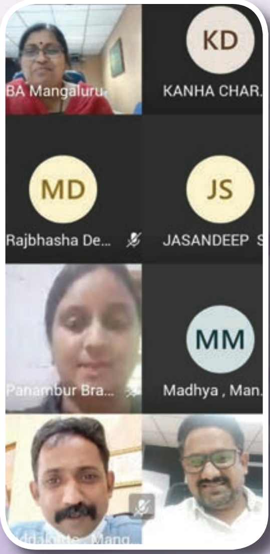

क्षेत्रीय कार्यालय, मंगलूरु शहर द्वारा हिन्दी कार्यशाला का आयोजन

क्षेत्रीय कार्यालय, मंगलूरु शहर के स्टाफ सदस्यों के लिए ऑनलाइन माध्यम से दिनांक 31 अगस्त, 2021 को हिन्दी कार्याशाला का आयोजन किया गया. इस कार्यशाला में हिन्दी के विभिन्न प्रयोग संबंधी जानकारी दी गयी.

अमरावती क्षेत्र की हिंदी ई-पत्रिका का विमोचन

दिनांक 20 जुलाई, 2021 को अमरावती क्षेत्र की प्रथम ई-पत्रिका इंद्र नगरी का विमोचन क्षेत्रीय प्रमुख श्रीमती नंदिनी गायकवाड एवं उप क्षेत्रीय प्रबंधक श्री अजय आर्य द्वारा किया गया.

गोरखपुर क्षेत्र की ई-पत्रिका का लोकार्पण

दिनांक 23 जुलाई, 2021 को गोरखपुर क्षेत्र की ई-पत्रिका 'गोरखभूमी' का लोकार्पण क्षेत्रीय प्रमुख श्री सर्वेश कुमार सिन्हा एवं उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री संजय कुमार सिंह ने किया.

अविनाशीलिंगम विश्वविद्यालय की छात्राओं के लिए ''राजभाषा प्रशिक्षण कार्यक्रम''

कोयम्बत्तूर क्षेत्र द्वारा 01 जुलाई, 2021 से 22 जुलाई, 2021 तक अविनाशीलिंगम विश्वविद्यालय की छात्राओं के लिए ''राजभाषा प्रशिक्षण कार्यक्रम'' का आयोजन किया गया. प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान, बी.ए (प्रयोजनमूलक हिंदी) की छात्राओं को राजभाषा विषयक संबंधित संपूर्ण जानकारी दी गई. दिनांक 28 जुलाई 2021 क्षेत्रीय कार्यालय के उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री के. मुरुगैया ने छात्राओं को सम्मानित किया.

क्षेत्रीय कार्यालय, धमतरी का राजभाषा विषयक निरीक्षण

दिनांक 22 जुलाई, 2021 को सहायक निदेशक, कार्यान्वयन, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, भोपाल (मध्य) श्री हरीश सिंह चौहान द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय, धमतरी का राजभाषा विषयक निरीक्षण किया गया.

बड़ौदा अकदमी, राजकोट द्वारा विचार गोष्ठी का आयोजन

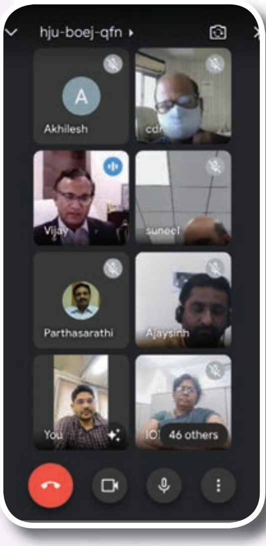

दिनांक 30 सितंबर, 2021 अंतर्राष्ट्रीय अनुवाद दिवस के अवसर पर विचार गोष्ठी का आयजन किया गया. इस विचार गोष्ठी में मुख्य अतिथि के रूप में गुजरात साहित्य अकादमी के पूर्व महामात्र एवं गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय, स्कूल ऑफ लैंग्वेज, लिटरेचर एंड कल्चर स्टडीज, गुजराती भाषा एवं साहित्य केंद्र के एसोसिएट प्रो.डॉ. अजय सिंह चौहान उपस्थित रहे. कार्यक्रम का उद्घाटन महाप्रबंधक एवं अध्यक्ष बैंक नराकास श्री विजय कुमार बसेठा द्वारा किया गया.

गोरखपुर क्षेत्र द्वारा मुंशी प्रेमचंद की जयंती पर विशेष समारोह का आयोजन

गोरखपुर क्षेत्र द्वारा मुंशी प्रेमचंद की जयंती के अवसर पर दिनांक 31 जुलाई, 2021 को विशेष समारोह का आयोजन किया गया. इस अवसर पर 'कथा समीक्षा प्रतियोगिता' के विजेताओं को सम्मानित किया गया.

अपने ज्ञान को परखिए

1. हाल ही में, कौन पैरालंपिक खेलों में स्वर्ण पदक जितने वाली पहली भारतीय महिला खिलाड़ी बनी है?
   (क) मीनाक्षी साहा (ख) गायत्री नेहरा
   (ग) दीपिका पांडे (घ) अवनि लेखरा
2. नेशनल टेनिस अकादमी कहां स्थित है?
   (क) हरियाणा (ख) नई दिल्ली
   (ग) गुरुग्राम (घ) चंडीगढ़
3. ग्लोबल मैन्युफैक्चरिंग रिस्क इंडेक्स (Global Manufacturing Risk Index) - 2021 के मुताबिक दुनिया के सबसे आकर्षक मैन्युफैक्चरिंग हब के लिए भारत को कौन-सा स्थान प्राप्त हुआ है?
   (क) प्रथम (ख) दूसरा
   (ग) तीसरा (घ) चौथा
4. नेहरू ट्रॉफी किस खेल से संबंधित है?
   (क) हॉकी (ख) क्रिकेट
   (ग) टेनिस (घ) कब्बडी
5. प्रत्येक वर्ष पर्यटन दिवस कब मनाया जाता है?
   (क) 20 सितंबर (ख) 22 सितंबर
   (ग) 25 सितंबर (घ) 27 सितंबर
6. निम्नलिखित में से किसे कार्बोलिक एसिड के रूप में भी जाना जाता है?
   (क) फिनोल (ख) हाइड्रोक्साइड
   (ग) सल्फ्यूरिक एसिड (घ) इथेनॉल
7. किस राज्य में भारत का पहला 'ड्रोन फोरेंसिक प्रयोगशाला अनुसंधान केंद्र' शुरू हुआ है?
   (क) पंजाब (ख) राजस्थान
   (ग) तेलंगाना (घ) केरल
8. काला पर्वत किस देश में स्थित है?
   (क) भारत (ख) भूटान
   (ग) नेपाल (घ) चीन
9. टोक्यो ओलंपिक्स (Tokyo Olympics) 2020 में भारत ने कौन-कौन से कुल 7 पदक जीते हैं?
   (क) 1 स्वर्ण, 2 रजत, 4 कांस्य
   (ख) 1 स्वर्ण, 3 रजत, 3 कांस्य
   (ग) 1 स्वर्ण, 2 रजत, 5 कांस्य
   (घ) 1 स्वर्ण, 1 रजत, 5 कांस्य
10. वाटर पोलो खेल में प्रत्येक पक्ष में कितने खिलाड़ी होते हैं?
   (क) 5 (ख) 6
   (ग) 7 (घ) 8
11. हर वर्ष 29 अगस्त को पूरे भारत में राष्ट्रीय खेल दिवस किनके जन्मदिवस पर मनाया जाता है?
   (क) बलबीर सिंह सीनियर (ख) मेजर ध्यानचंद
   (ग) मिलखा सिंह (घ) राजीव गाँधी
12. AFI ने नीरज चोपड़ा के सम्मान में प्रतिवर्ष किस तारीख को भाला फेंक दिवस मनाने की घोषणा की है?
   (क) 05 अगस्त को (ख) 06 अगस्त को
   (ग) 07 अगस्त को (घ) 08 अगस्त को
13. निम्न ग्रहों में से किसे 'पृथ्वी का जुड़वां' भी कहा जाता है?
   (क) मंगल (ख) बुध
   (ग) यूरेनस (घ) शुक्र
14. किस राज्य की सरकार ने हाल ही में, भारत का पहला भूकंप अलर्ट मोबाइल ऐप लॉन्च किया है?
   (क) गुजरात (ख) उत्तराखंड
   (ग) बिहार (घ) असम
15. हाल ही में, किस राज्य में भारत का सबसे ऊंचा (11000 फीट) 'हर्बल पार्क' बना है?
   (क) उत्तराखंड (ख) ओडिशा
   (ग) मणिपुर (घ) तेलंगाना
16. समुद्रतल से अंटार्कटिका की औसत ऊंचाई कितनी है?
   (क) 4,500 फीट (ख) 5,500 फीट
   (ग) 6,500 फीट (घ) 7,500 फीट
17. Covid-19 के खिलाफ 100% वैक्सीनेशन करने वाला भारत का पहला शहर कौनसा है?
   (क) चेन्नई (ख) रायपुर
   (ग) गांधीनगर (घ) भुवनेश्वर
18. प्रतिवर्ष भारत वर्ष में 'कारगिल विजय दिवस' कब मनाया जाता है?
   (क) 26 जुलाई को (ख) 27 जुलाई को
   (ग) 28 जुलाई को (घ) 29 जुलाई को
19. विक्रम साराभाई स्पेस सेंटर कहां स्थित है?
   (क) पुडुचेरी (ख) हैदराबाद
   (ग) तिरुअनंतपुरम (घ) चेन्नई
20. किस राज्य में स्थित रामप्पा मंदिर को यूनेस्को ने हाल ही में विश्व धरोहर में शामिल किया है?
   (क) तेलंगाना (ख) तमिलनाडु
   (ग) उत्तराखंड (घ) ओडिशा

(उत्तर के लिए पेज नं. 20 देखें)

मानव व्यवहार पर सोशल मीडिया का प्रभाव

हमारे जीवन में सोशल मीडिया के प्रवेश के कारण हमारे दैनिक जीवन, निजी रिश्तों, सोच आदि में बहुत अधिक बदलाव आ गया है. एक जमाना था जब लोग त्यौहार अथवा किसी विशेष अवसर पर आमंत्रण और बधाइयां देने के लिए एक दूसरे के घर जाया करते थे. बिना घर गए किसी आमंत्रण को पूर्ण नहीं माना जाता था. सोशल मीडिया के उपयोग के बढ़ने से विशेषकर शुभकानाएं प्रेषित करने का जरिया सोशल मीडिया ही हो गया है. आज शुभकामनाएं और फूल भी सोशल मीडिया के माध्यम से पहुंचाए जा रहे हैं. सोशल मीडिया ने डिजिटल रूप से हमें आपस में जोड़कर हमारे रिश्तों और जरूरतों को सामंजस्य प्रदान किया है, वहीं इसने दूसरी ओर आत्ममंथन से खुद से मिलने की प्रक्रिया को पूर्णतया खत्म कर दिया है. आज के दौर में फेसबुक, ट्वीटर, इंस्टाग्राम, व्हाट्सएप जैसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के सहारे लोगों ने एक पूरी आभासी दुनिया का निर्माण कर लिया है और इसमें मित्र, रिश्तेदार, परिवारजन, शुभचिंतक इत्यादि की पूरी सूची अंतर्निहित है.

सोशल मीडिया क्या है?

सोशल मीडिया एक गैरपरंपरागत मीडिया है. यह एक वर्चुअल वर्ल्ड बनाता है जहां हम इंटरनेट के माध्यम से अपनी पहुंच बना सकते हैं. सोशल मीडिया एक विशाल नेटवर्क है, जो पूरे विश्व को जोड़े रखता है. यह संचार का एक बहुत अच्छा माध्यम है. यह द्रुत गति से सूचनाओं के आदान-प्रदान करने, जिसमें हर क्षेत्र की खबरें होती हैं, का माध्यम भी है. सोशल मीडिया, एक ऐसा मीडिया है, जो बाकी सारे मीडिया (प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक और समानांतर मीडिया) से अलग है. इसे उपयोग करने वाला व्यक्ति सोशल मीडिया के किसी प्लेटफॉर्म (फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम) आदि का उपयोग कर अपनी पहुंच बना सकता है. आज के दौर में सोशल मीडिया जिंदगी का एक अहम हिस्सा बन चुका है जिसकी बहुत सारी विशेषताएं हैं, जैसे कि सूचना प्रदान करना, मनोरंजन करना और शिक्षित करना मुख्य रूप से शामिल है.

सोशल मीडिया के प्रति लोगों का झुकाव

एक सर्वेक्षण में यह बात सामने आई है कि अधिकतर युवा फैशन, जानकारी, जिज्ञासा, संपर्क आदि के लिए सोशल मीडिया का इस्तेमाल करते हैं. युवा पीढ़ी की सोच, नजरिए, जीवन जीने के तरीके में आए बदलाव को जांचने के लिए एक संस्था द्वारा किए गए सर्वे में कुल 1350 प्रतियोगियों से कुछ सवाल पूछे गए. प्रतिभागियों की उम्र 14-17 साल के बीच थी. सर्वेक्षण में सामने आया कि युवा सिर्फ सूचना में रूचि रखते हैं और जानकारी के स्रोत पर ज्यादा ध्यान नहीं देते.

सोशल मीडिया पर आज के तकनीक प्रेमी युवा तो जुड़ ही रहे हैं, उनके साथ-साथ बच्चे, बूढ़े और बड़ी संख्या में बढ़ते दोस्त, एक दूसरे के विचारों-भावों से दुखों को, सुखों को, भावनाओं को एक दूसरे से बांट रहे हैं. लेकिन वास्तविक जीवन में भी इसकी अनदेखी संभावनाएं बहुत ज्यादा बढ़ती जा रही है. सोशल मीडिया का एक सच यह भी है कि जिन लोगों को हम वास्तविकता में कभी देख भी नहीं पाए हैं, जिन्हें हम जानते भी नहीं हैं, उन के निकट होने का आभास लेते हैं और उनसे इस तरीके के गूढ़ और गहन रिश्ते बना लेते हैं कि भविष्य में किसी भी प्रतिक्रिया के लिए वह हमारे परिवारजनों की तरह व्यवहार भी करते हैं. परंतु वास्तविक जीवन में उनसे जुड़ पाना कई बार संभव नहीं होता है. ऐसे में यहां कई चीज़ें वास्तविकता से कोसों दूर रहती हैं.

लोगों को ऐसा लगता है कि हमारे सोशल मीडिया वाले मित्र हमारे बहुत करीबी हैं और हमारी बहुत चिंता करते हुए हमारा ख्याल भी रखते हैं, किंतु सत्य यह है कि लाखों मील दूरी पर बैठा हुआ व्यक्ति कई मामलों में आपको बगैर जाने-पहचाने, बगैर आपके चरित्र और आपकी भावनाओं को जाने, बिना तथाकथित, करीबी तो प्रतीत होता है, किंतु इंसानियत और वास्तविकता से भरी भावनाओं का दूर-दूर तक इस से कोई लेना-देना नहीं होता. सोशल मीडिया के अधिक इस्तेमाल को आम बोल चाल की भाषा में हम ''सोशल मीडिया फीवर'' भी कहते हैं.

सोशल मीडिया के माध्यम से बने रिश्ते हालांकि करीबी नहीं होते, जो कि पारंपरिक और पुरातन प्रथाओं से चली आ रही आत्मीयता को विकसित करती थी. अब वह इंसान को उसकी निजता के लिए आभासी वर्चस्व का एहसास कराती है, कहीं ना कहीं सोशल मीडिया के माध्यम से हम पूरी दुनिया एक बटन के सहारे नाप लेते हैं, किंतु इसका वास्तविक सच हमें अपने पड़ोसियों से ही दूर कर देता है. यह भी सत्य है कि हम अकेलेपन और परेशानियों से जूझते हुए जिंदगी के खोखलेपन को भरने की झूठी कोशिश में लगे हुए होते हैं. सोशल मीडिया के माध्यम से हम पूरी वैश्विक जानकारी और ज्ञानवर्धन में हम आगे बढ़ रहे हैं, किसी भी व्यक्ति, राष्ट्र, क्षेत्र विशेष की जानकारी क्षण भर में हमारे पास पहुंच जाती है और हम राष्ट्र, विश्व के सजग और सफल जानकार लोगों की श्रेणी में स्वयं को मानने लगते हैं. ऐसी सफलता का एहसास क्षणिक ही होता है. सोशल मीडिया का सकारात्मक उपयोग बहुत आवश्यक है, अन्यथा भटकाव का रास्ता बहुत आसान होता है.

सोशल मीडिया इंसान और कंप्यूटर को जोड़ने वाले समाज के लिये एक आभासी माध्यम है. आज की भाग दौड़ भरी दुनिया में हमारी युवा पीढ़ी सोशल मीडिया से ही लगभग सारे काम निकाल रही है. शोध के अनुसार यह पाया गया है कि भारत में इंटरनेट का उपयोग करने वालों की संख्या लगातार बढ़ रही. इक्कीसवी सदी में प्रौद्योगिकी के उपयोग के साथ साथ कंप्यूटर नेटवर्किंग का इस्तेमाल भी बढ़ गया है. इन्हीं कंप्यूटर नेटवर्किंग साइटों में सोशल मीडिया के साइट जैसे ट्वीटर, इंस्टाग्राम, फेसबुक और व्हाट्सएप्प आदि इसका हिस्सा हैं. सोशल मीडिया दूरियों को कम कर व्यक्तियों को निकट होने का आभास कराता है इसलिए यह बहुत लोकप्रिय हो चुका है और अपने उपयोगकर्ताओं में उत्तरोत्तर सैकड़ों प्रतिशत की वृद्धि दर्ज कर रहा है. सोशल मीडिया के आने के बाद आज के दौर में रिश्ते और हमारे अपने वास्तविक निजी संबंधों के स्वरुप में बहुत बदलाव आया है, जिससे सोशल मीडिया के करोड़ों उपयोगकर्ता इस बदलाव के साक्षी बनेंगे.

दैनिक जीवन में सोशल मीडिया की भूमिका:

- यह बहुत तेज गति से होने वाला संचार का माध्यम है.
- यह जानकारी को एक ही जगह इकट्ठा करता है.
- सरलता से समाचार प्रदान करता है.
- यह सभी वर्गों के लिए है, जैसे कि शिक्षित वर्ग हो या अशिक्षित वर्ग.
- यहां किसी प्रकार से कोई भी व्यक्ति किसी भी कंटेंट का मालिक नहीं होता है.
- फोटो, वीडियो, सूचना, डॉक्यूमेंटस आदि को आसानी से शेयर किया जा सकता है.
- सोशल मीडिया का इस्तेमाल व्यावसायिक प्रयोजन हेतु भी किया जा रहा है. सोशल नेटवर्किंग साइटें प्रचार-प्रसार के माध्यम से किसी संस्था की प्रतिष्ठा, नेतृत्व, कारोबार को बनाए रखने और बढ़ाने में मदद करती हैं.

सोशल मीडिया का दुष्प्रभाव

- यह बहुत सी उपयोगी जानकारी प्रदान करता है जिनमें से कुछ जानकारियां भ्रामक भी होती हैं.
- जानकारी को किसी भी प्रकार से तोड़-मरोड़कर पेश किया जा सकता है.
- किसी भी जानकारी का स्वरूप बदलकर उसे उकसाने वाली बनाई जा सकती है जिसका वास्तविकता से कोई लेना-देना नहीं होता.
- कंटेंट का कोई मालिक न होने से मूल स्रोत का अभाव होता है.
- निजता पूर्णत: भंग हो जाती है.
- फोटो या वीडियो की एडिटिंग करके भ्रम फैला सकते हैं जिनके द्वारा कभी-कभी दंगे जैसी आशंका भी उत्पन्न हो जाती है.
- सायबर अपराध सोशल मीडिया से जुड़ी सबसे बड़ी समस्या है.

सोशल मीडिया कैसे है फायदेमंद?

सोशल मीडिया का एक पक्ष बहुत सकारात्मक भूमिका

अदा करता है इसके जरिए किसी भी व्यक्ति, संस्था, समूह और देश आदि को आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक रूप से समृद्ध बनाया जा सकता है. सोशल मीडिया द्वारा ऐसे कई विकासात्मक कार्य हुए हैं जिनसे लोकतंत्र को समृद्ध बनाने का काम हुआ है, जिससे किसी भी देश की एकता, अखंडता, पंथनिरपेक्षता, समानता संबंधी गुणों में अभिवृद्धि हुई है. मौजूदा समय में इंटरनेट की दुनिया में पैठ बना चुका हर व्यक्ति आज किसी न किसी सोशल नेटवर्किंग साइट से जुड़ा है. इसमें कोई संशय नहीं है कि सोशल मीडिया का मंच आज अभिव्यक्ति का नया और कारगर माध्यम बन चुका है. इससे जुड़े लोग बेबाकी से अपनी राय इस मंच के माध्यम से जाहिर करते हैं.

फेसबुक जैसी सोशल नेटवर्किंग साइटें आधुनिक जीवन का एक अहम हिस्सा बन गई हैं. इसकी सहायता से आप अपने मित्रों के साथ तुरन्त और वास्तविक समय में जुड़ सकते हैं. उपयोगकर्ता एक दूसरे से बात-चीत कर सकते हैं, बार-बार जुड़ सकते हैं और सामूहीकरण कर सकते हैं. सोशल मीडिया साइट, रोजगार का एक प्रमुख स्रोत बन गयी है.

आजकल व्यापार के क्षेत्र में सोशल मीडिया की भूमिका और भी बढ़ी है. इसका प्रभावी इस्तेमाल कुल विपणन लागत कम करने में सहायक है. डिजिटल व्यापार में सफलता सोशल मीडिया का प्रभावी इस्तेमाल जरूरी है. इसके जरिए संभावित ग्राहकों को तलाशा और स्वयं से जोड़ा जा सकता है और कंपनियां अपने व्यापार में वृद्धि भी कर सकती हैं.

सावधानी:

कई उपयोगकर्ता सोशल मीडिया का लगातार उपयोग करते हैं और दिन का काफी हिस्सा उनका इसी कार्य में गुजरता है. जबकि हमारे जीवन में इससे महत्वपूर्ण कई कार्य हैं जो हमारी तथा समाज की प्रगति के लिए जरूरी है.

सोशल मीडिया का आनंद उठाने की भावना हमारे मस्तिष्क के केंद्र की उत्तेजना के कारण उत्पन्न होती है. इसका अत्यधिक इस्तेमाल एकाग्रता को भंग करने में अहम भूमिका निभा सकता है. ऐसे काम पर अधिक ध्यान केंद्रित करने से हमारी एकाग्रता क्षमता में भी कमी आती है.

सोशल मीडिया का इस्तेमाल करते समय हमें अधिक सावधान रहना चाहिए. इसका अत्यधिक इस्तेमाल हमारे मस्तिष्क पर नकारात्मक प्रभाव डालता है. इस पर पोस्ट की गई सामग्री का स्वरूप हमारी निजी जिंदगी को प्रभावित कर सकता है. कई बार सोशल मीडिया पर संवेदनशील सामग्री को पोस्ट करना स्वयं के साथ-साथ समाज के लिए भी मुसीबत की वजह बन जाता है. ऐसे में हमें सोशल मीडिया पर कुछ भी पोस्ट या लाइक करते समय सोच-विचार के निर्णय लेना चाहिए. एक जागरूक नागरिक होने के नाते आज के दौर में सतर्कता से सोशल मीडिया का इस्तेमाल करना हम सभी के लिए जरूरी है. इस दौर में हम दिन के चौबिसों घंटे प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से सोशल मीडिया से जुड़े रहते हैं और इसके कारण हमारी आदतों में भी बदलाव आया है.

अशोक अग्रवाल
अधिकारी (एसएमएस)
सोतपुर

लेखक परिचय : उदय प्रकाश

उदय प्रकाश

(जन्म : 1 जनवरी, 1952)

चर्चित कवि, कथाकार, पत्रकार और फिल्मकार हैं. आपकी कुछ कृतियों के अंग्रेज़ी, जर्मन, जापानी एवं अन्य अंतर्राष्ट्रीय भाषाओं में अनुवाद भी उपलब्ध हैं. आपकी रचनाएं लगभग समस्त भारतीय भाषाओं में अनूदित की गई हैं. कथा साहित्य में आपने दरियायी घोड़ा, तिरिछ, पॉलगोमरा का स्कूटर, पीली छतरीवाली लड़की आदि कई रचनाएं की हैं. वॉरेन हेस्टिंग्स का सान्ड्, लाल घास पर नीले घोड़े जैसी कई कहानियों के नाट्यरूपंतर और सफल मंचन भी हुए हैं. 'उपरांत' और 'मोहन दास' के नाम से आपकी कहानियों पर फीचर फिल्में भी बन चुकी हैं, जिसे अंतर्राष्ट्रीय सम्मान मिल चुके हैं. उदय प्रकाश स्वयं भी कई टी.वी. धारावाहिकों के निर्देशक-पटकथाकार रहे हैं. सुप्रसिद्ध राजस्थानी कथाकार विजयदान देथा की कहानियों पर बहु चर्चित लघु फिल्में प्रसार भारती के लिए निर्देशित-निर्मित की हैं. आप भारतीय कृषि का इतिहास पर महत्वपूर्ण पंद्रह कड़ियों का सीरियल 'कृषि-कथा' राष्ट्रीय चैनल के लिए निर्देशित कर चुके हैं. इसके साथ-साथ आप अपनी पीढ़ी के समर्थतम कवियों में से हैं. रूसी, अंग्रेजी, जापानी, डच और जर्मन भाषा में आपकी कविताओं का अनुवाद हो चुका है और लगभग सभी राष्ट्रीय- अंतर्राष्ट्रीय कविता संकलनों में आपकी कविताएं संग्रहीत हैं. 2004 में हालैंड के प्रख्यात अंतर्राष्ट्रीय कविता उत्सव में आप भारतीय कवि के रूप में हिस्सा ले चुके हैं. आपको 2010 में साहित्य अकादमी पुरस्कार, 2007 में रूस का प्रतिष्ठित अंतर्राष्ट्रीय पुश्किन सम्मान, कविता 'तिब्बत' के लिए 1980 में भारत भूषण अग्रवाल पुरस्कार, ओम प्रकाश सम्मान, श्रीकांत वर्मा पुरस्कार, मुक्तिबोध सम्मान, द्विजदेव सम्मान प्राप्त हुआ है.

बैंकिंग शब्द मंजूषा

Adjustment credit – समायोजन ऋण

किसी छोटे बैंक की अल्पकालीन उधार जरूरतों को पूरा करने के लिए किसी बड़े बैंक द्वारा उसे दिया गया अग्रिम. अधिकतर जब ब्याज दरें ऊंची होती हैं और मुद्रा आपूर्ति कम होती है उस स्थिति में समायोजन ऋण का सहारा लिया जाता है. यह ऋण 15 दिनों की अल्पकालीन अवधि के लिए भी हो सकते हैं.

Cheque kiting - चेक–धोखाधड़ी

धोखाधड़ी का एक ऐसा प्रकार, जिसमें ग्राहक उस राशि के लिए चेक जारी करता है जो वास्तव में उसके खाते में जमा नहीं होती. आम तौर पर बैंक जब ग्राहक द्वारा जमा किए गए चेक को क्लियरिंग में भेजता है तो उसकी राशि संबंधित ग्राहक के खाते में जमा कर देता है. चेक–काइटिंग में ग्राहक इसी प्रक्रिया का फायदा उठाता है और ऐसी राशि के लिए चेक जारी कर देता है जो वास्तव में उसके खाते में जमा नहीं होती. देखा जाए तो यह जमा और आहरण के बीच सावधानीपूर्वक समय का संयोजन कर लिया जानेवाला ब्याजरहित ऋण है.

Disposable income - प्रयोज्य आय

सभी प्रत्यक्ष करों या अन्य देयताओं को अदा करने के बाद निजी आय की वह स्थिति, जहां उपलब्ध शेष या तो उपभोग के लिए होता है या बचत के लिए. इस तरह किसी व्यक्ति को खर्च किए जाने हेतु उपलब्ध राशि प्रयोज्य आय कहलाती है. समष्टि आर्थिक स्तर पर प्रयोज्य आय का मतलब समस्त व्यक्तिगत आय के जोड़ से है, जिसमें से करों को घटा दिया गया हो तथा अंतरण–भुगतानों को जोड़ दिया गया हो. इस प्रकार समष्टि स्तर पर उपलब्ध प्रयोज्य आय संपूर्ण खरीदारी–क्षमता को दर्शाती है.

Fourth Market - चौथा बाजार

हमारे देश में शेयरों के कारोबार के लिए एक सुव्यवस्थित बाजार–व्यवस्था मौजूद है. जबकि कई देशों में यह देखा गया है कि शेयरों की खरोद–फरोख्त शेयर बाजार के माध्यम से न होकर वित्तीय संस्थाओं द्वारा आपस में ही की जाती है. शेयरों के ऐसे लेनदेन में शेयर–दलालों की कोई भूमिका नहीं होती और सारे लेनदेन ऑनलाइन किए जाते हैं. इन बाजारों में चूंकि कोई रिपोर्टिंग नहीं होती, अतएव वहां होने वाले कारोबार का अनुमान लगाना भी कठिन है. इन्हें चौथा बाजार कहा जाता है.

Letter of comfort - चुकौती– आश्वासन–पत्र

बैंक से ऋण लेने का प्रयास कर रही किसी सहायक कंपनी की मूल कंपनी द्वारा बैंक को भेजा जानेवाला पत्र. पत्र में उस उपलब्ध ऋण की चुकौती की कोई गारंटी नहीं दी जाती, परंतु बैंक को यह आश्वासन दिया जाता है कि सहायक कंपनी ने ऋण लेने के अपने आशय की जानकारी मूल कंपनी को दे दी है. मूल कंपनी भी प्रायः आवेदन का समर्थन करती है और कम से कम यह आश्वासन देती है कि उसका इरादा है कि सहायक कंपनी कारोबार करती रहे और स्वामित्व में कोई भी प्रासंगिक परिवर्तन होने पर वह बैंक को इसकी सूचना देगी.

Middle office - मध्य कार्यालय

आधुनिक बैंकिंग से जुड़ा यह शब्द वास्तविक कम, संकल्पनात्मक ज्यादा है. बैंकिंग के पुराने प्रतिमान में व्यापार अग्र कार्यालय या फ्रंट–ऑफिस में संपन्न होता है और भुगतान व लेखांकन हेतु उसे पार्श्व कार्यालय या बैक–ऑफिस को सौंप दिया जाता है. जोखिम–प्रबंधन–कार्य एवं कॉर्पोरेट पर्यवेक्षण संबंधी अपेक्षाओं के संदर्भ में मध्य कार्यालय अस्तित्व में आया है.

Prepayment Penalty - पूर्वभुगतान दंड

यदि उधार लेनेवाला उधार ली गई राशि का निर्धारित समय से पूर्व भुगतान करे तो उसे दंडस्वरूप कुछ शुल्क अदा करना पड़ता है. कई बार उपभोक्ता– ऋणों के संदर्भ में ऐसी स्थिति देखने को मिलती है. कुछ बैंक आवास–ऋण के रूप में ली गई राशि के समयपूर्व भुगतान किए जाने की स्थिति में ऋणी से देय राशि के अलावा दंडस्वरूप अतिरिक्त राशि की वसूली भी करते हैं.

Soft loan scheme - सुलभ ऋण योजना

सीमेंट, चीनी, इंजीनियरी, सूती वस्त्र और जूट की उत्पादक इकाइयों को उदार शर्तों पर वित्तीय सहायता प्रदान करने के उद्देश्य से सुलभ ऋण योजना बनाई गई है ताकि वे अपने संयंत्रों और मशीनों के प्रतिस्थापन/ नवीकरण/ आधुनिकीकरण का बकाया कार्य पूरा कर सकें और उत्पादन में ज्यादा किफायत का स्तर प्राप्त कर सकें तथा उक्त इकाइयों की स्पर्धात्मकता में सुधार हो.

साभार : भारतीय रिज़र्व बैंक पारिभाषिक कोश

ग्राहक संवाद कार्यक्रम

पाटण शाखा, बनासकांठा क्षेत्र

दिनांक 20 जुलाई, 2021 को बनासकांठा क्षेत्र की आदर्श हिन्दी शाखा पाटण द्वारा बैंक के 114वें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में ''ग्राहक संवाद कार्यक्रम'' का आयोजन किया गया. इस कार्यक्रम में शाखा प्रमुख द्वारा ऐसे ग्राहकों को सम्मानित किया गया जिन्होंने शाखा की व्यवसाय वृद्धि में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है.

गांधी नगर शाखा, पूर्वी दिल्ली क्षेत्र

पूर्वी दिल्ली क्षेत्र की गांधी नगर शाखा द्वारा बैंक के 114वें स्थापना दिवस के अवसर पर ग्राहकों हेतु ''ग्राहक संवाद कार्यक्रम'' का आयोजन किया गया जिसमें ग्राहकों को विभिन्न बैंकिंग उत्पादों की जानकारी देने के साथ-साथ हिन्दी में उपलब्ध डिजिटल बैंकिंग सुविधाओं के बारे में जानकारी प्रदान की गई.

भीलोडा शाखा, साबरकांठा क्षेत्र

दिनांक 20 जुलाई, 2021 को बैंक के 114वें स्थापना दिवस के अवसर पर साबरकांठा क्षेत्र की आदर्श हिंदी शाखा भीलोडा में ''ग्राहक संवाद कार्यक्रम'' का आयोजन किया गया.

विश्वास नगर शाखा, पूर्वी दिल्ली क्षेत्र

पूर्वी दिल्ली की विश्वास नगर शाखा द्वारा 114वें स्थापना दिवस के अवसर पर ग्राहकों हेतु ''ग्राहक संवाद कार्यक्रम'' का आयोजन किया गया जिसमें ग्राहकों को विभिन्न बैंकिंग उत्पादों की जानकारी देने के साथ-साथ हिन्दी में उपलब्ध डिजिटल बैंकिंग सुविधाओं के बारे में जानकारी प्रदान की गई.

पटौदी शाखा, गुड़गाँव क्षेत्र

बैंक के 114 वें स्थापना दिवस के अवसर पर गुड़गांव क्षेत्र की पटौदी शाखा द्वारा दिनांक 20 जुलाई, 2021 को ''ग्राहक संवाद कार्यक्रम'' का आयोजन किया गया जिसमें ग्राहकों को विभिन्न बैंकिंग उत्पादों की जानकारी दी गई.

सफदरजंग हॉस्पिटल शाखा, दक्षिण दिल्ली क्षेत्र

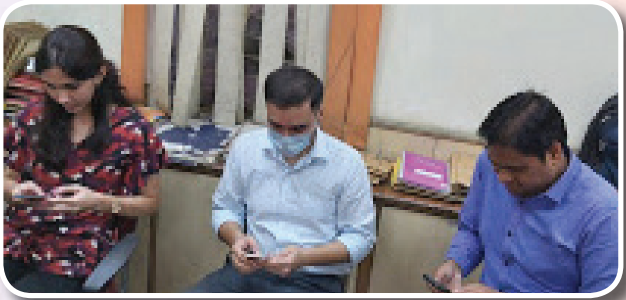

दक्षिणी दिल्ली क्षेत्र की सफदरजंग हॉस्पिटल शाखा द्वारा दिनांक 31 जुलाई, 2021 को ''ग्राहक संवाद कार्यक्रम'' का आयोजन किया गया जिसमें ग्राहकों को विभिन्न बैंकिंग उत्पादों की जानकारी देने के साथ-साथ हिन्दी में उपलब्ध डिजिटल बैंकिंग सुविधाओं की जानकारी दी गई.

नराकास सम्मान

मदुरै क्षेत्र को नराकास का सम्मान

वर्ष 2019-20 के दौरान राजभाषा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए क्षेत्रीय कार्यालय, मदुरै को द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ. मदुरै क्षेत्र के क्षेत्रीय प्रबंधक श्री एम पी सुधाकरन, उप क्षेत्रीय प्रबंधक श्री संतोष के जे और राजभाषा अधिकारी ने नराकास अध्यक्ष श्री के श्रीनिवासन जी के कर कमलों से पुरस्कार प्राप्त किया.

कोयम्बत्तूर क्षेत्र को नराकास का सम्मान

दिनांक 25 अगस्त, 2021 को बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कोयम्बत्तूर की अर्द्धवार्षिक बैठक में क्षेत्रीय कार्यालय, कोयम्बत्तूर को वर्ष 2019-20 के लिए राजभाषा कार्यान्वयन हेतु द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया. बैंक नराकास, कोयम्बत्तूर के अध्यक्ष द्वारा उप क्षेत्रीय प्रबंधक श्री के मुरुगैय्या ने यह पुरस्कार प्राप्त किया.

अंचल कार्यालय, चेन्नै को नराकास का पुरस्कार

अंचल कार्यालय, चेन्नै को वर्ष 2019-20 के लिए नराकास का द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ. समारोह में नराकास-सदस्य-सचिव श्री अजय कुमार, इंडियन बैंक ने अंचल प्रमुख को नराकास-राजभाषा शील्ड प्रदान कर सम्मानित किया.

कोलकाता अंचल को नराकास का सम्मान

दिनांक 22 सितंबर, 2021 को नराकास, कोलकाता की अर्द्धवार्षिक बैठक में कोलकाता अंचल को 2019-20 के लिए राजभाषा कार्यान्वयन हेतु द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ. समिति के अध्यक्ष के कर-कमलों से उप अंचल प्रमुख (कोलकाता अंचल) श्री पी.के.दास एवं वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) श्री सुमित कुमार गुप्ता को यह पुरस्कार प्रदान किया गया.

गुरदासपुर शाखा को नराकास, गुरदासपुर द्वारा सम्मान

दिनांक 27 अगस्त, 2021 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, गुरदासपुर की अर्द्धवार्षिक बैठक में अमृतसर क्षेत्र की गुरदासपुर शाखा को वर्ष 2019-20 में उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन हेतु 'प्रथम पुरस्कार' प्राप्त हुआ. श्री रशपाल सिंह, अध्यक्ष नराकास (गुरदासपुर) ने गुरदासपुर शाखा के शाखा प्रमुख श्री विशु मट्टू को पुरस्कृत किया.

नराकास बैठक

मोडासा

दिनांक 19 अगस्त, 2021 को बैंक के संयोजन में कार्यरत नराकास, मोडासा की 5वीं छमाही बैठक का आयोजन किया गया. यह बैठक भौतिक एवं ऑनलाइन दोनों माध्यम से आयोजित की गई थी. यह बैठक अरावली अग्रणी जिला प्रबंधक श्री हितेश सहगल की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई. बैठक में साबरकांठा क्षेत्र के क्षेत्रीय प्रमुख श्री राजकुमार महावर उपस्थित रहे.

नराकास बैठकें

बड़ौदा

दिनांक 13 अगस्त, 2021 को नराकास, बड़ौदा की 67वीं छमाही बैठक मुख्य महाप्रबंधक (परिचालन) श्री वेणुगोपाल मेनन की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई. इस अवसर पर उप निदेशक (कार्यान्वयन), पश्चिम क्षेत्र, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार डॉ. सुस्मिता भट्टाचार्य, प्रमुख (राजभाषा एवं संसदीय समिति) श्री संजय सिंह, बड़ौदा अंचल की उप महाप्रबंधक सुश्री वीणा शाह, सदस्य सचिव एवं सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा एवं संसदीय समिति) श्री पुनीत कुमार मिश्र तथा अन्य बैंकों के कार्यालय प्रमुख एवं राजभाषा प्रभारी उपस्थित रहे.

राजकोट

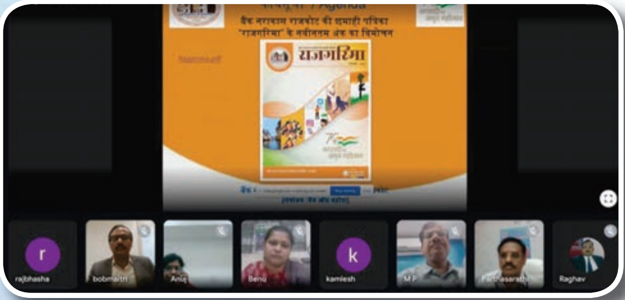

बैंक नराकास, राजकोट की 21 वीं छमाही बैठक का आयोजन दिनांक 28 सितंबर, 2021 को किया गया. बैठक की अध्यक्षता महाप्रबंधक श्री विजय कुमार बसेठा ने की. इस अवसर पर उप महाप्रबंधक एवं प्रमुख (राजभाषा एवं संसदीय समिति) श्री संजय सिंह एवं उपनिदेशक डॉ. सुस्मिता भट्टाचार्य ने मार्गदर्शी वक्तव्य दिये. बैठक में नराकास की छमाही पत्रिका राजगरिमा का भी विमोचन किया गया.

फतेहपुर

दिनांक 22 सितंबर, 2021 को नराकास, फतेहपुर की छमाही समीक्षा बैठक क्षेत्रीय प्रमुख श्री डी.के.श्रीवास्तव की अध्यक्षता में संपन्न हुई. इस अवसर पर सहायक निदेशक (कार्यान्वयन) एवं कार्यालयाध्यक्ष राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय श्री नरेंद्र सिंह मेहरा जी का मार्गदर्शन भी प्राप्त हुआ.

जयपुर

दिनांक 26 अगस्त, 2021 को बैंक नराकास, जयपुर की 72वीं अर्धवार्षिक समीक्षा बैठक महाप्रबंधक एवं अध्यक्ष श्री महेन्द्र सिंह महनोत की अध्यक्षता प्रमुख (राजभाषा एवं संसदीय समिति) श्री संजय सिंह के विशिष्ट आतिथ्य में सम्पन्न हुई. इस अवसर पर उप निदेशक, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, नई दिल्ली श्री कुमार पाल शर्मा का विशेष मार्गदर्शन प्राप्त हुआ.

जोधपुर

दिनांक 22 जुलाई, 2021 को उप महाप्रबंधक श्री सुरेश चंद्र बुंटोलिया की अध्यक्षता में नराकास (बैंक), जोधपुर की 20वीं छ:माही समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया. बैठक में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के उप निदेशक श्री कुमार पाल शर्मा जी, प्रधान कार्यालय से सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा एवं संसदीय समिति) श्री पुनीत कुमार मिश्र सहित सभी सदस्य बैंकों के कार्यालय प्रमुख, राजभाषा अधिकारी एवं अन्य अधिकारी भी उपस्थित रहे.

आणंद

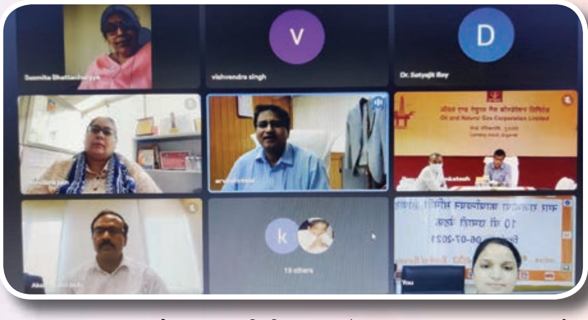

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, आणंद की 10वीं छ:माही बैठक का आयोजन दिनांक 06 जुलाई, 2021 को किया गया. बैठक में डॉ. सुष्मिता भट्टाचार्य, उप निदेशक (कार्यान्वयन) मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहीं.

नराकास बैठकें

अहमदाबाद

अंचल कार्यालय, अहमदाबाद के संयोजन में कार्यरत नराकास (बैंक), अहमदाबाद की 69वीं छ:माही बैठक का आयोजन दिनांक 15 जुलाई, 2021 को किया गया. इस बैठक की अध्यक्षता उप महाप्रबंधक श्री महेंद्र सिंह रोहड़िया ने की बैठक में डॉ. सुष्मिता भट्टाचार्य, उप निदेशक (कार्यान्वयन) मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहीं.

वाराणसी

दिनांक 27 जुलाई 2021 को नराकास (बैंक) वाराणसी की 19वीं छमाही समीक्षा बैठक सहायक निदेशक (कार्यान्वयन), राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार श्री नरेंद्र सिंह मेहरा के मुख्य आतिथ्य, प्रमुख (राजभाषा एवं संसदीय समिति) श्री संजय सिंह के मार्गदर्शन एवं क्षेत्रीय प्रमुख श्री रंजीत कुमार झा की अध्यक्षता में आयोजित की गई.

मंझनपुर (प्रयागराज)

क्षेत्रीय कार्यालय, प्रयागराज 2 के संयोजन में कार्यरत नराकास, मंझनपुर की अर्द्धवार्षिक समीक्षा बैठक 27 जुलाई, 2020 को माइक्रोसॉफ्ट टीम्स के माध्यम से आयोजित की गई. इस आयोजन में प्रयागराज 2 के क्षेत्रीय प्रमुख श्री प्रमोद कुमार व मुख्य अतिथि के रूप में गृह मंत्रालय राजभाषा विभाग से उप निदेशक श्री नरेंद्र सिंह मेहरा व सदस्य बैंक के अन्य कार्यपालकगण उपस्थित थे.

जालंधर

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक), जालंधर की 19वीं अर्द्धवार्षिक बैठक का आयोजन दिनांक 24 अगस्त, 2021 को किया गया. बैठक की अध्यक्षता जालंधर क्षेत्र के क्षेत्रीय प्रमुख श्री राजेय भास्कर द्वारा की गई. इस अवसर पर उप निदेशक (कार्यान्वयन) उत्तरी क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (दिल्ली) श्री कुमार पाल शर्मा, चंडीगढ़ अंचल के अंचल प्रमुख श्री विमल कुमार नेगी तथा प्रमुख, (राजभाषा एवं संसदीय समिति), श्री संजय सिंह उपस्थित रहे.

बालोद (दुर्ग)

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, बालोद की 14वीं छ:माही बैठक का आयोजन दिनांक 22 जुलाई, 2021 को श्री प्रणय दुबे, अग्रणी जिला प्रबंधक, बालोद की अध्यक्षता में किया गया. इस बैठक में मुख्य अतिथि के रूप में सहायक निदेशक (कार्यान्वयन), क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, भोपाल (मध्य) श्री हरीश सिंह चौहान उपस्थित रहे.

धमतरी (दुर्ग)

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, धमतरी की 14वीं छ:माही बैठक का आयोजन दिनांक 22 जुलाई, 2021 को श्री प्रबीर कुमार रॉय, अग्रणी जिला प्रबंधक, धमतरी की अध्यक्षता में किया गया. इस बैठक में मुख्य अतिथि के रूप में सहायक निदेशक कार्यान्वयन एवं कार्यालय अध्यक्ष, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, भोपाल (मध्य) श्री हरीश सिंह चौहान उपस्थित रहे.

नराकास बैठकें

मंड्या

दिनांक 13 अगस्त, 2021 को नराकास, मंड्या की छमाही बैठक क्षेत्रीय प्रमुख श्री कपिलेश के आर की अध्यक्षता में आयोजित की गई. इस बैठक में उप निदेशक, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, बेंगलुरु श्री के पी शर्मा ने मार्गदर्शन प्रदान किया. प्रमुख (राजभाषा एवं संसदीय समिति) श्री संजय सिंह को इस बैठक में विशिष्ठ अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया था.

बरेली

दिनांक 13 अगस्त, 2021 को नराकास बरेली की 15 वीं बैठक अंचल प्रमुख श्री अमर नाथ गुप्ता की अध्यक्षता में संपन्न हुई. इस बैठक में उप निदेशक, भारत सरकार, गृहमंत्रालय राजभाषा विभाग श्री नरेन्द्र मेहरा भी उपस्थित रहे. बैठक में उप अंचल प्रमुख श्री विश्वजीत टी.एस ने धन्यवाद ज्ञापित किया.

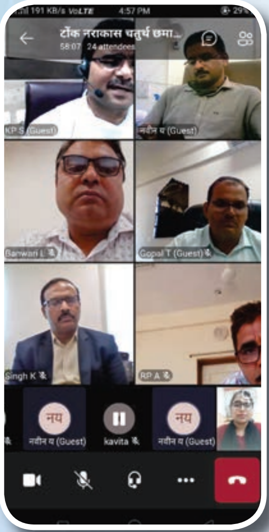

टोंक

दिनांक 16 जुलाई, 2021 को नराकास टोंक की चतुर्थ छमाही बैठक का आयोजन उप निदेशक (कार्यान्वयन) गृह मंत्रालय, भारत सरकार श्री कुमार पाल शर्मा के विशेष मार्गदर्शन एवं टोंक नराकास अध्यक्ष श्री एमपी जैन की अध्यक्षता में किया गया. इस अवसर पर प्रधान कार्यालय से प्रमुख (राजभाषा एवं संसदीय समिति) श्री संजय सिंह एवं सवाई माधोपुर क्षेत्रीय प्रमुख श्री अशोक कुमार विजयवर्गीय का भी मार्गदर्शन प्राप्त हुआ, उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री मोअज़्ज़म मसूद ने धन्यवाद ज्ञापित किया.

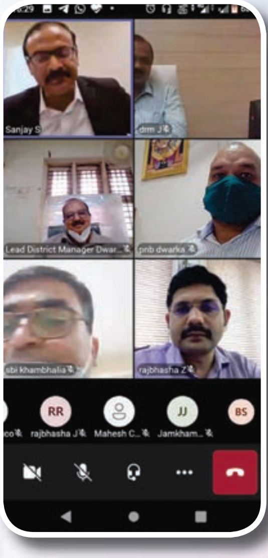

देवभूमि, द्वारका

नराकास, देवभूमि, द्वारका की छमाही बैठक दिनांक 30 जुलाई, 2021 को आयोजित की गई. बैठक की अध्यक्षता अग्रणी जिला प्रबंधक श्री भरत कुमार एच परमार ने की. बैठक में सदस्य कार्यालयों के प्रमुख एवं राजभाषा प्रतिनिधि उपस्थित रहे. इस बैठक में प्रमुख (राजभाषा एवं संसदीय समिति) श्री संजय सिंह और मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) श्री चंद्रवीर सिंह राठौड़ का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ.

एपेक्स अकादमी, गांधीनगर

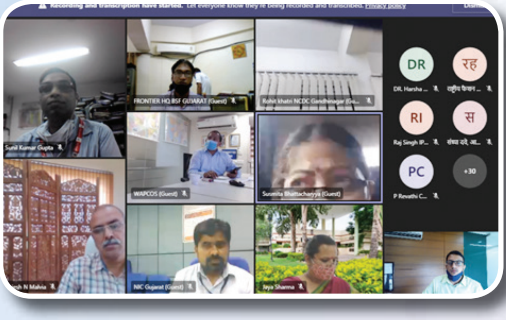

दिनांक 21 सितंबर, 2021 को एपेक्स अकादमी (गांधीनगर) प्रमुख की अध्यक्षता में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, गांधीनगर की 17 वीं छमाही बैठक का आयोजन किया गया. इस आयोजन में नराकास अध्यक्ष श्री दीपांकर गुहा, उपनिदेशक कार्यान्वयन, भारत सरकार डॉ. सुस्मिता भट्टाचार्य, नगर समिति के उपाध्यक्ष श्री मुकेश नवल एवं समस्त कार्यालयप्रमुखगण व राजभाषा प्रभारी उपस्थित रहे.

विजयवाड़ा

दिनांक 23 सितंबर, 2021 को नराकास, विजयवाड़ा की 8 वीं छमाही बैठक का आयोजन किया गया. बैठक की अध्यक्षता क्षेत्रीय प्रमुख, श्री सी.एच. राज शेखर ने की. इस अवसर पर क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, बेंगलूरु के उप निदेशक (कार्यान्वयन) श्री कुमार पाल शर्मा एवं प्रधान कार्यालय से विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रमुख (राजभाषा एंव संसदीय समिति) श्री संजय सिंह, सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा एंव संसदीय समिति) श्री पुनीत कुमार मिश्र उपस्थित रहे.

मेधावी विद्यार्थी सम्मान

क्षेत्रीय कार्यालय, मेरठ

दिनांक 13 सितंबर, 2021 को क्षेत्रीय कार्यालय, मेरठ द्वारा चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय में विभिन्न क्षेत्रों में हिंदी का बढ़ता प्रभाव विषय पर संगोष्ठी तथा बड़ौदा मेधावी विद्यार्थी सम्मान योजना समारोह का आयोजन किया गया. समारोह में बैंक के पूर्व उप महाप्रबंधक श्री हरियश राय, क्षेत्रीय प्रमुख श्री हरीश अरोड़ा और उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री अरुण कुमार पांडे उपस्थित रहे.

अंचल कार्यालय, राजकोट

राजकोट अंचल द्वारा सौराष्ट्र विश्वविद्यालय में मेधावी विद्यार्थी समारोह का आयोजन किया गया. कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. वाइस चांसलर श्री विजय देसाणी, आर्ट्स कॉलेज के अध्यक्ष श्री प्रवीण सिंह चौहान, हिन्दी विभाग के प्रमुख डॉ. बी के कलासवा एवं राजकोट क्षेत्र के उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री अशोक गोस्वामी भी विशेष रूप से उपस्थित रहे.

क्षेत्रीय कार्यालय, बृहतर कोलकाता

दिनांक 08 सितंबर, 2021 को बृहतर कोलकाता क्षेत्र की ओर से कलकत्ता विश्वविद्यालय के वर्ष 2019-20 के मेधावी विद्यार्थियों को बड़ौदा मेधावी विद्यार्थी सम्मान योजना के तहत सम्मानित किया गया.

क्षेत्रीय कार्यालय, सूरत शहर

दिनांक 04 अगस्त, 2021 को सूरत शहर क्षेत्र द्वारा वर्ष 2019-20 के लिए 'बड़ौदा मेधावी पुरस्कार योजना' का आयोजन क्षेत्रीय प्रमुख, श्री आर. के. गोयल की अध्यक्षता में किया गया.

क्षेत्रीय कार्यालय, एर्णाकुलम

दिनांक 02 अगस्त, 2021 को कोच्चिन विश्वविद्यालय की सुश्री प्रिया पॉल एवं सुश्री अतिरा को बडौदा मेधावी विद्यार्थी सम्मान योजना के तहत पुरस्कृत किया गया. उप अंचल प्रमुख, एर्णाकुलम अंचल, श्री जियाद रहमान एवं उप क्षेत्रीय प्रबंधक, एर्णाकुलम क्षेत्र, श्री बिनोज भास्करन द्वारा सुश्री प्रिया पॉल को प्रमाण पत्र एवं पुरस्कार राशि से सम्मानित किया गया.

क्षेत्रीय कार्यालय, त्रिवेंद्रम

दिनांक 02 अगस्त, 2021 को केरल विश्वविद्यालय की सुश्री अश्वती एवं सुश्री अनिला को बडौदा मेधावी विद्यार्थी सम्मान योजना के अंतर्गत पुरस्कृत किया गया. क्षेत्रीय प्रमुख श्रीमती लक्ष्मी आनंद एवं उप क्षेत्रीय प्रबंधक श्री आनंद कुमार झा ने छात्राओं को प्रमाण पत्र एवं पुरस्कार राशि से सम्मानित किया.

प्रतियोगिताएं

हिंदी आशुभाषण प्रतियोगिता का आयोजन

हिंदी माह-2021 के अवसर पर दिनांक 31अगस्त, 2021 को जोधपुर क्षेत्रांतर्गत एम आई ए शाखा में स्टाफ सदस्यों के लिए हिंदी आशुभाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. इस अवसर पर शाखा के सभी स्टाफ सदस्यों ने बढ़-चढ़कर प्रतिभागिता की.

पीपीटी प्रतियोगिता का आयोजन

दिनांक 13 सितंबर, 2021 को क्षेत्रीय प्रमुख श्री सचिन वर्मा एवं उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री डी.के. चौधरी की उपस्थिति में क्षेत्रीय कार्यालय के सभी विभागों के लिए पीपीटी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया तथा इसमें क्षेत्र के सभी विभागों द्वारा पूर्ण सहभागिता सुनिश्चित की गई.

बैंकिंग शब्दावली प्रतियोगिता का आयोजन

उत्तरी दिल्ली क्षेत्र द्वारा दिनांक 30 जुलाई, 2021 एवं 31 जुलाई, 2021 को क्षेत्रीय कार्यालय एवं शाखाओं के लिए क्रमश: 'सामान्य हिन्दी ज्ञान प्रतियोगिता' एवं 'बैंकिंग शब्दावली एवं सामान्य हिन्दी ज्ञान प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया.

अंतर-बैंक हिंदी निबंध प्रतियोगिता में प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त करने पर सम्मान

नागपुर क्षेत्र की राणी दुर्गावती शाखा के स्टाफ सदस्य श्री संजय चौधरी का भारतीय रिज़र्व बैंक की अंतर-बैंक हिंदी निबंध प्रतियोगिता 2020-21 में भाषिक क्षेत्र 'ख' से प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त करने पर क्षेत्रीय प्रबंधक श्री संजीव सिंह तथा उप क्षेत्रीय प्रबंधक श्री अनिश कुमार द्वारा अभिनंदन पत्र तथा वर्चुअल गिफ्ट कार्ड प्रदान कर सम्मानित किया गया.

अधीनस्थ स्टाफ सदस्यों हेतु शब्द निर्माण प्रतियोगिता

अंचल कार्यालय एवं पुणे शहर क्षेत्र द्वारा हिन्दी दिवस 2021 के अवसर पर अंचल एवं क्षेत्रीय कार्यालय के अधीनस्थ स्टाफ सदस्यों हेतु शब्द निर्माण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया.

ऑनलाइन वस्तुनिष्ठ प्रतियोगिता का आयोजन

जलगांव क्षेत्र की आदर्श हिन्दी शाखा पाचोरा में हिन्दी माह के अवसर पर राजभाषा, सामान्य ज्ञान एवं बैंकिंग विषयक ऑनलाइन वस्तुनिष्ठ प्रतियोगिता का आयोजन गूगल फॉर्म्स पर किया गया. प्रतियोगिता में शाखा के स्टाफ सदस्यों द्वारा प्रतिभागिता की गयी एवं विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए गए.

प्रतियोगिताएं

कहानी का सार लिखो प्रतियोगिता का आयोजन

दुर्ग क्षेत्र द्वारा दिनांक 09 जुलाई, 2021 को आयोजित 'कहानी का सार लिखो' प्रतियोगिता के विजेता स्टाफ सदस्यों को उप महाप्रबंधक, नेटवर्क (छत्तीसगढ़) श्री रंजीत कुमार द्वारा सम्मानित किया गया.

परिपत्रों पर आधारित प्रतियोगिता का आयोजन

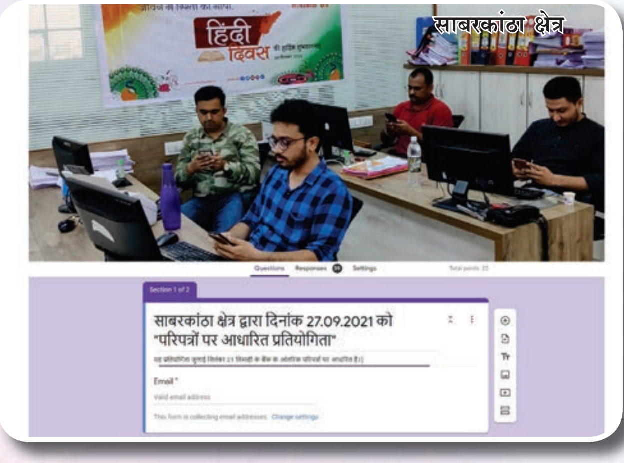

दिनांक 27 सितंबर, 2021 को साबरकांठा क्षेत्र द्वारा परिपत्रों पर आधारित प्रतियोगिता का आयोजन गूगल फॉर्म के माध्यम से किया गया. इस प्रतियोगिता में 59 स्टाफ सदस्यों ने प्रतिभागिता की.

कोल्हापुर क्षेत्र द्वारा 'आप और आपका बैंक' प्रतियोगिता का आयोजन

बैंक के 114वें स्थापना दिवस के अवसर पर कोल्हापुर क्षेत्र द्वारा ऑनलाइन प्रतियोगिता 'आप और आपका बैंक' का आयोजन किया गया जिसमें क्षेत्र के 114 स्टाफ सदस्यों ने भाग लिया तथा विजेताओं को प्रमाण पत्र तथा पुरस्कार राशि देकर क्षेत्रीय प्रमुख द्वारा सम्मानित किया गया.

हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य मे बैंकिंग शब्दावली प्रतियोगिता का आयोजन

गुड़गांव क्षेत्र के शाखा प्रमुखों के लिए दिनांक 11 अगस्त, 2021 को बैंकिंग शब्दावली प्रतियोगिता का आयोजन किया गया.

मईलापुर शाखा द्वारा निबंध प्रतियोगिता

चेन्नै मेट्रो क्षेत्र की मईलापुर शाखा द्वारा दिनांक 13 अगस्त, 2021 को कॉलेज के विद्यार्थियों हेतु आयोजित निबंध प्रतियोगिता में जस्टिश बशीर अहमद शाईद कॉलेज के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया. कॉलेज की सहभागिता हेतु कॉलेज की प्रधानाचार्य को स्मृति चिन्ह प्रदान किया गया.

पूर्वी दिल्ली क्षेत्र द्वारा बैंकिंग विषयों पर प्रतियोगिता आयोजित

क्षेत्रीय कार्यालय, पूर्वी दिल्ली द्वारा स्टाफ सदस्यों हेतु बैंकिंग विषयों पर प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया. दिनांक 20 जुलाई, 2021 को बैंक के 114वें स्थापना दिवस के अवसर पर महाप्रबंधक श्रीमती सम्मिता सचदेव, उप महाप्रबंधक श्री घनश्याम सिंह एवं अन्य कार्यपालकों द्वारा विजेता सदस्यों को प्रमाणपत्र देकर सम्मानित किया गया.

मजबूत अनुपालन संस्कृति – गुणवत्ता और सतत् व्यापार विकास की प्रवर्तक

अनुपालन एक ऐसा शब्द है जो शब्द 'पालन करने के लिए' (टू कम्प्लाय) से उत्पन्न होता है, अर्थात् किसी अभिविन्यास (ओरिअंटेशन), नियम, आदेश या नीति के अनुसार होना. इस प्रकार, बैंकिंग अनुपालन का मतलब नियमों, कानूनों और दिशानिर्देशों का अनुपालन करना है, वो चाहे आंतरिक हो या बाहरी. नीतियों, दिशानिर्देशों और कानून के अनुपालन से व्यवसाय में एक अधिक कुशल निर्णय लेने की प्रक्रिया को बढ़ावा मिलता है, जो कि जोखिम को कम करने के साथ-साथ व्यवसाय वृद्धि में सहायक होता है. इसलिये बैंक में अनुपालन को केवल एक अनुपालन विभाग की एक गतिविधि के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए बल्कि इसे एक संस्कृति के रूप में पूरे बैंकिंग व्यवस्था में व्याप्त होनी चाहिए.

व्यावसायिक वृद्धि व लाभार्जन सभी बैंकों का मुख्य लक्ष्य होता है, जिसके निष्पादन के दौरान कई बार अनुपालन की अनदेखी हो जाती है. भारतीय रिज़र्व बैंक ने यह महसूस किया कि विनियमन (रेग्यूलेशन), निगरानी (सर्विलियेन्स) और प्रवर्तन (इंफोर्समेंट) वित्तीय क्षेत्र के निरीक्षण तंत्र के तीन महत्वपूर्ण पहलू हैं और इसलिये इन्हें बेहतर तरीके से क्रियान्वित करने के उद्देश्य से अप्रैल 2017 में भारतीय रिज़र्व बैंक के अंदर ही एक प्रवर्तन विभाग (इंफोर्समेंट डिपार्टमेंट) बनाया गया. जो कि बैंकों के सुसंगत व्यापार वृद्धि में सहयोग कर सके.

अनुपालन दर्शन (फ़िलासफ़ी) और सिद्धांत, बैंक की सुसंगत व्यावासायिक वृद्धि के लिये अत्यंत आवश्यक है. किसी भी बैंक का सफल अनुपालन मुख्यत: 6 सिद्धांतों पर निर्भर करता है. स्वामित्व (ओनरशिप), सभी के द्वारा जिम्मेदारी साझा करना, अनुपालन विभाग की स्वतंत्रता, संवाद, समन्वय एवं अनुपालन संस्कृति. ये सिद्धांत बैंकों को अनुपालन की कमियों से होने वाले करोड़ों रुपयों के वित्तीय नुकसान, दंडों व वित्तीय अपराधों से न केवल बचाते हैं, बल्कि अबाधित व्यावसायिक वृद्धि में सहयोग प्रदान करते हैं. अनुपालन को मुख्यत: तीन भागों मे बांटा जा सकता हैं

1. वैधानिक (स्टेचुटरी) अनुपालन
2. नियामक (रेग्युलेटरी) अनुपालन
3. आंतरिक (इन्टर्नल) अनुपालन

विभिन्न नियामकों जैसे भारतीय रिज़र्व बैंक, भारत सरकार, उपभोक्ता फोरम / न्यायालय एवं अन्य नियामकों के द्वारा प्रतिवर्ष विभिन्न नियम व दिशानिर्देशों का अनुपालन न करने की वजह से करोड़ों रुपयों का जुर्माना लगाया जाता है. बैंक में एक सही अनुपालन संस्कृति को विकसित कर प्रतिवर्ष होने वाले करोड़ों रुपयों के जुर्माने से बैंकों को बचाया जा सकता है एवं इसे व्यवसाय वृद्धि का साधक बनाया जा सकता है. ये बचने वाले करोड़ों रुपये न केवल बैंक के लाभ को बढाते हैं, बल्कि समय की बचत भी करते हैं, और समय का सद्उपयोग बैंक की व्यावसायिक वृद्धि के लिये हो सकता है.

अनुपालन दर्शन (फ़िलासफ़ी) और सिद्धांत

कॉस्ट सेंटर्स से लेकर ग्रोथ ड्राइवर्स तक:-

जोखिम और अनुपालन दोनों को आमतौर पर लागत केंद्र माना जाता है लेकिन दिन प्रतिदिन बढ़ते वित्तीय अपराधों व अनुपालन की कमी की वजह से भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा लगाये जाने वाले वित्तीय दंडों ने बैंकों को अनुपालन को एक लागत केंद्र (कॉस्ट सेंटर) की जगह व्यवसाय विकास में सहायक (ग्रोथ ड्राइवर) की तरह देखने का नया दृष्टिकोण प्रदान किया है. जो कि न केवल जोखिम से बचाता है बल्कि वित्तीय दंडों व वित्तीय अपराधों से बचाते हुये व्यावासायिक वृद्धि के अपार अवसर प्रदान करता है, जिससे कि बैंकों को भारी लाभ मिल सकता है. गैर-अनुपालन की वजह से बैंकों को होने वाले वित्तीय नुकसान व प्रतिष्ठा हानि/ ब्रांड नुकसान के बहुत से कारण हो सकते हैं, उदाहरण के लिये:- अनुपालन जोखिम को समझने में विफलता, शीर्ष पर नेतृत्व/ समन्वय की कमी, अपर्याप्त संसाधन, अनुपालन कार्यों की अपर्याप्त रूपरेखा, प्रतिस्पर्धा प्राथमिकताओं का होना और प्रोत्साहन, अपर्याप्त संवाद और प्रशिक्षण, अपर्याप्त निगरानी, असंगत प्रवर्तन और सुधारक कार्य एवं वित्तीय उत्पादों की गलत बिक्री इत्यादि. इन सभी कारणों की वजह से बैंकों को प्रतिवर्ष करोड़ों रुपयों का नुकसान होता है. बैंक एक सही अनुपालन संस्कृति को विकसित कर व इसके सिद्धांतों का पालन कर प्रतिवर्ष होने वाले करोड़ों रुपयों के नुकसान को बचा सकते हैं जो कि उनके प्रत्यक्ष लाभ का हिस्सा है.

प्रमुख पक्ष	अनुपालन मे कमी का दुष्प्रभाव	अनुपालन के कारण व्यवसाय विकास में सहयोग
बिक्री	**विपणन:** अनुपालन में कमी के कारण क्रॉस-सेल और अप-सेल करने की क्षमता सीमित होती है. **ऑन-बोर्डिंग:** अनुपालन की कमी के कारण ग्राहक ऑन-बोर्डिंग प्रक्रियाओं का लम्बा होना परिणामस्वरूप राजस्व ध्वनि होना. **विश्लेषिकी (एनेलेटिक्स) :** अनुपालन की कमी के कारण ग्राहक और उत्पाद लाभ का सही आंकलन नही हो पाता है.	बेहतर अनुपालन स्वचालित वर्कफ़्लो अनुप्रयोगों को इस्तेमाल कर नए ग्राहकों के तेजी से ऑन-बोर्डिंग करने की क्षमता प्रदान करता है तथा क्रॉस-सेल और अप-सेल करने की क्षमता को बढाता है. जो कि बैंकों को व्यावसायिक रूप से और मजबूत करता है.
निष्पादन	**निर्णय क्षमता:** त्रुटिपूर्ण अनुपालन अप्रभावी विश्लेषण और जोखिम मूल्यांकन प्रदान करता है. **समयबद्धता:** विलंबित या त्रुटिपूर्ण अनुपालन खराब पूर्व-व्यापार विश्लेषण, संभावित व्यापार में विलंब तथा मूल्य निर्धारण त्रुटियां प्रदान करते हैं. **वॉल्यूम:** अनुपालन में कमी मैन्युअल प्रसंस्करण द्वारा प्रवाह क्षमता को प्रतिबंधित करता है जो कि निष्पादन करने के लिये आवश्यक होती है.	बेहतर अनुपालन समय पर और सटीकता से तेजी से व्यावसायिक कार्यनिष्पादन में सहयोग देता हैं। बेहतर मूल्य निर्धारण इनपुट के माध्यम से सटीक उद्धरण प्रदान करता है.
बैक ऑफिस	**रिपोर्टिंग:** अनुपालन में चूक से बहुत सी त्रुटियां होती हैं, जिनके लिए सटीक आंतरिक / बाहरी रिपोर्टिंग का निर्माण करने के लिए मैन्युअल प्रयास की आवश्यकता होती है. इस प्रकार खराब अनुपालन विसंगतियों का कारण बनता है. **निपटान (सेटलमेंट) :** इससे त्रुटिपूर्ण निपटान निर्देशों के साथ-साथ गलत, असंगत डेटा उत्पन्न होता है. जो कि मुद्दों के समाधान में देरी, गलत भुगतान, निपटान त्रुटियों और संभावित वित्तीय एवं प्रतिष्ठा के नुकसान का कारण बनता है.	बेहतर अनुपालन सुसंगत और सटीक निपटान निर्देशों के माध्यम से बेहतर नकदी प्रवाह प्रबंधन प्रदान करता है. यह स्वचालित डेटा वितरण और व्यवसाय उत्पन्न करने के अवसर प्रदान करता है.
जोखिम	**जोखिम:** अनुपालन में कमी के कारण, ग्राहक या बाजार जोखिम का सटीक और समेकित दृष्टिकोण मैन्युअल हस्तक्षेप के बिना उपलब्ध नहीं हो पाता, जो कि लागत और नुकसान को बढ़ाता है. **समयबद्धता:** यह वास्तविक समय की रिपोर्टिंग में बाधा उत्पन्न है.	बेहतर अनुपालन अधिक सटीक और विश्वसनीय डेटा के माध्यम से जोखिम को कम करता है. यह नियामक द्वारा व्यवसाय निर्धारित नियंत्रण प्रणाली में सुधार करता है.
सेवाएं	**ग्राहक रिपोर्टिंग:** खराब अनुपालन की वजह से ग्राहकों को परिपूर्ण स्टेटमेंट भेजना या गलत ग्राहक को भेजने से प्रतिष्ठा की क्षति होना. **कॉर्पोरेट कार्रवाई:** कॉर्पोरेट स्तर पर खराब अनुपालन से कई समस्याएं आती हैं, जैसें डिविडेंड पेमेंट्स एवं अधिग्रहण के बाद गलत नाम का होना, विक्रेता अनुबंधों का दोहराव और उल्लंघन, डेटा उपभोक्ता आधार की सीमित दृश्यता इत्यादि.	बेहतर अनुपालन बेहतर प्रतिपक्ष जोखिम मैट्रिक्स के माध्यम से बेहतर कोलेटरल प्रबंधन प्रदान करता है. यह अधिक सटीक जोखिम गणना के माध्यम से सही पूंजी संग्रह प्रदान करता है. यह बेहतर रिपोर्टिंग के माध्यम से बेहतर ग्राहक सेवा प्रदान करता है. यह ब्रोकरेज फीस, कमीशन और स्टैंप ड्यूटी की सटीक गणना प्रदान करता है. यह डेटा उपयोग का बेहतर नियंत्रण प्रदान करता है.
ग्राहक	**मान्यता (वेलीडेशन) :** खराब अनुपालन नए ग्राहक स्क्रीनिंग और एएमएल प्रक्रियाओं को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने की क्षमता कम कर देता है, जिसके परिणामस्वरूप अनुचित ग्राहकों की ऑन बोर्डिंग हो जाती है. **डेटा कैप्चर:** खराब अनुपालन प्रभावी रूप से आने वाले भुगतान डेटा को प्रभावी ढंग से कैप्चा करने और मान्य करने की क्षमता को कम करता है. **समयबद्धता:** खराब अनुपालन प्रोसेसिंग की समय सीमा को बढ़ाता है.	बेहतर अनुपालन ग्राहकों के ऑन बोर्डिंग प्रक्रियाओं की गति और दक्षता को बढ़ाता है. यह ग्राहकों के ऑन बोर्डिंग विनियमों के अनुपालन में उच्च स्तर का विश्वास प्रदान करता है. यह भुगतान लेनदेन रिजेक्शन की संख्या घटाता है. बेहतर अनुपालन तेजी से समाशोधन और निपटान को बढ़ाता है. यह अस्वीकृति की घटनाओं को कम करता है. यह नकद आवश्यकताओं के गैर-अनुपालन के लिए दंड/ लागत को कम करता है और व्यवसाय विस्तार के लिए एक प्रवर्तक के रूप में कार्य करता है.

बैंक की प्रतिष्ठा/ ब्रांड उसके लंबे समय के अथक प्रयासों से बनती है, जिसकी सहायता से न केवल बड़ी संख्या में ग्राहक बैंक से जुड़ते है, और बैंक उनका पसंदीदा बैंक बन जाते हैं, जो कि लंबे समय तक बैंक को व्यावसायिक लाभ प्रदान करता है. अनुपालन संस्कृति बैंक की प्रतिष्ठा/ ब्रांड व व्यावासायिक लाभ को सतत बनाये रखने में महत्त्वपूर्ण कारक है. एक मजबूत अनुपालन संस्कृति बैंक को विभिन्न नियामकों द्वारा किसी न किसी नियम या दिशानिर्देश का पालन न करने के लिये प्रतिवर्ष लगाये जाने वाले करोड़ों रुपयों के जुर्माने से न केवल बचाती बल्कि बैंक की रेटिंग को बढ़ाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करती हैं. एक मजबूत अनुपालन संस्कृति बैंक कर्मचारियों में आत्मविश्वास बढ़ाता है, दूसरे बैंकों से ग्राहकों को आकर्षित करता है, वह न केवल व्यापार मामलों के सभी क्षेत्रों को संबोधित करती है बल्कि व्यापार वृद्धि में सक्रिय भूमिका भी निभाती है.

सत्येंद्र कुमार
मुख्य प्रबंधक,
बड़ौदा अकादमी, भोपाल

चित्र बोलता है.

1

आओ साथी पेड़ लगाएं, धरती मां का कर्ज चुकाएं
मां धरती की यही पुकार, हरा भरा हो सारा संसार.

सुमित कुमार, प्रबंधक,
क्षेत्रीय कार्यालय, रायपुर

2

कहते हैं रिश्ते और पौधे एक जैसे होते हैं,
मुलाकात जरूरी है इन्हें निभाने के लिए.
दोनों जीवन में प्राण वायु जैसे होते हैं,
खुशहाली लाने और सांसें चलाने के लिए.

नीलम परमार,
भजनपुरा शाखा, नई दिल्ली

3

खुर्पी से मिट्टी खोदकर,
सहजता और प्यार से एक पौधा लगाया
उसमें खाद डालकर
सुंदर कल का स्वप्न सजाया.

अंकित त्यागी, वरिष्ठ प्रबंधक
सरकारी संपर्क एवं पीएसयू व्यवसाय विभाग,
नई दिल्ली

हर घर की बस यही पुकार
पेड़ लगाओ बारंबार
मिलजुल कर सब पेड़ लगाएं
इस धरती को हरित बनाएं.

महेश सैनी
शाखा प्रबंधक, सब सिटी सेंटर, उदयपुर

धरती का वरदान है पेड़
प्रकृति की शान है पेड़
मानव जाति का प्राण है पेड़
मिलकर सब लगाएं पेड़.

अंशिता वर्मा, अधिकारी,
रायसेन शाखा, सागर क्षेत्र

आओ एक नयी धरा का पुर्निर्माण करें,
वृक्ष हमारी जीवन धारा है, प्राण वायु का सहारा है,
धरा पर ईश्वर ने हमारे लिए इनको देवदूत के रूप में उतारा है

धीरज कुकरेजा, वरिष्ठ प्रबन्धक (विपणन),
अंचल कार्यालय, मेरठ

उजड़ रहा ये चमन, मैं माफी चाहती हूं.
फैला दे हे धरती माँ, हरियाली का आंचल
अब सुकून चाहती हूं.

प्रांजली पिंपलकर
गोपालनगर शाखा, नागपुर

आओ सब मिलकर पेड़ लगाएं
प्रकृति को सब मिलकर सुंदर बनाएं
ये ईश्वर का अमूल्य उपहार है
चलो मिलकर हरा भरा सुंदर ये देश बनाएं.

दिव्या दूदानी
खुदरा देयताएं विभाग, नई दिल्ली

प्रथम तीन विजेताओं को पुरस्कार स्वरूप रू. 500 का गिफ्ट कार्ड / राशि दी जा रही है

'चित्र बोलता है' के स्थायी स्तंभ के अंतर्गत अप्रैल-जून, 2021 अंक में प्रकाशित चित्र पर पाठकों से काफी उत्साहवर्धक प्रतिक्रियाएं/रचनाएं प्राप्त हुई हैं. पाठकों से अनुरोध है कि इस शृंखला में प्रकाशित इस चित्र पर आधारित अपने विचार पद्य के रूप में हमें अधिकतम चार पंक्तियों में लिख कर भेजें. श्रेष्ठ तीन रचनाओं को पुरस्कृत (प्रत्येक को रू. 500/-) किया जाएगा और उन्हें हम 'अक्षय्यम्' के आगामी अंक में भी प्रकाशित करेंगे. पाठक अपने विचार हमें डाक से या ई-मेल पर अपने व्यक्तिगत विवरण और स्वरचित घोषणा सहित 15 नवम्बर 2021 तक भेज सकते हैं.

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप-समिति द्वारा अंचल कार्यालय, बड़ौदा का निरीक्षण

'राजभाषा प्रदर्शनी'

समिति के माननीय सदस्यों को बैंक के भाषायी प्रकाशनों की जानकारी देती राजभाषा टीम

दिनांक 22 सितंबर, 2021 को संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप समिति द्वारा अंचल कार्यालय, बड़ौदा का राजभाषा विषयक निरीक्षण किया गया. इस निरीक्षण बैठक की अध्यक्षता माननीय सांसद डॉ. मनोज राजोरिया ने की. इस अवसर पर माननीय सांसदगण श्रीमती कांता कर्दम, डॉ. अमी याज्ञिक, श्री प्रतपराव जाधव, समिति सचिवालय के पदाधिकारीगण, वित्त मंत्रालय, भारत सरकार के अधिकारीगण, बड़ौदा अंचल के प्रमुख श्री राजेश कुमार सिंह, नेटवर्क उप महाप्रबंधक श्रीमती वीणा के शाह, प्रधान कार्यालय, बड़ौदा से प्रमुख (राजभाषा एवं संसदीय समिति) श्री संजय सिंह एवं सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा एवं संसदीय समिति) श्री पुनीत कुमार मिश्र उपस्थित रहे.

बैठक के उपरांत समिति सदस्यों के साथ अंचल कार्यालय, बड़ौदा एवं प्रधान कार्यालय की टीम

जलाओ दिए पर रहे ध्यान इतना
अँधेरा धरा पर कहीं रह न जाए.

नई ज्योति के धर नए पंख झिलमिल,
उड़े मर्त्य मिट्टी गगन स्वर्ग छू ले,
लगे रोशनी की झड़ी झूम ऐसी,
निशा की गली में तिमिर राह भूले,
खुले मुक्ति का वह किरण द्वार जगमग,
ऊषा जा न पाए, निशा आ ना पाए
जलाओ दिए पर रहे ध्यान इतना
अँधेरा धरा पर कहीं रह न जाए.

सृजन है अधूरा अगर विश्व भर में,
कहीं भी किसी द्वार पर है उदासी,
मनुजता नहीं पूर्ण तब तक बनेगी,
कि जब तक लहू के लिए भूमि प्यासी,
चलेगा सदा नाश का खेल यूँ ही,
भले ही दिवाली यहाँ रोज आए
जलाओ दिए पर रहे ध्यान इतना
अँधेरा धरा पर कहीं रह न जाए.

मगर दीप की दीप्ति से सिर्फ जग में,
नहीं मिट सका है धरा का अँधेरा,
उतर क्यों न आयें नखत सब नयन के,
नहीं कर सकेंगे हृदय में उजेरा,
कटेंगे तभी यह अँधरे घिरे अब,
स्वयं धर मनुज दीप का रूप आए
जलाओ दिए पर रहे ध्यान इतना
अँधेरा धरा पर कहीं रह न जाए.

गोपालदास नीरज

(4 जनवरी, 1925 - 19 जुलाई, 2018)